दो शब्द

श्री पन्नवणा सूत्र के थोकड़ों का प्रथम भाग प्रकाशित होने के बाद हमारी यह तीव्र इच्छा थी कि हम तुरन्त ही इसका दूसरा भाग और तीसरा भाग पाठकों के सामने उपस्थित कर दें। इसलिए दूसरा भाग और तीसरा भाग दोनों भाग एक साथ अलग अलग दो प्रेसों में छपने को दे दिये। प्रेसों की असुविधा के कारण यद्यपि दोनों भागों के छपने में काफी विलम्ब हो गया है तथापि तीसरा भाग तो छप कर पाठकों के कर कमलों में पहुँच गया है और दूसरा भाग के छपने में और भी अधिक विलम्ब हो गया। इसके लिए हम पाठकों से क्षमा चाहते हैं।

इन थोकड़ों के संकलन और संशोधन में हमारे यहाँ विराजित शास्त्रमर्मज्ञ पण्डितरत्न मुनिश्री १०८ श्री पन्नालालजी म० सा० का अमूल्य सहयोग एवं सहायता मिली है। इनको संशोधित करवाने में पण्डित मुनिश्री ने जो परिश्रम उठाया है उसके लिए हम मुनिश्री के अत्यन्त आभारी हैं। इसी प्रकार सुश्रावक श्रीमान् हीरालालजी मुकीम ने भी इन थोकड़ों के संकलन और संशोधन में हमें काफी सहयोग दिया है इसके लिए हम उनके भी आभारी हैं।

चिरंजीव जेठमल सेठिया ने बड़ी लगन रुचि और परिश्रम के साथ इन थोकड़ों का संग्रह किया है। आशा है धार्मिकज्ञान के प्रति उनकी जो लगन और रुचि है वह उत्तरोत्तर वृद्धिगत होती रहे जिससे समाज को धार्मिक ज्ञान का अधिकाधिक लाभ मिलता रहे।

जब पन्नवणा सूत्र के थोकड़ों की कापियां लिख कर तय्यार हो गईं तब उसके सममाग रूप से तीन हिस्से किये गये और यह निश्चय किया गया कि इनके तीन भाग छपाये जाय। तदनुसार दस पद तक के थोकड़े प्रथम भाग में छपवाये गये। जब प्रथम भाग छप कर तय्यार हो गया तब उसके खर्चे (छपाई और कागज) का हिसाब लगाया गया तो एक प्रति ॥) आठ आना खर्च आया। तदनुसार

प्रथम भाग की कीमत ।।) आठ आना रखी गई । सीरीज की दृष्टि से शेष दो भागों की कीमत भी आठ-आठ आना रखना उचित विचार किया गया । इस दूसरे भाग में कुछ पेज अधिक हो जाने के कारण खर्च अधिक पड़ गया है किन्तु सीरीज की दृष्टि से पूर्व निश्चयानुसार इसकी कीमत आठ आना ही रखी है ।

श्री प्रज्ञापना सूत्र के थोकड़ों के तीनों भागों को एक ही साइज और एक ही तरह के कागज में छपाने का हमारा विचार था । अतः हमने तीनों भागों के लिये 'विलायती बोण्ड पेपर' पहले ही एक साथ खरीद लिया था । पहला भाग इसी विलायती कागज पर छप कर तैयार हो गया । किन्तु दूसरे भाग और तीसरे भाग में कुछ कागज कम हो गये । यहां पर तथा देहली कलकत्ता आदि स्थानों पर विलायती कागज की पूछताछ की गई किन्तु इस किस्म का विलायती कागज नहीं मिला । इसलिए इस दूसरे भाग के अन्तिम कुछ पेज टीटागढ़ पेपर मिल के कागजों पर और तीसरे भाग के अन्तिम कुछ पेज अजमेर से मंगवाये हुए भिन्न किस्म के विलायती कागजों पर छपवाये गये हैं ।

प्रूफ संशोधन आदि की पूरी सावधानी रखते हुए भी दृष्टि-दोष से कुछ अशुद्धियां रह गई हैं जिनके लिए इसमें शुद्धिपत्र दे दिया गया है । कई जगह रेफ और मात्राएं तथा क, म म, र व, न न त व म क, प प, आदि अक्षर नहीं उठे हैं अथवा छपते हुए भी अक्षर टूट गये हैं वे शुद्धिपत्र में नहीं लिखे गये हैं । पाठक स्वयं शुद्ध कर लेने की कृपा करें । इसके अतिरिक्त और कोई अशुद्धि नजर आवे तो पाठक हमें सूचित करने की कृपा करें ताकि आगामी आवृत्ति में उचित संशोधन कर दिया जाय ।

निवेदक
भैरोदान सेठिया

विषयानुक्रमणिका

संख्या	पद	नाम	पृष्ठ
१	११	भाषा रो थोकड़ो	१
२	१२	प धलक्म मुकलका रो थोकड़ो	१०
३	१३	जीवपरिणाम रो थोकड़ो	१७
४	१३	अजीवपरिणाम रो थोकड़ो	१९
५	१४	कषाय रो थोकड़ो	२१
६	१५	भाव इन्द्रियों रो थोकड़ो	२३
७	१५	आठ द्रव्य इन्द्रियों रो थोकड़ो	२९
८	१५	पांच भाव इन्द्रियों रो थोकड़ो	३९
९	१५	प्रश्न रो थोकड़ो	४६
१०	१६	प्रयोगपद रो थोकड़ो	५०
११	१६	प्रयोगगति आदि पांचगति रो थोकड़ो	५१
१२	१७ उ० १	लेश्या रा १२४२ अलावों रो थोकड़ो	५६
१३	१७ उ० २	लेश्या री ४६ अल्पाबहुत्व रो थोकड़ो	६१
१४	१७ उ० ३	लेश्या रो थोकड़ो	७७
१५	१७ उ० ४	लेश्या परिणाम रो थोकड़ो	८०
१६	१७ उ० ५	लेश्या रो थोकड़ो	९०
१७	१७ उ० ६	लेश्या रो थोकड़ो	९१
१८	१८	कायस्थिति रो थोकड़ो	९३
१९	१९	दृष्टि रो थोकड़ो	१०७
२०	२०	अन्त क्रिया रो थोकड़ो	१०८
२१	२०	पदवी रो थोकड़ो	११५
२२	२०	[illegible] द्वार रो थोकड़ो	१२०
२३	२०	१३ बोलों री अल्पाबहुत्व रो थोकड़ो	१२[illegible]

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
टाइटल पृष्ठ		पुष्प नं० १२५	पुष्प न० १२७
१	७	काय द्वार	काल द्वार
१	६	लेवे मूक द्वा,	लवे मूक द्वार,
२	५	काले ग पीले ग नील रा राते ग धोले ग,	काले ग, नीले ग, राते रा, पीले रा, धोले ग, विशेष प्रकार पांच ही वर्ण रा होवे।
७	१६	अपूसद्धा	असद्धा
११	१७	औदारि	औदारिक
३८	१५	अमती	अनन्ती
४०	२	अनन्ती	अनन्ती, नवरं पृथ्वी पानी वनस्पति में पुरस्कृता पांच भी कहवी।
५८	१७	आठखा	आठसो
६६	१	अठारवें बोल	अठारहवीं अल्पाबोध
६७	२१	इक्कीमवें बोल री	इक्कीसवीं
६८	१६	पच्चीमवें बोल म गर्भज मनुष्य री	पच्चीसवीं अल्पाबोध
७२	१३	पैंतीमवें बोल	पैंतीसवीं अल्पाबोध
७३	२	३५ वें ३६ वें	३५ वीं ३६ वीं
७३	३	३७ वें बाल	३७ वीं अल्पाबोध
९४	१	अन्तमु हूर्त उत्ता	अन्तर्मुहूर्त री
१	१५	१ मिस	१ –१० मिस

श्री पन्नवणा सूत्र के थोकड़ों

का

दूसरा भाग

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद ११ वें में भाषा रो थोकड़ो चाले सो कहे छे--

१ आदि द्वार, २ उत्पत्ति द्वार, ३ संठाण द्वार, ४ समपज्जवा द्वार, ५ द्रव्य द्वार, ६ क्षेत्र द्वार, ७ काल द्वार, ८ भाव द्वार, ९ दिशा द्वार, १० स्थिति द्वार, ११ आंतरा द्वार, १२ ग्रहण द्वार, १३ निसरण द्वार, १४ लेवे मूके द्वार, १५ नाम द्वार, १६ कारण द्वार, १७ पर्याप्ति द्वार, १८ अल्पाबोध द्वार।

१ आदि द्वार–भाषा री आदि जीव सु। २ उत्पत्तिद्वार–भाषा री उत्पत्ति औदारिक, वैक्रिय, आहारक शरीर सु ३–संठाण द्वार–भाषा रो संठाण वज्र रे आकार। ४ समपज्जवा द्वार–भाषा रा पुद्गल जोरदार आदमी बोले तो लोक रे छेड़े तांई जावे, नहीं सके संख्यात असंख्यात योजन जायने विनाश पामे। ५ द्रव्य द्वार–अनन्तानन्त प्रदेशी खंध पुद्गल भाषापणे ग्रहण करे। ६ क्षेत्र द्वार असंख्याता आकाश प्रदेश ओगाया पुद्गल भाषापणे ग्रहण करे। ७ कालद्वार–एक समय री स्थिति रा, दो समय री स्थिति रा जाव दस समय री स्थिति रा, संख्यात समय री स्थिति रा, असंख्यात

समय रा स्थिति रा पुद्गल मापापणे ग्रहण करे। ८ भाव द्वार-वर्णवंता गंधवंता रसवंता स्पर्शवंता पुद्गल भाषापणे ग्रहण करे। अहो भगवान्! वर्णवंता ग्रहतां १ वर्ण रा लेवे कि यावत् ५ वर्ण रा लेवे? हे गौतम! सामान्य प्रकारे भाव थकी १ वर्ण रा लेवे यावत् ५ वर्ण रा लेवे, काले रा पीले रा नीले रा राते रा धोले रा। अहो भगवान्! काले रा लेवे तो १ गुण काले रा लेवे कि २ गुण काले रा लेवे यावत् १० गुण, संख्यातगुण असंख्यातगुण अनन्त गुण काले रा लेवे? हे गौतम! १ गुण काले रा लेवे २ गुण काले रा लेवे यावत् १० गुण काले रा लेवे, संख्यातगुण काले रा, असंख्यात गुण काले रा, अनन्तगुण काले रा लेवे।

जैसे काले वर्ण कयो वैसे ही नीलो रातो पीलो धोलो, सुरभिगंध, दुरभिगंध, तीखो, कड़वो कषायलो खाटो मीठो कह देणो।

९ अहो भगवान्! स्पर्श रा लेवे तो १ स्पर्श रा लेवे कि यावत् ८ स्पर्श रा लेवे? हे गौतम! सामान्य प्रकारे भाव थकी १ स्पर्श रा नहीं लेवे, २ स्पर्श रा लेवे ३ स्पर्श रा लेवे, ४ स्पर्श रा लेवे। ५, ६ ७, ८ स्पर्श रा नहीं लेवे। विशेष प्रकारे ४ स्पर्श रा लेवे-शीत उष्ण स्निग्ध रुक्ष। अहो भगवान्! शीत रा लेवे तो १ गुण शीत रा लेवे कि २ गुण शीत रा लेवे कि यावत् १० गुण शीत रा लेवे कि संख्यात गुण शीत रा लेवे कि असंख्यात गुण शीत रा लेवे कि अनन्त गुण शीत रा लेवे? हे गौतम! १ गुण शीत रा

लेवे २ गुण शीत रा लेवे जाव १० गुण शीत रा लवे संख्यात गुण, असंख्यात गुण, अनन्त गुण शीत रा लेवे ।

जिस तरह शीत कयो उसी तरह उष्ण निद्ध लुक्ख कह देखो। पुट्ठा रा लेवे, ओगाढा रा लेवे, अनन्तर ओगाढा रा लेवे, सूक्ष्म रा लेवे बादर रा लेवे, ऊचे रा लेवे, नीचे रा लेवे तिरछे रा लेवे, आदि रा लेवे, अन्त रा लेवे, मध्य रा लेवे सविषय रा लेवे, अणुपूर्वी रा लेवे, नियमा छह दिशा रा लेवे, सयतर गिण्हति (आन्तरे सहित ग्रहण करे, जघन्य १ समय, उत्कृष्ट असंख्यात समय रा आंतरा सु ग्रहण करे), निरन्तर गिण्हंति (आंतरे रहित ग्रहण करे), सयतर निसरंति नो निरंतर निसरंति, भिन्ना निसरंति अभिन्ना निसरंति। द्रव्य रो १, क्षेत्र रो १, काल रा १२, वर्णादिक रा १६×१३ = २०८, पुट्ठादिक रा १८, कुल २४० हुआ। १० स्थिति द्वार— भाषा री स्थिति जघन्य १ समय री, उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त री। ११ आन्तरा द्वार—भाषा रो आन्तरो जघन्य अन्तमुहूर्त रो, उत्कृष्ट अनन्त काल रो। १२ ग्रहण द्वार—काया रा जोग सु भाषा रा पुद्गल ग्रहण करे। १३ निसरण द्वार—वचन रा जोग सु भाषा रा पुद्गल छोड़े। १४ लेवे मूके द्वार—भाषा रा पुद्गल पहले समय लेवे, दूजे समय लेवे मूके, तीजे समय लेवे मूके जाव पिछले समय मूके। भाषा रा पुद्गल छोड़े सो ५ प्रकार रा छोड़े—१ खंडा भेद—लोह रा, ताम्बे रा सीसे रा, रूपे रा, स्वर्ण रा टुकड़ावत्। २ प्रतर भेद—बांस के छता के, केली के, भोडल के प्रतरवत्। ३ चूर्णिका भेद—तिल का, मूग

का, पीपल का, मीरची का, मदरख का चूरणवत् । ४ अनुतडिय भेद-तालाब, नदी, द्रह, बावड़ी पुष्करणी, सरोवर सरोवर री पंक्तिवत् । ५ उकरिया भेद-मू ग की, मंडूक की, तिल की, उड़द की फली, एरंड के बीजवत् यह धूप आने पर उसमें से दाने उछल कर बाहर निकलते हैं । अल्पाबोध-सब सु थोड़ा द्रव्य उकरिया भेद से भेदाये हुए, २ से यकी अनुतडिय भेद से भेदाये हुवे द्रव्य अनन्तगुणा, ३ से यकी चूर्णिका भेद से भदाये हुव द्रव्य अनन्त-गुणा, ४ से यकी प्रतर भद से भेदाये हुव द्रव्य अनन्त गुणा, ५ से यकी ख डा भद से भेदाये हुवे द्रव्य अनन्त गुणा । १५ नाम द्वार-भाषा रा ४ भेद-१ सत्य भाषा, २ असत्य भाषा ३ मिश्र भाषा, ४ व्यवहार भाषा ।

जणवय सम्मय ठवणा, णामे रूवे पडुच्च सच्चे य ।
ववहार भाव जोग, दसमे ओवम्म सच्चे य ॥ १ ॥

सत्य भाषा रा १० भेद- १ जणवय सच्चा २ सम्मय सच्चा ३ ठवणा सच्चा ४ णाम सच्चा ५ रूव सच्चा ६ पडुच्च सच्चा ७ ववहार सच्चा ८ भाव सच्चा ९ जोग सच्चा १० ओपमा सच्चा।

१ जणवय सच्चा (जनपद सत्य)- जिके देश में जिकी भाषा बोले तिकी सत्य, जैसे पाणी ने पय कहे, पाणी ने अम्बु कहे, गोद रे बेटे ने बरगो कहे ।

२ सम्मत सच्चा (सम्मत सत्य) घणा मनुष्य जो बात मान लो यह सत्य है जैसे पंकज कहतां कादे से उपन्यो । कादे सें कमल

उपन्यो, शैवाल उपनी, डेडको उपन्यो, परन्तु कमल ने पंकज मान्यो, शैवाल तथा डडके ने पंकज मान्यो नहीं। जैसे खोळे (गोद) रे बेटे ने बेटो मान्यो।

३ ठवणा सच्चा (स्थापना सत्य) रा २ भेद– सद्भाव स्थापना, असद्भाव स्थापना। सद्भाव स्थापना–यथायोग आकार, जैसे पारसुजा री मूर्ति, पारसुजा रो आकार तिणने पारसुजा री मूर्ति कहीजे। नांदिया री मूर्ति नांदिया रो आकार तिणने नांदिया री मूर्ति कहीजे। असद्भाव स्थापना, जैसे–गोल मोल टोल र तेल सिंदूर लगाई ने कहे ए म्हारा भैरूँजी। पांच पचेटा राखी ने आखा चढ़ाई ने कहे आ म्हारी सीतला, बदली (बोदरी) माता।

४ णाम सच्चा (नाम सत्य)–नाम दियो कुल वर्धन कुल री वृद्धि करे नहीं सो भी नाम सत्य है। ५ रूव सच्चा (रूप सत्य) साधु रो रूप कियो पण साधु रा गुण नहीं। ६ पडुच्च सच्चा (प्रतीत्य सत्य)–अपेक्षा वचन सत्य है। जैसे कनिष्टका री अपेक्षा अनामिका बड़ी, अनामिका री अपेक्षा कनिष्टका छोटी। बेटे री अपेक्षा बाप बड़ो, बाप री अपेक्षा बेटो छोटो। ७ ववहार सच्चा (व्यवहार सत्य)–जैसे पड़े तो पाणी, कहवे पड़नाल पड़े है। बले सो घास कहवे पहाड़ बले है इत्यादि। ८ भाव सच्चा (भाव सत्य) जैसे-पंचेपक्ष कहसी सूखो हरयो, बुगलो सफेद, निश्चय में वर्ण पावे पांचु ही। ६ जोग सच्चा (योगसत्य)–जैसे छत्तेवाला छत्री, दंडेवाला दंडी, घोड़े वाला, गाड़ी वाला, रूपये वाला इत्यादि। १० ओवमा

सच्चा (उपमा सत्य)— छतै ने छती ओपमा, छतै ने अछती ओपमा, अछतै ने छती ओपमा, अछतै ने अछती ओपमा। छतै ने छती ओपमा जैसे—पद्मनाभ भगवान् महावीर भगवान सरीखा होसी। छतै ने अछती ओपमा—नारकी देवता रो आउखो छतो, पण सागर री ओपमा अछती। अछतै ने छती ओपमा जैसे—

पान झड़ंतो इम कहै, सुन तरुवर वनराय।
अब के बिछुड़े कब मिले, दूर पड़ेंगे जाय॥ १॥
तब तरुवर उत्तर दियो, सुनो पत्र इक बात।
इस घर यही रीत है, इक आवत इक जात॥ २॥
पान झड़ंता देखने, हंसी जु कूंपलियाँ।
मो बीती तोय बीतसी, धीरी रह बापड़ियाँ॥ ३॥
कब पत्तर मुख बोलियो, कब तरुवर दियो जवाब।
वीर बताई ओपमा, सूत्र अणुओगद्वार मंझार॥ ४॥

अछतै ने अछती ओपमा, जैसे—घोड़े रा सींग गधे सरीखा, गधे रा सींग घोड़े सरीखा।

कोह माणे माया लोहे, पिज्ज तहेव दोसे य।
हास भय अक्खाइय उवघाइय निस्सिया दसमा॥ १॥

असत्य भाषा रा १० भेद—कोह निस्सिया, माण निस्सिया, माया निस्सिया, लोभ निस्सिया, पेज्ज निस्सिया, दोस निस्सिया, हास निस्सिया, भय निस्सिया, अक्खाइया निस्सिया, उवघाइया निस्सिया।

१ कोह मिस्सिया—क्रोध रे वश सत्य बोले तो भी झूठ।
२ माणमिस्सिया—मान रे वश सत्य बोले तो भी झूठ।
३ माया मिस्सिया—माया रे वश सत्य बोले तो भी झूठ।
४ लोभ मिस्सिया—लोभ रे वश सत्य बोले तो भी झूठ।
५ पेज्ज मिस्सिया—राग (प्रेम) रे वश सत्य बोले तो भी झूठ।
६ दोस मिस्सिया—द्वेष रे वश सत्य बोले तो भी झूठ।
७ हास मिस्सिया—हंसी के वश सत्य बोले तो भी झूठ।
८ भय मिस्सिया-भय रे वश सत्य बोले तो भी झूठ।
९ अक्खाइयामिस्सिया—कल्पित ग्रन्थादि की नेसराय सू झूठ बोले, असम्भवित वार्ता कहे तो झूठ। १० उवघाइयमिस्सिया—गाढ चोर किसा इत्यादि हिंसाकारी उपदेश देवे यानी जीव री घात हुवे जिसी भाषा बोले तो झूठ, कूडो आल देवे तो झूठ।

मिश्र भाषा रा १० भेद—१ उप्पण्णमिस्सिया, २ विगय मिस्सिया, ३ उप्पण्ण विगय मिस्सिया, ४ जीव मिस्सिया, ५ अजीव मिस्सिया ६ जीवाजीव मिस्सिया, ७ अणंत मिस्सिया, ८ परित्तमिस्सिया, ९ अद्धा मिस्सिया, १० अद्धद्धा मिस्सिया।

(१) उप्पण्ण मिस्सिया—आज शहर में १० बालक जन्म्या कहे परन्तु ५ ही जन्म्या हुवे या ७ जन्म्या हुवे तो मिश्र भाषा। (२) विगय मिस्सिया—आज शहर में १० मनुष्य मरया कहे परन्तु ६ या ८ मरया हुवे या अधिका ओछा मरया हुवे तो मिश्र भाषा। (३) उप्पण्णविगयमिस्सिया आज शहर में १० उत्पन्न

हुआ १ ही मरया पान्तु उरपम मी कम ज्यादा हुआ और मरया मी कम ज्यादा तो मिश्र भाषा। (४) जीव मिस्सिया–सायो तो पान मीतर कांकरा मी है जीव मी है कहवे कोरा जीव ही जीव उठा सायो। (५) अजीव मिस्सिया–सायो तो पान कोई कोर कांकरो मी है, कहवे कोरा कांकरा ही कांकरा उठा सायो। (६) जीवाजीव मिस्सिया–सायो तो पान, मीतर जीव मी है, कांकरा मी है, कहवे आपो आप उठा सायो। (७) अनंत मिस्सिया–अनन्त ने प्रत्येक कहे, सायो तो मूला, साथे डांखला मी है, कहवे कोग डांखला ही डांखला उठा सायो। (८) परित मिस्सिया-प्रत्येक ने अनन्त कहे, सायो तो डांखला साथे अनन्त काय मी है, कहवे कोरी अनन्त काय ही अनन्त काय उठाय सायो। (९) अद्धा मिस्सिया–सूर्य तो ऊगो और कहवे कि पहो दिन आगयो दो पहो दिन आगयो। (१) अद्धद्धा मिस्सिया–सूर्य तो ऊगो, और कहवे कि पहर दिन आगयो दोपहर दिन चढ़ गयो। सैमा तो पही और कहवे कि पहर रात आगई आधी रात आगई।

आमंतणी आणमणी, जायणी तह पुच्छणी य पण्णवणी।
पच्चक्खाणी भासा, भासा इच्छाणुलोमा य ॥ ३ ॥
अणभिग्गहिया भासा भासा य अभिग्गहम्मि बोधव्वा।
संसयकरणी भासा वोगड अव्वोगडा चेव ॥ ४ ॥

व्यवहार भाषा रा १२ भेद–(१) आमंतणी, २ आणमणी ३ जायणी, ४ पुच्छणी, ५ पण्णवणी, ६ पच्चक्खाणी, ७ इच्छाणुलोमा

८ अणमिग्गहिया, ९ अभिग्गहिया, १० संसयकरणी, ११ वोगडा, १२ अवोगडा।

(१) आमंतणी–आमन्त्रण देवे, जैसे हे देवदत्त। (२) आणवणी आज्ञा देवे, जैसे यहां आओ, बैठ जाओ। (३) जायणी (याचनी)–वस्त्र पात्र इत्यादि याचे–मांगे। (४) पुच्छणी–प्रश्न पूछे, रस्तो पूछे। (५) पणवणी–विनय, उपदेश, धर्म, अधर्म रो स्वरूप ओलखावे। (६) पच्चक्खाणी–पच्चक्खाण करे। (७) इच्छाणुलोमा–इच्छा सु इच्छा मिल जाय। (८) अणभिग्गहिया (अनभिगृहीता)– प्रतिनियत अर्थ रो निश्चय नहीं हुवे ऐसी भाषा बोले। (९) अभिग्गहिया (अभिगृहीता)– प्रतिनियत अर्थ रो निश्चय हुवे एसी भाषा बोले। (१०) संसयकरणी–संशय सहित भाषा बोले, जैसे कहे कि सिंधव लाओ, सिंधव नामे सिन्धु देश रो पुरुष, सिंधव नामे घोड़ो सिंधव नामे लूण। इण मां सु कांई चीज लावे, इस तरह इस शब्द में संशय रहे। (११) वोगडा– प्रगट अर्थ वाली (समझ में आने वाली) भाषा बोले। (१२) अवोगडा–अव्याकृत–गम्भीर अर्थ वाली (समझ में नहीं आवे) भाषा बोले।

समुच्चय भाषा रा– १६ दंडक, १ समुच्चय जीव में ये २० अलावा। व्यवहार भाषा रा– १ समुच्चय जीव, १६ दंडक में ये २० अलावा। सत्य भाषा, असत्य भाषा, मिश्र भाषा रा, १ समुच्चय जीव, १६ दंडक ये १७×३ =५१ अलावा। सगला ६१ अलावा सो एक जीव आसरी, ६१ घणा जीव आसरी=१८२

असाता । १८२×२४० बोल भांगा लेवे, इणां ने गुणा करने सु ४३६८० असाता हुआ ।

१६ कारण द्वार—ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय कर्म रो क्षयोपशम भाव मोहनीय कर्म रो उदय बचन रे जोग सु असत्य भाषा मिश्र भाषा बोले । ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय कर्म रा क्षयोपशम भाव में बचन रे जोग सु सत्य भाषा, व्यवहार भाषा बोले ।

१७ पर्याप्ति द्वार—सत्य भाषा, असत्य भाषा पर्याप्ति । मिश्र भाषा, व्यवहार भाषा अपर्याप्ति ।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्रीपन्नवणा जी रे पद १२ वें में बधेलका मुकेलका रो थोकड़ा चाले सो कहे छै—

अहो भगवान् ! शरीर किता ? हे गौतम ! शरीर पांच, औदारिक जाव कार्मण । २४ दण्डक में जितार शरीर पावे उतना २ कह देणा । अहो भगवान् ! औदारिक शरीर किता प्रकार रा ? हे गौतम ! औदारिक शरीर दो प्रकार रा— बधेलका, मुकेलका । अहो भगवान् ! बंधेलका मुकेलका पुद्गल केने कहीजे ? हे गौतम ! वर्तमान काल में ग्रहण करके बैठा है जिके ने बधेलका पुद्गल कहीजे । गये काल में ग्रहण करी करीने मुक्या (छांड्या) है जिके ने मुकेलका पुद्गल कहीजे ।

अहो भगवान् ! समुच्चय जीव में शरीर कितना ? हे गौतम ! शरीर ५–औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस, कार्मण ।

अहो भगवान ! औदारिक शरीर रा बंधेलका कितना ! हे गौतम ! असंख्याता । असंख्याता किता ? काल थकी एक एक समय एक एक शरीर अपहरे, असंख्याती अवसर्पिणी असंख्याती उत्सर्पिणी रा जितना समय हुवे उतना (असंख्याता लोक रा आकाश प्रदेश जितना)। क्षेत्र थकी–असंख्याता लोक रा आकाश प्रदेश जितना ।

अहो भगवान ! वैक्रिय शरीर रा बंधेलका किता ? हे गौतम ! काल थकी असंख्याती अवसर्पिणी, असंख्याती उत्सर्पिणी रा समय हुवे जितना । क्षेत्र थकी–श्रेणी प्रतर रे असंख्यातवें भाग (७ राजु री लम्बी, ७ राजु री चौड़ी, १ प्रदेश री जाड़ी, इण में जितना आकाश प्रदेश है उण रे असंख्यातवें भाग) ।

अहो भगवान ! आहारक शरीर रा बंधेलका कितना ? हे गौतम ! सिय अत्थि सिय णत्थि जे य अत्थि जघन्य १, २, ३, उत्कृष्ट प्रत्येक हजार ।

अहो भगवान ! औदारिक, वैक्रिय, आहारक इण तीनु शरीरों रा मुक्केलका कितना ? हे गौतम ! अनन्ता । अनन्ता कितना ? काल थकी एक एक समय एक एक शरीर अपहरे, अनन्ती अवसर्पिणी अनन्ती उत्सर्पिणी रे समय जितना । क्षेत्र थकी अनन्ता लोक रा आकाश प्रदेश जितना । द्रव्य थकी अभवी से अनन्त-गुणा, सिद्ध भगवान रे अनन्तवें भाग ।

अहो भगवान् ! तैजस कार्मण शरीर रा पोलिका किसना ? हे गौतम ! अनन्ता। अनन्ता किया ? काल थकी–एक एक समय एक एक शरीर अपहरे, अनन्ती अवसर्पिणी अनन्ती उत्सर्पिणी रा समय जिता। क्षेत्र थकी– अनन्ता लोक रे आकाश प्रदेश जिता। द्रव्य थकी सिद्धां सु अनन्तगुणा। सर्व जीवों रे अनन्तवें भाग ऊणा।

अहो भगवान् ! तैजस कार्मण शरीर रा मुकेलका किता ? हे गौतम ! अनन्ता। अनन्ता किया ? काल थकी अनन्ती अव सर्पिणी अनन्ती उत्सर्पिणी र समय जिता। क्षेत्र थकी–अनन्ता लोक रे आकाश प्रदेश जिता। द्रव्य थकी सर्व जीवों सु अनन्त गुणा। सब जीवों रो* वर्गमूल काढे जिके रे अनन्तवें भाग ऊणा।

नारकी में शरीर पावे ३–वैक्रिय तैजस कार्मण। वैक्रिय शरीर रा पंचेलका किता ? असंख्याता। असंख्याता किया ? काल थकी–१ १ समय एक एक शरीर अपहरतां अपहरतां असंख्याती अवसर्पिणी असंख्याती उत्सर्पिणी रा समय हुवे जिता। क्षेत्र थकी–७ राजु रो चौंतरो घनपहरतस जिके मांय सु एक अ गुल (*सूची अंगुल) यांरो क्षेत्र लेखो जिके रे नीचे जिता आकाश प्रदेश आवे जिरां रो वगमूल काढणो। पहले वर्गमूल ने दूजा वर्गमूल सु गुणा

---

* जिता जीव है जिका न जतना सु ही गुणा कर संख्या जिकां रो गुणन थका आवे जिके ने वग मूल कहिये।

* ७ राजू री लम्बी, १ अगुल री चौड़ो, १ प्रदेश री जाडी जिक मे सूची अगुल कहिये।

करणा जिता आकाश प्रदेश आवे जिके में एक एक नारकी रे
रीसे ने वैठक देवे तो सात राजु रो ओवरो भरीज जावे जिता।
अथवा पहले दूज वर्गमूल सु गुणा करे उस में जिता आकाश
प्रदेश आवे उतना नारकी रे वैक्रिय शरीर रा बंधेलक है। जैसे
२५६ रो वर्गमूल १६, और १६ रो वर्गमूल ४। इस तरह १६
ने ४ सु गुणा करे तब ६४ हुवे। इस तरह सु सूची अगुल रा
आकाश प्रदेशों रो वर्गमूल निकालणो और पहला वर्गमूल ने
दूजे वर्गमूल सु गुणा करे जितना आकाश प्रदेश आवे उतना वैक्रिय
शरीर रा बंधेलका जाणना। इसी तरह तैजस कार्मण शरीर रा कह
देणा। मुकेलका पांचु ही शरीर रा अनन्ता। अनन्ता किता ?
समुच्चय जीव में औदारिक वैक्रिय आहारक रा कया उतना।

भवनपति देवता में शरीर पावे ३ वैक्रिय, तैजस, कार्मण।
वैक्रिय शरीर रा बंधेलका किता ? काल थकी—एक एक समय एक
एक शरीर अपहरतां अपहरतां असंख्याती अवसर्पिणी असंख्याती
उत्सर्पिणी रा समय हुवे उतना। क्षेत्र थकी—७ राजु रो चौतरो
घनपरतल, जिके में सु एक अंगुल (सूची अगुल) क्षेत्र लेणो।
तस नीचे जितना आकाश प्रदेश आवे उणांरो वर्गमूल काढणो,
पहले वर्गमूल रे असंख्यातवें भाग जितना। इसी तरह तैजस कार्मण
कह देणा। मुकेलका पांचु ही शरीर रा अनन्ता। समुच्चय जीव
में औदारिक री परे कह देणा। पांच स्थावर में शरीर पावे ३ औदारिक
तैजस कार्मण। वायुकाय में शरीर पावे ४ वैक्रिय वध्यो।

पांचवें§वर्गमूलने छठे वर्गमूलसु गुणा करे जिता। असंख्याता किणा (सम्मूर्च्छिम मनुष्य आश्री) १ असंख्याती अवसर्पिणी असंख्याती उत्सर्पिणी रा समय हुवे जिता। क्षेत्र थकी—७ राजु रो चौतरो घन घनवत्त जिके में सु अंगुल प्रमाण क्षेत्र लेणो जिके रे माय आकाश प्रदेश आवे जिका रा वर्गमूल काढ पहले वर्गमूल में तीजे वर्गमूल सु गुणा करे जितो घन आवे जिके में एक एक सम्मूर्च्छिम मनुष्य ने बैठक देवे तो ७ राजु रो चौतरो भरीज जावे जिके १ मनुष्य मावे जिती जगह खाली रहवे। गर्भज मनुष्य रे वैक्रिय शरीर रा बंधेलका किणा १ संख्याता। गर्भज मनुष्य रे आहारक शरीर रा बंधेलका किणा १ सिय अत्थि सिय नत्थि, जे अत्थि जघन्य १, २, ३, उत्कृष्ट प्रत्येक हजार। गर्भज और सम्मूर्च्छिम मनुष्य दोनों रा तैजस कार्मण रा बंधेलका औदारिक री परे कह देणा। दोनों प्रकार रे मनुष्य रे पांचु ही शरीर रा मुकेलका समुच्चय जीव में औदारिक री परे कह देणा।

वाणव्यन्तर देवता में शरीर पाव ३—वैक्रिय तैजस, कार्मण, भवनपति देवता री परे कह देणा नवरं इतरो विशेष बंधेलकों में क्षेत्र ३००—३०० योजन री बैठक एक एक वाणव्यन्तर देवता ने देवे तो ७ राजु रो चौतरो भर जावे।

---

§ ६—पांचवों वर्गमूल [illegible] सु गुणा करणे सु [illegible] हुए। छठो वर्गमूल [illegible] इण ने पूर्वोक्त पांचवें वर्ग रे साथ गुणा करे तब [illegible] इतने जघन्य पद में मनुष्य होवें।

ज्योतिषी देवता भवनपति री तरह कह देणा नवरं षवेलकों म क्षेत्र २५६ अंगुल र ऊपर एक एक ज्योतिषी देवता ने पैठक देवे तो ७ राजु रो * घनकृत चौतरो भर जावे। वैमानिक देवता में भवनपति देवता र माफक कह देणो नवर एटलो विशेष षवेलकों में क्षेत्र में दूजे वर्गमूल ने तीज वर्गमूल साथे गुणा करे जितरा। असत्कल्पना सु २५६ रो पहलो वर्गमूल १६, दूजो ४, तीजो २, दूजे वर्गमूल ४ ने तीजे वर्गमूल २ सु गुणा करने सु ८ हुआ। ८ में आकाश प्रदेश आवे जितना।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद १३ वें में जीव परिणाम रो थोकड़ो चाले सो कहे छै—

अहो भगवान ! जीव परिणाम किता प्रकार रा ? हे गौतम ! १० प्रकार रा—१ गति परिणाम, २ इन्द्रिय परिणाम, ३ कषाय परिणाम, ४ लेश्या परिणाम, ५ जोग परिणाम, ६ उपयोग परिणाम, ७ ज्ञान परिणाम, ८ दर्शन परिणाम, ९ चारित्र परिणाम, १० वेद परिणाम।

(१) गति ४, (२) इन्द्रिय ५ अनिन्द्रिय १, (३) कषाय ४ अकषायी १, (४) लेश्या ६ अलेशी १, (५) जोग ३ अजोगी १, (६) उपयोग २, (७) ज्ञान ५ अज्ञान ३, (८) दर्शन ३ (समदर्शन, मिथ्यादर्शन, समामिथ्यादर्शन) (९) चारित्र ५ असंजती १।

* सात राजु का लम्बा, सात राजु का चौड़ा और सात राजु का ऊंचा उसको घनकृत कहिये।

सन्नतार्मव्रती १, (१०) वेद ३ अवेगी १। इन बोल ५०।

नारकी में बोल पावे २६ — गति १ इन्द्रिय ५ कषाय ४, लेश्या ३, योग ३, उपयोग २, ज्ञान ३ अज्ञान ३, दर्शन ३, चारित्र १ अव्रती, वेद १ नपुंसक = २६।

भवनपति वाणव्यन्तर में बोल पावे ३१ — लेश्या १ वेद १ बध्यो (स्त्रीवेद, पुरुषवेद ये २ वेद पावे), बाकी २६ बोल नारकी री पर कहणा = ३१। ज्योतिषी, पहला दूजा देवलोक में बोल पावे ८ — भवनपति में ३१ कया तिके में सु ३ लेश्या कम = २८। तीजे सु बारहवें देवलोक तक बोल पावे २७ — ज्योतिषी रा २८ कया तिके में सु १ वेद (स्त्री वेद) कम = २७। नव नवग्रीवेक में बोल पावे २६ — तीजा देवलोक रा २७ कया तिके में सु १ मिश्र दृष्टि कम = २६। पांच अनुत्तर विमान में बोल पावे २० — नव ग्रीवेक रा २६ कया तिके में सु १ मिथ्यादर्शन (दृष्टि) ३ अज्ञान ये चार बोल कम = २२।

पृथ्वी पाणी वनस्पति में बोल पावे १८ — गति १, इन्द्रिय १, कषाय ४, लेश्या ४ योग १, उपयोग २, अज्ञान २, दर्शन १ मिथ्यादर्शन, चारित्र १ अव्रती वेद १ = १८। तेउ वायु में बोल पावे १७ — पृथ्वी पाणी वनस्पति रा १८ कया तिके में सु १ लेश्या (तेजो) कम = १७। बेइन्द्रिय में बोल पावे २२— तेऊ वायु रा १७ बोल कया तिका तथा १ इन्द्रिय, १ योग, २ ज्ञान १ दर्शन (सम्यग्दर्शन) ये पांच बोल बध्या = २२।

तेइन्द्रिय में बोल पावे २३-एक इन्द्रिय बधी = २३। चौइन्द्रिय में बोल पावे २४-एक इन्द्रिय बधी। तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में बोल पावे ३५-गति १ इन्द्रिय ५ कषाय ४ लेश्या ६ योग ३ उपयोग २ ज्ञान ३, अज्ञान ३, दर्शन ३, चारित्र २ असंज्ञी, संज्ञासंज्ञी, वेद ३ = ३५। मनुष्य में बोल पावे ४७- पचास बोल में सु ३ गति टली = ४७।

सेवं भंते। सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद १३ वें में अजीव परिणाम रो थोकड़ो चाले सो कहे छे—

अहो भगवान्! अजीव परिणाम कितना प्रकार रा? हे गौतम! दस प्रकार रा —

१ बंध परिणाम २ गति परिणाम, ३ संठाण परिणाम, ४ भेद परिणाम, ५ वर्ण परिणाम, ६ गन्ध परिणाम, ७ रस परिणाम, ८ स्पर्श परिणाम, ९ अगुरु लघु परिणाम १० शब्द परिणाम।

(१) बन्ध रा २ भेद- निद्ध, लुक्ख। १ गुण वर्णीने सठिकाणे समबंध नहीं हुवे, समनिद्ध समनिद्ध बन्ध नहीं हुवे और समलुक्ख समलुक्ख बंध नहीं हुवे जैसे १ गुण निद्ध १ गुण निद्ध बन्ध नहीं हुवे, १ गुणनिद्ध २ गुणनिद्ध बन्ध नहीं हुवे, २ गुणनिद्ध २ गुण निद्ध बन्ध नहीं हुवे २ गुणनिद्ध ३ गुण निद्ध बन्ध हुवे। निद्ध कयो ज्यों ही लुक्ख कह देणो। एक गुण वर्जीने परठिकाणे निद्ध

लुक्ख रो माहोमाहीं सम अने विषम ए दोनूं बन्ध हुवे। जैसे २ गुण निद्ध २ गुण लुक्ख बन्ध हुवे, २ गुण निद्ध ३ गुण लुक्ख बन्ध हुवे।

(२) गति रा २ भेद— फुसमाणगति (स्पर्शतो थको जावे जैसे पाणी में ठीकरी रो दृष्टान्त)। अफुसमाणगति (अस्पर्शतो थको जावे जैसे आकाश में पंखी रो दृष्टान्त)। अथवा ह्रस्व गति (थोड़ी दूर) और दीर्घ गति (लम्बी दूर)।

(३) संठाण रा ५ भेद— परिमंडल संठाण, वट्ट संठाण, तंस संठाण, चउरंस संठाण, आयतन संठाण।

(४) भेद ५ प्रकार रा — (१) खण्डा भेद, (२) प्रतर भेद, (३) चुण्णिया भेद, (४) अणुतडिया भेद, (५) उक्करिया भेद।

---

(१) खण्डा भेद— लोह रा टुकड़ा, ताम्बे रा टुकड़ा, सीसे रा टुकड़ा, चान्दी रा टुकड़ा, सोने रा टुकड़ा।

(२) प्रतर भेद— बांस रा प्रतर, सणा रा प्रतर, केळा रा प्रतर, भोडल रा प्रतर।

(३) चुण्णिया भेद— तिल का चूर्ण, मूंग का चूर्ण, पीपल का चूर्ण, मिरची का चूर्ण, अदरक का चूर्ण इत्यादि।

(४) अणुतडिया भेद— तालाब रा तराड़ा, नदी, द्रह, बावड़ी, पुष्करणी, सरोवर, सरोवर री पंक्ति।

(५) उक्करिया भेद— मूंग की फली, मंडुक की फली, तिल की फली, अरहर की फली, एरंड रा बीज ये सूख जाने पर इस में से दाणा उछल कर बाहर निकल जावे।

(५) वर्ण ५, (६) गन्ध २, (७) रस ५ (८) स्पर्श ८, (९) अगुरु लघु (न हल्का न भारी, भाषा रा पुद्गल तथा अमूर्तिक द्रव्य आकाश आदि)। (१०) शब्द रा २ भेद—प्रशस्त शब्द, अप्रशस्त शब्द।

सेवं भंते! सेवं भंते!!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद १४ वें में कषाय रो थोकड़ो चाले सो कहे छै—

गाथा—

आय पइट्ठिय खेत्त, पडुच्च अणंताणुबंधी आभोगे।
चिय उवचिय बंध, उदीर वेद तह णिज्जरा चेव॥ १॥

अहो भगवान! कषाय किता? हे गौतम! कषाय ४—क्रोध, मान, माया, लोभ। समुच्चय जीव २४ दंडक में कषाय पावे चार। ४ स्थान में क्रोध प्रतिष्ठित (रहा हुवा) है। १ आय पइट्ठिए (आपरी आत्मा ऊपर क्रोध करे) २ पर पइट्ठिए (दूसरे री आत्मा पर क्रोध करे) ३ तदुभयपइट्ठिए (आपरी आत्मा और दूसरे री आत्मा दोनों ऊपर क्रोध करे) ४ अप्पइट्ठिए (क्रोध वेदनीय रे उदय सु निष्प्रयोजन ही क्रोध करे)।

४ प्रकार सु क्रोध री उत्पत्ति होवे—१ खेत्त पडुच्च (उघाड़ी भूमि खेत कूवा प्रमुख)। २ वत्थु पडुच्च (ढकी भूमि हाट हवेली प्रमुख)। ३ सरीर पडुच्च (दास दासी बेटा बेटी प्रमुख)। ४ उवहि पडुच्च (उपधि भंड उपकरण वस्त्र आभूषणादिक)।

क्रोध ४ प्रकार रो-अनन्तानुबन्धी, अपच्चक्खाणी (अप्रत्या-ख्यान), पच्चक्खाणावरण (प्रत्याख्यानावरण) संज्वलण (संज्वलन)

४ प्रकार से क्रोध-१ आभोग निवत्तिए-क्रोध करे पण क्रोध रा फल जाणे। २ अणाभोग निवत्तिए क्रोध करे पण क्रोध रा फल नहीं जाणे। ३ उवसंत (उपशान्त) क्रोध उदय में नहीं। ४ अणउवसंते (अनुपशान्त) क्रोध उदय में है। ४×४ = १६, १६×२५=४ ०

क्रोध करीने ८ कर्म चिणया, उपचिणया, बांध्या, उदीरया वेद्या निजरया। दृष्टान्त—चिणया जैसे दाणा बिखरयाने इकट्ठा किया। उपचिणया पिंडा कियो। बांध्या—गारा या गोबर से बांध्या। उदीरया-वापिस बिखेरया। वेदया—एक एक दाणो खाई ने मचावे। निजरया—जगह ने साफ कर दी। इसी दृष्टान्त सु कर्मों रा पुद्गल आय कर आत्मा रे ठिके लो चिणया। विशेष पुष्ट करया तिके उपचिणया। बांध्या यानी निकाचितबंध करया। उदीरया यानी उदीरणा करी तपस्या वगैरह करके। वेदया यानी हाथ दुखे पग दुखे माथो दुखे इत्यादि। निर्जरया यानी कर्मों ने अलग कर साफ करणा। ये ६ बोल गये काल आसरी, ६ वर्तमान काल आसरी, ६ आगामी काल आसरी = १८। ये १८ एक जीव आसरी १८ घणा जीव आसरी = ३६×२५ = ९ ०। अथवा ६ बोल समुच्चय जीव २४ दंडक सु = १५०। ये १५० सबे

मेली अम्पाबोध द्वार, १० खरखरा गुरुवा द्वार, ११ लहुवा महुवा द्वार, १२ खरखरा गुरुवों री अल्पाबोध द्वार, १३ लहुवा महुवा री अल्पाबोध द्वार, १४ खरखरा गुरुवा, लहुवा महुवा री भेली अल्पाबोध द्वार, १५ विषय द्वार, १६ जघन्य उपयोग रा काल री अल्पाबोध द्वार, १७ उत्कृष्ट उपयोग रा काल री अल्पाबोध द्वार, १८ जघन्य उत्कृष्ट उपयोग रा काल री अल्पाबोध द्वार।

१ नाम द्वार—गोचरी (श्रोत्रेन्द्रिय), अगोचरी (चक्षु इन्द्रिय) दुमोही (घ्राणेन्द्रिय), परसरी (रसेन्द्रिय) अवरपरी (स्पर्शेन्द्रिय)।

२ संठाण द्वार—श्रोत्रेन्द्रिय रो संठाण कदम्ब रे फूल रे आकार। चक्षु इन्द्रिय रो संठाण मसूर री दाल तथा चन्द्रमा रे आकार। घ्राणेन्द्रिय रो संठाण लोहार री धमण रे आकार अथवा अति-मुक्तक फूल रे आकार। रसेन्द्रिय रो संठाण खुरपले (उस्तर) रे आकार। स्पर्शेन्द्रिय रो संठाण नाना प्रकार रो।

३ जाडपणा द्वार पांच इन्द्रिय रो जाडपणो जघन्य उत्कृष्ट अंगुल रे असंख्यातवें भाग।

४ लाम्बपणा द्वार—३ इन्द्रिय रो लंबापणो जघन्य उत्कृष्ट अंगुल रे असंख्यातवें भाग। रसेन्द्रिय रो लम्बापणो प्रत्येक अंगुल रो (आपरे अंगुल सु लेणो)। स्पर्शेन्द्रिय रो लम्बापणो आप आप रे शरीर प्रमाणे।

५ ओपाणा द्वार—एक एक इन्द्रिय असंख्याता असंख्याता आकाश प्रदेश ओपाणा।

६ लागा द्वार—एक एक इन्द्रिय रे अनन्ता अनन्ता पुद्गल लागा।

७ ओघाया री अल्पाबोध द्वार— सब सु थोड़ा चक्षु इन्द्रिय ओघाया आकाश प्रदेश, ते थकी श्रोत्रेन्द्रिय ओघाया आकाश प्रदेश संख्यात गुणा, ते थकी घ्राणेन्द्रिय ओघाया आकाश प्रदेश संख्यात गुणा, ते थकी रसेन्द्रिय ओघाया आकाश प्रदेश असंख्यात गुणा, ते थकी स्पर्शेन्द्रिय ओघाया आकाश प्रदेश संख्यात गुणा।

८ लागों री अल्पाबोध द्वार— सब सु थोड़ा चक्षु इन्द्रिय रा लागा पुद्गल, ते थकी श्रोत्रेन्द्रिय रा लागा पुद्गल संख्यात गुणा, ते थकी घ्राणेन्द्रिय रा लागा पुद्गल संख्यात गुणा, ते थकी रसेन्द्रिय रा लागा पुद्गल असंख्यात गुणा, ते थकी स्पर्शेन्द्रिय रा लागा पुद्गल संख्यात गुणा।

९ ओघाया लागों री भेली अल्पाबोध द्वार—

सब सु थोड़ा चक्षु इन्द्रिय रा ओघाया, ते थकी श्रोत्रेन्द्रिय रा ओघाया संख्यात गुणा, ते थकी घ्राणेन्द्रिय रा ओघाया संख्यात गुणा, ते थकी रसेन्द्रिय रा ओघाया असंख्यात गुणा, ते थकी स्पर्शेन्द्रिय रा ओघाया संख्यात गुणा, ते थकी चक्षु इन्द्रिय रा लागा अनन्तगुणा ते थकी श्रोत्रेन्द्रिय रा लागा संख्यात गुणा, ते थकी घ्राणेन्द्रिय रा लागा संख्यातगुणा, ते थकी रसेन्द्रिय रा लागा असंख्यातगुणा, ते थकी स्पर्शेन्द्रिय रा लागा संख्यात गुणा।

१० खरखरा गुरुश द्वार — एक एक इन्द्रिय र मनन्ता खरखरा गुरुवा पुद्गल लाग्या।

११ लहुवा महुवा द्वार — एक एक इन्द्रिय रे अनन्ता अनन्ता लहुवा महुवा पुद्गल लाग्या।

१२ खरखरा गुरुवां री अल्पाबोध द्वार — सब सु थोड़ा चक्षु इन्द्रिय रा खरखरा गुरुवा, ते थकी श्रोत्रेन्द्रिय रा खरखरा गुरुवा अनन्त गुणा, ते थकी घ्राणेन्द्रिय रा खरखरा गुरुवा अनन्त गुणा, ते थकी रसेन्द्रिय रा खरखरा गुरुवा अनन्तगुणा, ते थकी स्पर्शेन्द्रिय रा खरखरा गुरुवा अनन्त गुणा।

१३ लहुवा महुवा री अल्पाबोध द्वार — सब सु थोड़ा स्पर्शेन्द्रिय रा लहुवा महुवा ते थकी रसेन्द्रिय रा लहुवा महुवा अनन्त गुणा, ते थकी घ्राणेन्द्रिय रा लहुवा महुवा अनन्तगुणा, ते थकी श्रोत्रेन्द्रिय रा लहुवा महुवा अनन्तगुणा, ते थकी चक्षु इन्द्रिय रा लहुवा महुवा अनन्त गुणा।

१४ खरखरा गुरुवा लहुवा महुवा री भेली अल्पाबोध द्वार—

सब सु थोड़ा चक्षुइन्द्रिय रा खरखरा गुरुवा, ते थकी श्रोत्रेन्द्रिय रा खरखरा गुरुवा अनन्तगुणा, ते थकी घ्राणेन्द्रिय रा खरखरा गुरुवा अनन्तगुणा, ते थकी रसेन्द्रिय रा खरखरा गुरुवा अनन्तगुणा से थकी स्पर्शेन्द्रिय रा खरखरा गुरुवा अनन्तगुणा, ते थकी स्पर्शेन्द्रिय रा लहुवा महुवा अनन्तगुणा, ते थकी रसेन्द्रिय रा लहुवा महुवा अनन्तगुणा ते थकी घ्राणेन्द्रिय रा लहुवा महुवा

अनन्तगुणा, ते थकी श्रोत्रेन्द्रिय रा लहुवा महुवा अनन्तगुणा, ते थकी चक्षुइन्द्रिय रा लहुवा महुवा अनन्तगुणा।

१५ विषय द्वार — एकेन्द्रिय री स्पर्शेन्द्रिय री विषय ४०० धनुष री बेइन्द्रिय री स्पर्शेन्द्रिय री विषय ८०० धनुष री, तेइन्द्रिय री स्पर्शेन्द्रिय री विषय १६०० धनुष री, चौइन्द्रिय री स्पर्शेन्द्रिय री विषय ३२०० धनुष री, असन्नी पंचेन्द्रिय री स्पर्शेन्द्रिय री विषय ६४०० धनुष री, सन्नी पंचेन्द्रिय री स्पर्शेन्द्रिय री विषय ६ योजन री। बेइन्द्रिय री रसेन्द्रिय री विषय ६४ धनुष री, तेइन्द्रिय री रसेन्द्रिय री विषय १२८ धनुष री, चौइन्द्रिय री रसेन्द्रिय री विषय २५६ धनुष री असन्नी पंचेन्द्रिय री रसेन्द्रिय री ५१२ धनुष री, सन्नी पंचेन्द्रिय री रसेन्द्रिय री ६ योजन री। तेइन्द्रिय री घ्राणेन्द्रिय री विषय १०० धनुष री, चौइन्द्रिय री घ्राणेन्द्रिय री विषय २०० धनुष री, असन्नी पंचेन्द्रिय री घ्राणेन्द्रिय री ४०० धनुष री, सन्नी पंचेन्द्रिय रे घ्राणेन्द्रिय री ६ योजन री। चौइन्द्रिय री चक्षुइन्द्रिय री विषय २६५४धनुष री, असन्नी पंचेन्द्रिय री चक्षुइन्द्रिय रा ५९०८ धनुष री, सन्नी पंचेन्द्रिय री चक्षुइन्द्रिय री १००००० एक लाख योजन झाझेरी। असन्नी पंचेन्द्रिय री श्रोत्रेन्द्रिय री विषय ८०० धनुष री, सन्नी पंचेन्द्रिय री श्रोत्रेन्द्रिय री १२ योजन री।

१६ जघन्य उपयोग रा काल री अल्पाबोध द्वार— सब सु थोड़ो चक्षुइन्द्रिय रो जघन्य उपयोग रो काल, ते थकी श्रोत्रेन्द्रिय

+ कोई कोई ८००० धनुष की भी कहते हैं। तत्व केवली गम्य।

रो जघन्य उपयोग रो काल विसेसाहिया, ते थकी घ्राणेन्द्रिय रो जघन्य उपयोग रो काल विसेसाहिया, ते थकी रसेन्द्रिय रो जघन्य उपयोग रो काल विसेसाहिया, ते थकी स्पर्शेन्द्रिय रो जघन्य उपयोग रो काल विससाहिया।

१७ उत्कृष्ट उपयोग काल री अल्पाबोध द्वार— सब सु थोड़ो चक्षुइन्द्रिय रो उत्कृष्ट उपयोग काल, ते थकी श्रोत्रेन्द्रिय रो उत्कृष्ट उपयोग काल विसेसाहिया, ते थकी घ्राणेन्द्रिय रो उत्कृष्ट उपयोग काल विसेसाहिया, ते थकी रसेन्द्रिय रो उत्कृष्ट उपयोग काल विसेसाहिया, त थकी स्पर्शेन्द्रिय रो उत्कृष्ट उपयोग काल विसेसाहिया।

१८ जघन्य उत्कृष्ट उपयोग काल री भेली अल्पाबोध द्वार—
सब सु थोड़ो चक्षुइन्द्रिय रो जघन्य उपयोग काल, ते थकी श्रोत्रेन्द्रिय रो जघन्य उपयोग काल विसेसाहिया, ते थकी घ्राणेन्द्रिय रो जघन्य उपयोग काल विसेसाहिया, ते थकी रसेन्द्रिय रो जघन्य उपयोग काल विसेसाहिया, ते थकी स्पर्शेन्द्रिय रो जघन्य उपयोग काल विसेसाहिया, ते थकी चक्षुइन्द्रिय रो उत्कृष्ट उपयोग काल विसेसाहिया, ते थकी श्रोत्रेन्द्रिय रो उत्कृष्ट उपयोग काल विसेसाहिया, ते थकी घ्राणेन्द्रिय रो उत्कृष्ट उपयोग काल विसेसाहिया, ते थकी रसेन्द्रिय रो उत्कृष्ट उपयोग काल विसेसाहिया, ते थकी स्पर्शेन्द्रिय रो उत्कृष्ट उपयोग काल विससाहिया।

सेवं भंते! सेवं भंते!!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद १५ वा में ८ द्रव्य इन्द्रियों रो थोकड़ो चाले सो कहे छै—

आठ इन्द्रियों रा नाम-२ कान, २ आंख, २ नाक १ जीभ, १ शरीर।

एक जीव आसरी, घणा जीव आसरी, एक जीव मांहोमांही (परस्पर) आसरी और घणा जीव मांहोमांही (परस्पर) आसरी।

१ अहो भगवान्! एक एक नारकी रो नेरीयो द्रव्य इन्द्रियां किती करी? हे गौतम! अतीता (भूतकाल आसरी) अनन्ती, बंदेलका (वर्तमान कालआसरी)८, पुरेक्खड़ा (भविष्यतकालआसरी) आठ वा, सोले वा, सतरे वा जाव सख्याती, असंख्याती अनन्ती।

अहो भगवान्! एक एक असुरकुमार रा देवता द्रव्य इन्द्रियां किती करी? हे गौतम! अतीता अनन्ती, बंदेलका ८, पुरेक्खड़ा आठ वा, नवं वा जाव सख्याती, असख्याती, अनन्ती। असुरकुमार कृपा ठसी तरह ६ नवनिकाय रा देवता कह देवा।

अहो भगवान्! एक एक पृथ्वी पाणी वनस्पति रे जीव द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी? हे गौतम! अतीता अनन्ती, बंदेलका १, पुरेक्खड़ा आठ वा, नवं वा, जाव सख्याती, असंख्याती अनन्ती।

अहो भगवान्! एक एक तेउ वायु बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय चौइन्द्रिय असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, असन्नी मनुष्य रे जीव द्रव्य इन्द्रियां किती करी? हे गौतम! अतीता अनन्ती, बंदेलका एकेन्द्रिय में १,

बेइन्द्रिय में २, तेइन्द्रिय में ४, चौइन्द्रिय में ६, पंचेन्द्रिय में ८, पुरे क्खडा सर्व वा, दर्स वा, जाव संख्याती असंख्याती अनन्ती ।

अहो भगवान् ! एक एक सकी तियच रे जीव द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? हे गौतम ! अतीता अनन्ती, बंदेलका ८, पुरेक्खडा अठं वा नव वा, जाव संख्याती, असंख्याती, अनन्ती ।

अहो भगवान् ! एक एक सकी मनुष्य द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? हे गौतम ! अतीता अनन्ती, बंदेलका ८, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि अठं वा, नवं वा, जाव संख्याती, असंख्याती, अनन्ती ।

अहो भगवान् ! एक एक बाणव्यन्तर ज्योतिषी पहले दूजे देवलोक रा देवता द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? हे गौतम ! अतीता अनन्ती, बंदेलका ८ पुरेक्खडा अठ वा, नव वा, जाव संख्याती असंख्याती अनन्ती ।

अहो भगवान् ! तीजे देवलोक सूं लगा ने जाव ६ नवग्रीवेक रा एक एक देवता द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? हे गौतम ! अतीता अनन्ती बंदेलका ८ पुरेक्खडा अठं वा, सोलं वा सतरं वा, जाव संख्याती असंख्याती, अनन्ती ।

अहो भगवान् ! च्यार अनुत्तर विमान रा एक एक देवता द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? हे गौतम ! अतीता अनन्ती, बंदेलका ८, पुरेक्खडा अठं वा, सोलं वा, चोइसं वा, जाव संख्याती ।

अहो भगवान् ! सर्वार्थसिद्ध रा एक एक देवता द्रव्य इन्द्रिय

किती करी ? हे गौतम ! अतीता अनन्ती, बंदेलका ८ पुरेक्खडा ८।

२ अहो भगवान् ! घणा नारकी रा नेरीया द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? हे गौतम ! अतीता अनन्ती, बंदेलका असंख्याती, पुरेक्खडा अनन्ती। घणा भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी जाव नवग्रीवेक तक, मनुष्य अनुत्तर विमान वर्जी ने, द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका असंख्याती, पुरेक्खडा अनन्ती। चार अनुत्तर विमान रा घणा देवता द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता अनन्ती, बदेलका असंख्याती, पुरेक्खडा असंख्याती। सर्वार्थ सिद्ध रा घणा देवता द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका संख्याती, पुरेक्खडा संख्याती। घणा सन्नी मनुष्य रा जीव द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका संख्याती, पुरेक्खडा अनन्ती।

३ अहो भगवान् ! एक एक नारकी रे नेरीये नारकीपणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? हे गौतम ! अतीता अनन्ती, बंदेलका ८, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि आठ वा, सोलं वा, चोवीसं वा, जाव संख्याती, असंख्याती, अनन्ती। एक एक नारकी रो नेरीयो, सन्नी मनुष्य ४ अनुत्तर विमान वर्जीने सर्व ठिकाणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका नत्थि पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि एकेन्द्रिय में १, २, ३, बेइन्द्रिय में २, ४, ६, तेइन्द्रिय में ४, ८, १२, चौइन्द्रिय में ६, १२, १८, पंचेन्द्रिय में आठ वा, सोलं वा, चोवीस वा जाव

संख्याती, असंख्याती, अनन्ती। एक एक नारकी रो नरीयो सभी मनुष्यपणे द्रव्य इन्द्रियाँ किता करी ? अतीता अनन्ती, बंद्देलगा नत्थि, पुरेक्खडा नियमा अत्थि अर्ठ वा, सोलं वा, चोबीसं वा जाव संख्याती, असंख्याती अनन्ती। एक एक नारकी रो नरीयो पाँच अनुत्तर विमानपणे द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता नत्थि, बंद्देलगा नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि चार अनुत्तर विमान पणे अर्ठ वा, सोलं वा, सर्वार्थसिद्धपणे आठ। भवनपति वाणव्यन्तर, ज्योतिषी देवता नारकी माफक कह देणा।

पहले देवलोक सु जाव नवग्रीवेयक रा एक एक देवता आपरे ठठिकाणे पाठिकाणे द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता अनन्ती, बंद्देलगा ठठिकाणे ८, पाठिकाणे नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि अर्ठ वा, सोलं वा, चोबीस वा, जाव संख्याती असंख्याती अनन्ती। पहले देवलोक सु जाव नवग्रीवेयक रा एक एक देवता चार अनुत्तर विमानपणे द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि आठ, बंद्देलगा नत्थि पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि अर्ठ वा, सोलं वा। पहले देवलोक सु जाव नवग्रीवेयक रा एक एक देवता सर्वार्थसिद्धपणे द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता नत्थि, बंद्देलगा नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि आठ। पहले देवलोक सु जाव नवग्रीवेयक रा एक एक देवता सर्व ठिकाणे वैमानिक और सभी मनुष्य वर्जीने द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी ?

अतीता अनन्ती, बद्धेलका नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि एकेन्द्रिय में १, २, ३, बेइन्द्रिय में २, ४, ६, तेइन्द्रिय में ४, ८, १२, चौइन्द्रिय में ६, १२, १८, पञ्चेन्द्रिय में ८, १६, २४, जाव सङ्ख्याती असङ्ख्याती अनन्ती। पहले देवलोक सु जाव नवग्रीवेयक रा एक एक देवता, सभी मनुष्यपणे द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका नत्थि पुरेक्खडा नियमा अत्थि आठ वा सोलै वा चोबीसं वा जाव सङ्ख्याती असङ्ख्याती अनन्ती। चार अनुत्तर विमान रा एक एक देवता आपरे सठिकाणे द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि आठ, बद्देलका आठ, पुरक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि आठ। चार अनुत्तर विमान रा एक एक देवता सर्वार्थसिद्धपणा द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता नत्थि, बद्देलका नत्थि, पुरक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि आठ। चार अनुत्तर विमान रा एक एक देवता पहले देवलोक सु जाव नवग्रीवेयक रा देवतापणे द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका नत्थि, पुरक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि आठ वा सोल वा चोबीसं वा जाव सङ्ख्याती। चार अनुत्तर विमान रा एक एक देवता वैमानिक देवता सभी मनुष्य वर्जीने सर्व ठिकाणे द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता अनन्ती, बद्देलका नत्थि, पुरक्खडा नत्थि। चार अनुत्तर विमान रा एक एक देवता सभी मनुष्यपणे द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता अनन्ती,

पंदेलखा नत्थि, पुरेक्खडा नियमा अत्थि आठ वा सोलं वा चोवीसं वा जाव संख्याती।

सवार्थसिद्ध रा एक एक देवता आपरे सठिकारा द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी? अतीता नत्थि, बद्धेलखा आठ, पुरेक्खडा नत्थि। सवार्थसिद्ध रा एक एक देवता चार अनुत्तर विमानपणे द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि आठ, बद्धेलखा नत्थि, पुरेक्खडा नत्थि। सवार्थसिद्ध रा एक एक देवता चार अनुत्तर विमान वर्जी मनुष्य वर्जीने सर्व ठिकाणे द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी? अतीता अनन्ती, बंदेलखा नत्थि, पुरेक्खडा नत्थि। सवार्थसिद्ध रा एक एक देवता सबी मनुष्यपणे द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी? अतीता अनन्ती, पंदेलखा नत्थि, पुरेक्खडा नियमा अत्थि आठ।

एक एक पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, असन्नी तिर्यञ्च सन्नी तिर्यञ्च, असन्नी मनुष्य आपरे सठिकाणे द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी? अतीता अनन्ती, बंदेलखा सठिकाणे अत्थि पराठिकाणे नत्थि पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि एकेन्द्रिय में १ २ ३, बेइन्द्रिय में २, ४, ६, तेइन्द्रिय में ४, ८ १२, चौइन्द्रिय में ६ १२ १८, पञ्चेन्द्रिय में आठ वा सोलं वा चोवीसं वा जाव संख्याती असंख्याती अनन्ती।

११ बोलाँ रा एक एक जीव पांच अनुत्तर विमान सबी मनुष्य वर्जीने सर्व ठिकाणे द्रव्य इन्द्रियाँ किती करी? अतीता अनन्ती,

पदेसका नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि एकेन्द्रिय में १ २, ३, बइन्द्रिय में २, ४, ६, तेइन्द्रिय में ४, ८ १२, चौइन्द्रिय में ६, १२, १८, पञ्चेन्द्रिय में अठ वा सोले वा चोवीस वा जाव सख्याती असख्याती अनन्ती । ११ योलों रा एक एक जीव पांच अनुत्तर विमानपणे द्रव्य इन्द्रियाँ किसी करी ? अतीता नत्थि, पदेसका नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि चार अनुत्तर विमानपणे अठ वा सोले वा, सर्वार्थ सिद्धपणे आठ ।

११ बोलों रा एक एक जीव सन्नी मनुष्यपणे द्रव्य इन्द्रियाँ किसी करी ? अतीता अनन्ती, पंदसका नत्थि, पुरेक्खडा नियमा अत्थि अठ वा सोले वा चोवीस वा जाव सख्याती असंख्याती अनन्ती ।

एक एक सन्नी मनुष्य रा जीव आपरं सठिकाणे द्रव्य इन्द्रियाँ किसी करी ? अतीता अनन्ती, पंदसका ८, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि अठ वा, सोले वा, चोवीस वा जाव संख्याती, असंख्याती, अनन्ती । एक एक सन्नी मनुष्य रे जीव पांच अनुत्तर विमान सन्नी मनुष्य वर्जीने सर्व ठिकाणे द्रव्य इन्द्रियाँ किसी करी ? अतीता अनन्ती पंदसका नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि एकेन्द्रिय में १, २, ३, बइन्द्रिय में २, ४, ६, तेइन्द्रिय में ४, ८, १२, चौइन्द्रिय में ६, १२, १८, पचेन्द्रिय में अठ वा, सोले वा, चोवीस वा जाव सख्याती, असंख्याती, अनन्ती । एक एक सन्नी मनुष्य रे जीव

पांच अनुत्तर विमानपणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि चार अनुत्तर विमानपणे आठ वा सोलं वा, सर्वार्थसिद्धपणे आठ, बद्देलगा नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि चार अनुत्तर विमानपणे आठ वा, सोलं वा, सर्वार्थसिद्धपणे आठ।

घणा नारकी रा नीया नारकी सु लगा कर जाव नवग्रीवेयक तक तथा १० औदारिकपणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता अनन्ती, बद्देलगा सठिकाणे असंख्याती परठिकाणे नत्थि पुरेक्खडा अनन्ती। घणा नारकी रा नीया पांच अनुत्तर विमानपणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता नत्थि, बद्देलगा नत्थि, पुरेक्खडा असंख्याती। घणा भवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिषी, पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय असन्नी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय सन्नी तिर्यञ्च पर्चेन्द्रिय असन्नी मनुष्य रा जीव नारकी सु लगा कर नवग्रीवेयक तक तथा १० औदारिकपणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता अनन्ती, बद्देलगा सठिकाणे असंख्याती नवरं वनस्पति सठिकाणे अनन्ती, परठिकाणे नत्थि, पुरेक्खडा अनन्ती कह देणी। घणा भवनपति, वाणव्यन्तर ज्योतिषी, पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय सन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय असन्नी मनुष्य रा जीव पांच अनुत्तर विमानपणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता नत्थि बद्देलगा नत्थि, पुरेक्खडा असंख्याती नवर वनस्पति अनन्ती।

घणा सन्नी मनुष्य रा जीव सठिकाणे (सन्नी मनुष्यपणे) द्रव्य

इन्द्रियां किती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका सख्याती, पुरेक्खड़ा अनन्ती । घणा सभी मनुष्य रा जीव सभी मनुष्य और पांच अनुत्तर विमान वर्जीने बाकी सर्व ठिकाणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता अनन्ती, बदेलका नत्थि, पुरेक्खड़ा अनन्ती । घणा सभी मनुष्य रा जीव पांच अनुत्तर विमानपणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता सख्याती, बदेलका नत्थि, पुरेक्खड़ा सख्याती । पहले देवलोक सु लगा कर जाव नवग्रीवेयक रा घणा देवता आपरे सठिकाणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता अनन्ती बंदेलका असख्याती, पुरेक्खड़ा अनन्ती । पहले देवलोक सु लगा कर जाव नवग्रीवेयक रा घणा देवता चार अनुत्तर विमान पणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता असख्याती बदेलका नत्थि पुरेक्खड़ा असंख्याती । पहले देवलोक सु लगा कर जाव नवग्रीवेयक रा घणा देवता सर्वार्थसिद्धपणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता नत्थि, बंदेलका नत्थि, पुरेक्खड़ा असंख्याती । पहले देवलोक सु लगा कर जाव नवग्रीवेयक रा घणा देवता पांच अनुत्तर विमान वर्जीने सर्व ठिकाणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका सठिकाण अत्थि परठिकाणे नत्थि, पुरेक्खड़ा अनन्ती ।

चार अनुत्तर विमान रा घणा देवता आपरे सठिकाणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता असंख्याती, बदेलका असंख्याती, पुरेक्खड़ा असंख्याती । चार अनुत्तर विमान रा घणा देवता सर्वार्थ-

सिद्धपणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता नत्थि, बंदेलका नत्थि, पुरेक्खड़ा सख्याती। चार अनुत्तर विमान रा पछा देवता पहले देवलोक सु लगा कर यावत नवग्रीवयक तक द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका नत्थि पुरेक्खड़ा असंख्याती। चार अनुत्तर विमान रा पछा देवता वैमानिक मंछी मनुष्य वर्जीने सर्व ठिकाणा द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका नत्थि, पुरेक्खड़ा नत्थि। चार अनुत्तर विमान रा पछा देवता सन्नी मनुष्यपणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका नत्थि, पुरेक्खड़ा असंख्याती।

पछा सर्वार्थसिद्ध रा देवता आपरे सठिकाणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता नत्थि, बदेलका संख्याती, पुरेक्खड़ा नत्थि। पछा सर्वार्थसिद्ध रा देवता चार अनुत्तर विमानपणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता सख्याती, बंदेलका नत्थि, पुरेक्खड़ा नत्थि। पछा सर्वार्थसिद्ध रा देवता चार अनुत्तर विमान सन्नी मनुष्य वर्जीने सर्व ठिकाणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता अनन्ती, बदेलका नत्थि, पुरेक्खड़ा नत्थि। पछा सर्वार्थसिद्ध रा देवता सन्नी मनुष्यपणे द्रव्य इन्द्रियां किती करी ? अतीता अनन्ती, बदेलका नत्थि, पुरेक्खड़ा संख्याती।

सेव भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी र पद १५ वें में पांच भाव इन्द्रिय गे थाकड़ो चाले सो कहे छै—

१—अहो भगवान ! भाव इन्द्रियाँ कित्ती कही ? हे गौतम! भाव इन्द्रियाँ पांच कही। जिण रा नाम श्रोत्रेन्द्रिय जाव स्पर्शेन्द्रिय। अहो भगवान् ! नारकी रे भाव इन्द्रियाँ कित्ती कही ? हे गौतम ! पांच श्रोत्रेन्द्रिय जाव स्पर्शेन्द्रिय। इमी तरह १३ दंडक देवता रा, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य य १६ दंडक कह दणा। पांच स्थावर में एक स्पर्शेन्द्रिय, बेइन्द्रिय में २—स्पर्शेन्द्रिय,रसेन्द्रिय। तेइन्द्रिय में ३—स्पर्शेन्द्रिय रसेन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय। चौइन्द्रिय में ४—स्पर्शेन्द्रिय जाव चक्षु इन्द्रिय कहणी।

एक एक नारकी रे नरीय भाव इन्द्रियाँ कित्ती करी ? अतीता अनन्ती, पंदेलका ५ पुरक्खडा ५ १०, ११ जाव सम्याती असंख्याती अनन्ती। एक एक असुरकुमार रे देवता भाव इन्द्रियाँ कित्ती करी ? अतीता अनन्ती, पदेलका ५ पुरक्खडा पांच वा छ वा जाव संख्याती असंख्याती अनन्ती। इमी तरह नवनिकाय रा देवता वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, पहला दूजा देवलोक तक कह दणा। तीन देवलोक सु जाव नवग्रैवेयक तक नारकी री पर कह दणा। चार अनुत्तर विमान रा देवता अतीता अनन्ती, बंदेलका ५, पुरक्खडा पच वा दस वा पनरा वा जाव संख्याती। सर्वार्थसिद्ध रा देवता अतीता अनन्ती, बंदेलका ५, पुरक्खडा ५। पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय रा जीव अतीता अनन्ता, बंदेलका एकेन्द्रिय में १,

बेइन्द्रिय में २, तेइन्द्रिय में ३, चौइन्द्रिय में ४, पुरेक्खडा छ वा सात वा याव संस्याती असंस्याती अनन्ती। तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय असुरकुमार री माफक कह देया। एक एक सभी मनुष्य अतीता अनन्ती, बंदेलका ३, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि पांच वा छ वा याव संख्याती, असंख्याती, अनन्ती।

२—घणा नारकी रा नेरीया भाव इन्द्रियाँ कित्ती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका असंख्याती, पुरेक्खडा अनन्ती। घणा भवनपति, वाणव्यन्तर ज्योतिषी पहले देवलोक सु याव नवग्रीवेयक तक रा देवता तथा चार स्थावर ३ विकलेन्द्रिय, तियञ्च पञ्चेन्द्रिय भाव इन्द्रियां कित्ती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका असंख्याती, पुरेक्खडा अनन्ती। घणा वनस्पति रा जीव भाव इन्द्रियाँ कित्ती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका अनन्ती, पुरेक्खडा अनन्ती। घणा सन्नी मनुष्य और सर्वार्थसिद्ध रा देवता भाव इन्द्रियाँ कित्ती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका संख्याती, पुरेक्खडा मनुष्य में अनन्ती सर्वार्थसिद्ध में संख्याती। घणा चार अनुत्तर विमान रा देवता भाव इन्द्रियाँ कित्ती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका असंख्याती पुरेक्खडा असंख्याती।

३—एक एक नारकी र नेरीय नारकीपणे भाव इन्द्रियाँ कित्ती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका ५, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि पंच वा दस वा पनरं वा याव संख्याती

असम्प्याती अनन्ती। एक एक नारकी र नेरीये, पांच अनुत्तर विमान सभी मनुष्य वर्जीने शेष सर्व ठिकाणे भाव इन्द्रियाँ किसी करी ? अतीता अनन्ती, पंदेलका नत्थि, पुरक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि एकेन्द्रिय में १,२,३,बेइन्द्रिय में २,४,६,तेइन्द्रिय में ३,६,६, चौइन्द्रिय में ४,८,१२, पञ्चेन्द्रिय में पंच वा दस वा पनरं वा जाव संख्याती असंख्याती अनन्ती। एक एक नारकी रे नेरीये सभी मनुष्यपणे भाव इन्द्रियाँ किसी करी ? अतीता अनन्ती, पंदेलका नत्थि, पुरेक्खडा नियमा अत्थि पंच वा दस वा पनरं वा जाव अनन्ती। एक एक नारकी रे नेरीय पांच अनुत्तर विमानपणे भाव इन्द्रियाँ किसी करी ? अतीता नत्थि, पंदेलका नत्थि पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि चार अनुत्तर विमानपणे पांच वा दस, सर्वार्थसिद्धपणे पांच। एक एक भवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिषी देवता, पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, असन्नी तिर्यञ्च, सन्नी तिर्यञ्च, सम्मूर्छिम मनुष्य नारकी माफक कह देणा।

एक एक पहले देवलोक रा देवता जाव नवग्रीवेयक रा देवता पांच अनुत्तर विमान सभी मनुष्य वर्जीने भाव इन्द्रियाँ किसी करी ? अतीता अनन्ती पंदेलका भतिकाय ५,पाटिकास नत्थि, पुरक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि एकेन्द्रिय में १, २, ३, बेइन्द्रिय में २,४ ६ तेइन्द्रिय में ३ ६ ६, चौइन्द्रिय में ४, ८, १२,पञ्चेन्द्रिय में ५,१०,१५, जाव संख्याती असंख्याती अनन्ती।

एक एक पहले देवलोक रा देवता जाव नवग्रीवेयक रा देवता

पांच अनुत्तर विमानपणे मात इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता कस्यइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि चार अनुत्तर विमानपणे ४ सर्वार्थसिद्धपणे नत्थि, बंदेलका नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि चार अनुत्तर विमानपणे पंच वा दस सर्वार्थसिद्धपणे पांच। एक एक पहले देवलोक रा देवता जाव नवग्रीवेयक रा देवता सघी मनुष्यपणे मात इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता अनन्ती बंदेलका नत्थि, पुरेक्खडा नियमा अत्थि पंच वा दस वा पनरं वा जाव अनन्ती।

एक एक चार अनुत्तर विमान रा देवता सघी मनुष्य जाव ४ अनुत्तर विमान वर्जीने बाकी सर्व ठिकाणे मात इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका नत्थि, पुरेक्खडा वैमानिक वर्जीने नत्थि वैमानिकपणे कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि पंच वा दस वा पनर वा जाव संख्याती। एक एक चार अनुत्तर विमान रा देवता चार अनुत्तर विमानपणे मात इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि पांच। बंदेलका ४, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि ५। एक एक चार अनुत्तर विमान रा देवता सर्वार्थसिद्धपणे मात इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता नत्थि, बंदेलका नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि पांच।

एक एक चार अनुत्तर विमान रा देवता सघी मनुष्यपणे मात इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका नत्थि, पुरेक्खडा

नियमा अत्थि पंच वा दस वा जाव संख्याती ।

एक एक सर्वार्थसिद्ध रा देवता सन्नी मनुष्य अनुत्तर विमान वर्जीने सर्व ठिकाणे भाव इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता अनन्ती, बंद्देलका नत्थि, पुरक्खडा नत्थि । एक एक सर्वार्थसिद्ध रा देवता चार अनुत्तर विमानपणे भाव इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि पंच बंद्देलका नत्थि, पुरेक्खडा नत्थि । एक एक सर्वार्थसिद्ध रा देवता सर्वार्थसिद्धपणे भाव इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता नत्थि, बंद्देलका पांच पुरेक्खडा नत्थि । एक एक सर्वार्थसिद्ध रा देवता सन्नी मनुष्यपणे भाव इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता अनन्ती, बंद्देलका नत्थि, पुरक्खडा नियमा अत्थि पांच ।

एक एक सन्नी मनुष्य रे जीव मनुष्यपणे भाव इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता अनन्ती, बंद्देलका ५, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि पंच वा दस वा पनरं वा जाव अनन्ती । एक एक सन्नी मनुष्य रे जीव पांच अनुत्तर विमान वर्जीने बाकी सर्व ठिकाणे भाव इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता अनन्ती, बंद्देलका नत्थि पुरक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि एकेन्द्रिय में १, २, ३, बेइन्द्रिय में २, ४, ६, तेइन्द्रिय में ३, ६, ६, चौइन्द्रिय में ४, ८, १२, पञ्चेन्द्रिय में ५, १०, १५, जाव अनन्ती । एक एक सन्नी मनुष्य रे जीव पांच अनुत्तर विमानपणे भाव इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि चार अनुत्तर विमानपणे पंच वा दस वा, सर्वार्थसिद्धपणे पांच,

बद्धलक्ष्म नत्थि, पुरेक्खडा अतीता माफक कह देयी।

४—पचा नारकी रा नेरीया पांच अनुत्तर विमान बर्जीने सर्व ठिकाणे माव इन्द्रियाँ किती करी? अतीता अनन्ती, बंदेलक्ष सठिकाणे असख्याती परठिकाणे नत्थि, पुरेक्खडा अनन्ती। पचा नारकी रा नेराया पांच अनुत्तर विमानपणे माव इन्द्रियाँ किती करी? अतीता नत्थि, बंदेलक्ष नत्थि, पुरेक्खडा असंख्याती। इसी तरह भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, ५ स्थावर, ३विकलेन्द्रिय असन्नी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय सन्नी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, असन्नी मनुष्य नारकी री माफक कह देणा, नवरं एतलो विशेष वनस्पति रा जीव पांच अनुत्तर विमानपणे पुरेक्खडा अनन्ती कह देयी।

पचा सन्नी मनुष्य रा जीव सन्नी मनुष्यपणे माव इन्द्रियाँ किती करी? अतीता अनन्ती, बंदेलक्ष सख्याती पुरेक्खडा अनन्ती। पचा सन्नी मनुष्य रा जीव पांच अनुत्तर विमान बर्जीने सब ठिकाणे माव इन्द्रियाँ किती करी? अतीता अनन्ती, बंदेलक्ष नत्थि, पुरेक्खडा अनन्ती। पचा सन्नी मनुष्य रा जीव पांच अनुत्तर विमानपणे माव इन्द्रियाँ किती करी? अतीता संख्याती बंदेलक्ष नत्थि, पुरेक्खडा सख्याती।

पचा पहले देवलोक रा देवता आव नवग्रीवेयक रा देवता नारकी सु आव नवग्रीवेयक तक माव इन्द्रियाँ किती करी? अतीता अनन्ती, बंदेलक्ष सठिकाणअसख्याती परठिकाणे नत्थि, पुरेक्खडा अनन्ती।

पचा पहले देवलोक रा देवता आव नवग्रीवेयक रा देवता पांच

मनुत्तर विमानपणे माव इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता चार अनुत्तर विमानपणे असंख्याती, सर्वार्थसिद्धपणे नत्थि, बंदेलका नत्थि, पुरेक्खडा असंख्याती ।

घणा चार अनुत्तर विमान रा देवता सठिकाणे माव इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता असंख्याती, बदेलका असंख्याती, पुरेक्खडा असंख्याती । घणा चार अनुत्तरविमान रा देवता सर्वार्थसिद्धपणे मावइन्द्रियाँ किती करी ? अतीता नत्थि, बंदेलका नत्थि, पुरेक्खडा संख्याती । घणा चार अनुत्तर विमान रा देवता वैमानिक देव सभी मनुष्य वर्जीने बाकी सर्व ठिकाणे माव इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता अनन्ती बदेलका नत्थि, पुरेक्खडा नत्थि । घणा चार अनुत्तर विमान रा देवता सभी मनुष्य पहले देवलोक सु लगा कर माव नवग्रीवेयक रा देवतापणे माव इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका नत्थि पुरेक्खडा असंख्याती ।

घणा सर्वार्थसिद्ध रा देवता आपरे सठिकाणे माव इन्द्रियाँ [1] किती करी ? अतीता नत्थि, बंदेलका संख्याती, पुरेक्खडा नत्थि । घणा सर्वार्थसिद्ध रा देवता सभी मनुष्य वर्जीने बाकी सब ठिकाणे माव इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता चार अनुत्तर विमान वर्जीने अनन्ती, चार अनुत्तरविमानपणे सख्याती, बंदेलका नत्थि, पुरेक्खडा नत्थि । घणा सर्वार्थसिद्ध रा देवता सभी मनुष्यपणे माव इन्द्रियाँ किती करी ? अतीता अनन्ती, बंदेलका नत्थि, पुरेक्खडा संख्याती।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद १५ वें में प्रश्न रो थोकड़ा चाले सा कहे है—

भावित आत्मा रा अणगार ने केवली भगवान् चवदमा गुणठाणा रा अलेशी अवस्था रा मरणान्तिक समुद्घात करी चरम समय रा चरम निर्जर्या पुद्गल सबलोक व्यापी रह रेहने छद्मस्थ मनुष्य विशेष वर्णादि पर्याय से हीनपणे, गुरुपणे, लघुपणे, नहीं जाणे नहीं देखे ते पुद्गलां ने मनुष्य वैमानिक वर्जीने शेष २२ दण्डक रा जीव जाणे नहीं, देखे नहीं पिण आहार है। मनुष्य में कोई तो जाणे देखे आहारे है, कोई जाणे नहीं देखे नहीं पिण आहार है। असन्नी-भूत जाणे नहीं देखे नहीं, पिण आहारे है। सन्नीभूत रा २ भेद—उपयोग सहित, उपयोग रहित। उपयोग रहित तो नहीं जाणे नहीं देखे, आहारे। उपयोग सहित है सो जाणे देखे आहारे।

वैमानिक देव में मनुष्य माफक कह देणा नवरं वैमानिक देव २ प्रकार रा—मायी मिथ्यादृष्टि, अमायी समदृष्टि। मायी मिथ्यादृष्टि जाणे नहीं, देखे नहीं, पिण आहारे। अमायी समदृष्टि रा २ भेद—अणंतरोववण्णगा, परंपरोववण्णगा। अणंतरोव-वण्णगा (तत्काल रा उत्पन्न हुवा) जाणे नहीं देखे नहीं, पिण आहारे है। परंपरोववण्णगा (घणी देर रा उत्पन्न हुवा) रा २ भेद—पर्याप्ता, अपर्याप्ता। अपर्याप्ता—जाणे नहीं देखे नहीं आहारे। पर्याप्ता रा २ भेद—उपयोग सहित, उपयोग रहित। उपयोग रहित नहीं जाणे नहीं देखे, आहारे। उपयोग सहित जाणे देखे आहारे।

अहो भगवान् ! आरीसो (काच) देखतो हुओ मनुष्य क्या आरीसो देखे कि आत्मा देखे कि शरीर विभाग देखे ? हे गौतम ! मनुष्य आरीसो देखतो हुओ आरीसो नहीं देखे, आत्मा भी नहीं देखे परन्तु शरीर विभाग देखे। इस तरह ही तलवार, मणिरत्न, दूध, पाणी, तेल, ढीलो गुड़, रस, चर्बी में अपने शरीर रा प्रतिबिम्ब देखे।

अहो भगवान् ! घड़ी करी हुई अथवा लपेटी हुई कम्मल पट जितना आकाश प्रदेश ओगाहे है, क्या उतना ही आकाश प्रदेश फैलाया हुआ कम्मल पट ओगाहे है (फरसे है) ? हंता गोयमा ! ओगाहे है। इसी तरह लकड़ी रा थम खड़ा किया हुआ जितना आकाश प्रदेश ओगाहे है उतना ही आकाश प्रदेश आड़ा तिरछा रखने सु भी ओगाहे है।

अहो भगवान् ! आकाश रो थिगलो (लोक आकाश) १ धर्मास्तिकाया स्पर्शी, कि २ धर्मास्तिकाया रो देश स्पर्शो कि ३ प्रदेश स्पर्शो ? हे गौतम ! धर्मास्तिकाया स्पर्शी, देश नहीं स्पर्शो प्रदेश स्पर्शो। इसी तरह ४-५ ६ अधर्मास्तिकाय, ७-८ ९ आकाशास्तिकाय कह देणी। १० ११ १२ १३ १४ पृथ्वीकाय स्पर्शी जाव वनस्पतिकाय स्पर्शी (सूक्ष्म आसरी)। १५-त्रस काया सिय स्पर्शी सिय नहीं स्पर्शी। १६-काल-देश स्पर्शो देश नहीं स्पर्शो क्योंकि व्यवहार काल मात्र अढाई द्वीप में ही हुवे है।

अहो भगवान् ! जम्बूद्वीप किसने स्पर्शो ? कितनी काया ने

स्पर्शी कर रयो है? हे गौतम! धर्मास्तिकाय नहीं स्पर्शी, धर्मास्तिकाया रा देश और प्रदेश स्पर्श्या। इस तरह ही अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय कह देणी। पृथ्वीकाय यावत् वनस्पतिकाय स्पर्शी। त्रसकाय सिय स्पर्शी सिय नहीं स्पर्शी, अद्धा समय स्पर्श्यो। इसी तरह ही लवण समुद्र, धातकी खंड, कालोदधि समुद्र, अभ्यंतर पुष्करार्द्ध द्वीप कह देणा।

बाहरी पुष्करार्द्ध द्वीप भी जम्बूद्वीप माफक कह देणो मगर अद्धा समय नहीं स्पर्श्यो। इसी तरह से यावत् स्वयंभूरमण समुद्र तक कहणो।

---

* नोट — १ जम्बूद्वीप एक लाख योजन रो है शेष द्वीप समुद्र दुगुणा दुगुणा समझणा। २ लवण समुद्र ३ धातकी खंड ४ कालोदधि समुद्र ५ पुष्कर द्वीप ६ पुष्कर समुद्र ७ वारुणि द्वीप ८ वारुणि समुद्र ९ क्षीर द्वीप १० क्षीर समुद्र ११ घृत द्वीप १२ घृत समुद्र १३ इक्षु द्वीप १४ इक्षु समुद्र १५ नंदीश्वर द्वीप १६ नंदीश्वर समुद्र १७ अरुण्य द्वीप १८ अरुण्य समुद्र १९ भरुण द्वीप २० भरुण समुद्र २१ वायु द्वीप २२ वायु समुद्र २३ कुंडल द्वीप २४ कुंडल समुद्र २५ शंख द्वीप २६ शंख समुद्र २७ रुचक द्वीप २८ रुचक समुद्र २९ भुजंग द्वीप ३० भुजंग समुद्र ३१ कुश द्वीप ३२ कुश समुद्र ३३ क्रौंच द्वीप ३४ क्रौंच समुद्र ३५ हार द्वीप ३६ हार समुद्र ३७ हारवर द्वीप ३८ हारवर समुद्र ३९ हारवर भास द्वीप ४० हारवर भास समुद्र ऐसे ही भवहार रा ३ नाम रत्नावली रा ३ नाम कनकावली रा ३ नाम, ऐसे ही वस्त्र रा ३ नाम सुं गंध रा ३ नाम सुं कस्तूरी, उत्पलादिक कमल तिलक पद्म पृथ्वी नवनिधान, चौदह रत्न चूलहेमादिक वर्षधर पर्वत रा नाम सु पद्मादिक द्रह रा नाम सुं गंगादिक नदी रा नाम सुं

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

लोकाकाश जितलावन् कह देणो। अलोक आकाश कितराने स्पर्शो है? आकाशास्तिकाय रा देश और प्रदेश स्पर्शा है शेष १४ बोल नहीं स्पर्शा। १ अजीव रा देश सु स्पर्शा है यह अगुरुलघु अनन्त द्रव्यात्मक है, अगुरुलघु गुण करके संयुक्त है। एक एक आकाश प्रदेश पर अनन्त अगुरुलघु पर्याय है सर्व आकाश में अनन्तवें भाग (लोक आकाश जितना) कम है।

मार्गणा रा १६ बोल—१ धर्मास्तिकाय, २ धर्मास्तिकाय रा देश, ३ धर्मास्तिकाय रा प्रदेश, ४ अधर्मास्तिकाय, ५ अधर्मास्तिकाय रा देश, ६ अधर्मास्तिकाय रा प्रदेश, ७ आकाशास्तिकाय, ८ आकाशास्तिकाय रा देश, ९ आकाशास्तिकाय रा प्रदेश, १० काल ११ पृथ्वीकाय, १२ अपकाय, १३ तेउकाय, १४ वायुकाय, १५ वनस्पतिकाय, १६ त्रसकाय।

सेव भंते! सेव भंते!!

(शेष पृष्ठ ४८ का)

भारतवंत वक्षस्कार, सुधर्मादिक देवलोक, शक्रादिक इन्द्र, मेरु पर्वत मरुवादिक क्षेत्र रा नाम सु, कूट रा नाम सु नक्षत्र रा नाम सु, चन्द्र सूर्य रा नाम सु देव रा नाम सु नाग रा नाम सु भूत रा नाम सु असंख्याता द्वीप समुद्र है, अन्तिम स्वयंभू रमण समुद्र है। ये द्वीप समुद्रों रा नाम अमोलक ऋषिजी महाराज री पन्नवणा भाग दूसरा पत्र ७२४ सु लिखा है, आगे पीछे होणपे हो तो ज्ञानी गम्य।

सूत्र श्रीपन्नवणाजी र पद १६ वं म प्रयोग पद रा थोकड़ा चाले सो कहे छै—

समुच्चय जीव में जोग पावे १५—तेरह शाश्वता, २ अशाश्वता, त्रिके रा भांगा ९— (१) सब्बे वि ताव हुज्जा तेरह रा, (२) तेरह रा घणा आहारक रो एक, (३) तेरह रा घणा आहारक रा घणा, (४) तेरह रा घणा आहारक मिश्र रो एक, (५) तेरह रा घणा आहारक मिश्र रा घणा, (६) तेरह रा घणा आहारक रो एक आहारक मिश्र रो एक (७) तेरह रा घणा आहारक रो एक, आहारक मिश्र रा घणा, (८) तेरह रा घणा आहारक रा घणा आहारक मिश्र रो एक, (९) तेरह रा घणा आहारक रा घणा आहारक मिश्र रा घणा।

एक दण्डक नारकी रो, तेरह दंडक देवता रा ये १४ दण्डक में जोग पावे ११— दस तो शाश्वता, एक कार्मण अशाश्वतो, त्रिके रा भांगा ३— सब्बे वि ताव हुज्जा दस रा, दस रा घणा कार्मण रो एक, दस रा घणा कार्मण रा घणा। चार स्थावर वायुकाय वर्जी ने जोग पावे ३ शाश्वता, भांगो बणे नहीं। वायुकाय में जोग पावे ५ शाश्वता, भांगो बणे नहीं। तीन विकलेन्द्रिय में जोग पावे ४—तीन शाश्वता कार्मण अशाश्वतो त्रिके रा भांगा ३— सब्बे वि ताव हुज्जा तीन रा, तीन रा घणा कार्मण रो एक, तीन रा घणा कार्मण रा घणा। तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में जोग पावे १३— बारह शाश्वता कार्मण अशाश्वतो त्रिके रा भांगा ३-सब्बे वि ताव

हुआ पारह रा, पारह रा घसा कार्मण रो एक, पारह रा घसा कार्मण रा घसा । मनुष्य में जोग पावे १५—ग्यारह शाश्वता, चार अशाश्वता (औदारिक मिश्र, आहारक, आहारक मिश्र, कार्मण) जिके रा भांगा ८०—असंजोगी ८, दो संजोगी २४, तीन संजोगी ३२, चार संजोगी १६, सर्व मिल कर भांगा १४३ हुवे ।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद १६ वें में प्रयोग गति आदि पांच गति रो थोकड़ो चाले सो कहे छै—

अहो भगवान् ! गति किता प्रकार री ? हे गौतम ! गति ५ प्रकार री । (१) प्रयोगगति (२) तंत गति (३) बन्धन छेदनगति (४) उपपातगति (५) विहायोगति ।

(१) अहो भगवान् ! प्रयोगगति रा किता भेद ? हे गौतम ! प्रयोगगति रा मूल भेद पन्द्रह, उत्तर भेद १४३, से जोगों री माफक कह देणा । (२) अहो भगवान् ! तंतगति किण ने कहीजे ? हे गौतम ! जैसे कोई आदमी ने गांव नगर पुर पाटण जावणो है, वर्तमान ठिकाणो छोड़ दियो अगले ठिकाणे पुगो नहीं, रस्ते में मगर्ये है जिके ने तंत गति कहीजे । (३) अहो भगवान् ! बंधन छेदनगति किणने कहीजे ? हे गौतम ! जीव सु शरीर जुदो हुवे शरीर सु जीव जुदो हुवे तिकेने बन्धन छेदनगति कहीजे ।

(४) अहो भगवान्! उपपात गति रा कितना भेद? हे गौतम! उपपात गति रा ३ भेद— क्षेत्र उपपात गति, भव उपपात गति, नोभव उपपात गति। क्षेत्र उपपातगति रा ८० भेद— १ नरकगति क्षेत्र उपपातगति, २ तिर्यञ्चगति क्षेत्र उपपात गति, ३ मनुष्यगति क्षेत्र उपपातगति, ४ देवगति क्षेत्र उपपातगति, ५ सिद्धगति क्षेत्र उपपातगति। नरकगति क्षेत्र उपपातगति रा ७ भेद— रत्नप्रभा पृथ्वी नरकगति क्षेत्र उपपातगति जाव तमतमा पृथ्वी नरकगति क्षेत्र उपपातगति। तिर्यञ्च गति क्षेत्र उपपातगति रा ५ भेद—एकेन्द्रिय तिर्यञ्च गति क्षेत्र उपपातगति जाव पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चगति क्षेत्र उपपातगति। मनुष्यगति क्षेत्र उपपात गति रा २ भेद—सम्मूर्छिम मनुष्य क्षेत्र उपपातगति गर्भज मनुष्य क्षेत्र उपपातगति। देवगति क्षेत्र उपपातगति रा ४ भेद—भवनपति देवगति क्षेत्र उपपातगति जाव वैमानिक देवगति क्षेत्र उपपातगति। सिद्धगति क्षेत्र उपपात गति रा ५७ भेद— जम्बूद्वीप रो भरत १, एरावत २, चुल-हिमवंत शिखरी ३ हेमवय हिरण्यवय ४, सद्दावई वियडावई ५, महाहिमवंत रूप्पी ६, हरिवास रम्यकवास ७, गंधावई मालवंत ८, निषध नीलवंत ९, पूर्व पश्चिम महाविदेह १०, देवकुरु उत्तर कुरु ११, मेरु पर्वत तक ये ११ बोल जम्बूद्वीप रे सपक्ख (समश्रेणी) सपडिदिस (दिशा विदिशा में बराबर) सिद्धगति क्षेत्र उपपातगति इसी तरह २२ बोल धातकीखण्ड से कहणा और २२ बोल अर्द्ध पुष्कर द्वीप से कहणा। लवण समुद्र ५६ कालोदधि समुद्र ५७।

भव उपपात गति रा मूल भेद ४, उत्तरभेद २२, नरकगति जाव देवगति। नरकगति भव उपपातगति रा ७ भेद— रत्नप्रभा पृथ्वी नरकगति भव उपपातगति जाव तमतमा प्रभा नरकगति भव उपपातगति। तिर्यञ्चगति भव उपपातगति रा ५ भेद— एकेन्द्रिय तिर्यञ्चगति भव उपपातगति जाव पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चगति भव उपपातगति। मनुष्यगति भव उपपातगति रा २ भेद— सम्मूर्छिम मनुष्यगति भव उपपातगति, गर्भज मनुष्यगति भव उपपातगति। देवगति भव उपपातगति रा ४ भेद— भवनपति देवगति भव उपपातगति जाव वैमानिक देवगति भव उपपातगति।

नोभव उपपातगति रा मूल भेद २ उत्तर भेद ३४, पुद्गल गति, सिद्धगति। पुद्गलगति रा ६ भेद— परमाणु पुद्गल पूर्व र चरमांत सु पश्चिम र चरमांत तक एक समय में जावे। पश्चिम रे चरमांत सु पूर्व र चरमांत तक एक समय में जावे। उत्तर रे चरमांत सु दक्षिण र चरमांत तक एक समय में जावे। दक्षिण र चरमांत सु उत्तर र चरमांत तक एक समय में जावे। नीचे लोक रे चरमांत सु ऊँचे लोक रे चरमांत तक एक समय में जावे। ऊंचे लोक रे चरमांत सु नीचे लोक र चरमांत तक एक समय में जावे। सिद्ध उपपात गति रा २ भेद— अनन्तर सिद्धा, परम्पर सिद्धा। अनन्तरसिद्धों रा १५ भेद— तीर्थ सिद्धा जाव (एक समय में) अनेक सिद्धा। परम्परसिद्धों रा अनेक भेद— अपढम समय रा सिद्धा, दो समय रा सिद्धा जाव संख्याता असंख्याता अनन्ता समय रा सिद्धा नोभव

उपपातगति ।

अहो भगवान् ! विहायगति (आकाश में गमन करने री गति) रा कितना भेद ? हे गौतम ! विहायगति रा १७ भेद- १ फुसमाण गति, २ अफुसमाण गति, ३ उवसंपज्जमाण गति, ४ अण उवसंपज्जमाणगति, ५ पोग्गलगति, ६ मंडूक गति ७ नाव गति, ८ नयगति, ६ छायागति, १० छायानुपातगति, ११ लेश्यागति १२ लेश्यानुपातगति १३ उद्दिस्सपविभत्तगति, १४ चउपुरिस पविभत्तगति, १५ वंकगति १६ पंकगति, १७ बंधण विमोयणगति।

१ फुसमाणगति—परमाणु पुद्गल दो प्रदेशी खंध जाव दस प्रदेशी खंध, संख्यात प्रदेशीखंध, असंख्यात प्रदेशी खंध, अनन्त प्रदेशी खंध ने स्पर्श करतो थको जाय ।

२ अफुसमाणगति— परमाणु पुद्गल, दो प्रदेशी खंध जाव अनन्त प्रदेशी खंध ने अफरसतो थको जाय ।

३ उवसंपज्जमाणगति— राजा, युवराजा, ईश्वर (सामान्य राजा) तलवर (नगर रक्षक-कोटवाल) माडंबिक (गांव रो मालिक ठाकुर), कौटुम्बिक (कुटुम्ब रो स्वामी), इभ्य (इभ्य—जिणरे पास इतनो धन होवे जिससु अंबाड़ी सहित हाथी ढक जावे), सेठ (नगर सेठ) सेनापति (सेनानायक), सार्थवाह (व्यापारी समाजियों रे संघ रो मुखियो) आदि रा आश्रय अंगीकार कर इनकी इच्छानुसार चले।

४ अणुवसंपज्जमाणगति—उपरोक्त राजा आदि किसी रो भी आश्रय अंगीकार किये बिना स्वेच्छा सु विचरे ।

५ पुद्गलगति— परमाणु पुद्गल, दो प्रदेशी खंध यावत् अनन्त प्रदेशी खंध गति करे।

६ मंडूकगति— मेंढक री तरह फदक फदक करतो चाले।

७ नावागति—जैसे नाव नदी आदि रा पूर्व रा किनार सु दक्षिण रे किनारे जावे, दक्षिण रा किनारे सु पश्चिम रे किनार जावे, किसी भी दिशा में नाव पानी रे ऊपर जलपथ में गमन करे वह नावा गति कहीज।

८ नयगति—नैगम नय आदि सात नयों र अनुसार चाले।

९ छायागति—घोड़े री छाया, हाथी री छाया, मनुष्य री छाया, किन्नर री छाया, महोरग री छाया, गन्धर्व री छाया, बैल री छाया, रथ री छाया, छत्र री छाया इणां री छाया छाया में चाले।

१० छायानुपातगति—मिनख र साथे छाया जावे, छाया रे साथ मिनख नहीं जावे।

११ लेश्यागति— कृष्ण लेश्या रा द्रव्य नील लेश्या र द्रव्यपणे परिणमे, उस वर्णपणे गंधपणे, रसपणे, स्पर्शपणे परिणमे, नीललेश्या सु कापोत लेश्यापणे, कापोत लेश्या सु तेजो लेश्यापणे, तेजो लेश्या सु पद्म लेश्यापणे, पद्म लेश्या सु शुक्ल लेश्यापणे परिणम। इस तरह कह दणी।

१२ लेश्यानुपातगति—जिकी लेश्या रा पुद्गल अन्तकाल में ग्रहण कर उणी लेश्या में जाकर उपजे।

१३ उद्दिसपविभत्त गति— आचार्य, उपाध्याय, स्थविर,

प्रवर्तक, गवी, मसघर, मसापच्छेदक, इणां री आज्ञा सु विचरे ।

१४ चउपुरिस पविभत्तगति—(चार पुरुष प्रविभक्तगति)–साथे निसर्या साथ पहुंच्या साथ निसर्या विषम पहुंच्या, विषम निसर्या साथे पहुंच्या, विषम निसर्या विषम पहुंच्या ।

१५ वंकगति-इण रा ४ भेद (१) घट्टणया करतां खोडावतो खोडावतो चाले । (२) थंभणीया करतां चाले री माफक थंभतो थंभतो चाले । (३) लेसणया करतां फूमड़े री तरह चाले । (४) पवडणया करतां पड़तो पड़तो चाले ।

१६ पंकगति— कीचड़ में, कादे में, पाणी में पग सुचातो सुचातो चाले ।

१७ बंधण विमोयणगति– (बन्धन विमोचन गति)– आम अम्बाड़ा, बिजौरा, बील, कविठ, दाख, सीताफल, दाड़िम, केला अखरोटना (अखोडन), बोर, टींडसी इत्यादि रा फल पक्यां पीछे टूट कर पड़े तिणने बन्धनविमोयणगति कहीजे ।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद १७ वें उद्देशे पहिले में लेश्या रा १२४२ अलावां रा थोकड़ो चाले सो कहे छै—

आहारसमसरीरा, उस्सासे कम्मवण्ण लेस्सासु ।
समवेयण समकिरिया, समाउया चेव बोद्धव्वा ॥१॥

१ आहारद्वार, २ समशरीरद्वार, ३ श्वासोच्छ्वास द्वार, ४ कर्म द्वार, ५ वर्ण द्वार, ६ लेश्या भेद द्वार, ७ समवेदना द्वार ८ समक्रिया द्वार, ९ समायुष्य द्वार ।

१-२-३ द्वार— अहो भगवान् ! नारकी रा नेरीया सब्बे समआहारमा समशरीरा सम उस्सासनिस्सासगा ? हे गौतम ! नो इणट्टे समट्ठे । नारकी रा नेरीया २ प्रकार रा— महासरीरगा अप्पसरीरगा । महाशरीरवाला नेरीया घणा पुद्गलों रो आहार लेवे, घणा पुद्गल परिणमावे, घणा पुद्गल उच्छ्वासपणे लेवे, घणा पुद्गल निश्वासपणे लेवे । अभिक्खणं अभिक्खणं (वारंवार) आहारेइ (आहार लेवे), अभिक्खणं अभिक्खणं परिणामावेइ (परिणमाव) अभिक्खणं अभिक्खणं उस्सासेइ (उच्छ्वास लेवे), अभिक्खणं अभिक्खणं निस्सासेइ (निःश्वास लेवे), अल्प शरीरी नेरीया अल्प पुद्गलों रो आहार लेवे, अल्प पुद्गल परिणामावे, अल्प पुद्गल उच्छ्वासपणे लेवे, अल्प पुद्गल निश्वासपणे लेवे आहच्च (कदाचित्) आहारइ, आहच्च परिणमावेइ, आहच्च उस्सासेइ आहच्च निस्सासेइ ।

४-५-६ द्वार— अहो भगवान् ! सर्व नारकी रा नेरीयों रे सरीखा कर्म है, सरीखा वर्ण है, सरीखी लेश्या है ? हे गौतम ! नो इणट्टे समट्ठे, क्योंकि नेरीया दो प्रकार रा पहला उपन्या पीछे उपन्या । पहले उपन्या वे अल्पकर्मी, क्योंकि उन्होंने बहुत से कर्म भोग लिये हैं, पीछे उपन्या वे महाकर्मी क्योंकि उणांरे बहुत सा कर्म भोगना बाकी है । पहले उपन्या वे विशुद्धवण्णतरा (अच्छे

वर्णवाले हैं) पाछे उपन्या ते अविशुद्ध वणवाला (अशुभ वर्ण वाले हैं) पहले उपन्या वे विशुद्ध लेस्सी (विशुद्ध लेश्या वाले हैं), पीछे उपन्या ते अविशुद्ध लेसी (अविशुद्ध लेश्या) वाले हैं।

७ द्वार-अहो भगवान्! नारकी रा नेरीया सब सरीखी वेदना वाला है? हे गौतम! नो इणट्ठे समट्ठे, कारण कि नेरीया दो प्रकार रा है-सन्निभूया असन्निभूया। सन्निभूया तो महा वेदना वाला, असन्निभूया ते अल्पवेदना वाला है।

८ द्वार-अहो भगवान्! नारकी रा सर्व नेरीया समकिरिया है? हे गौतम! नो इणट्ठे समट्ठे, कारण कि नेरीया तीन प्रकार रा-समदृष्टि मिथ्यादृष्टि, समामिथ्यादृष्टि (मिश्रदृष्टि)। समदृष्टि रे ४ क्रिया लागे- आरम्भिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाणकिरिया। मिथ्यादृष्टि और मिश्रदृष्टि र पाँच क्रिया लागे— आरम्भिया आद मिच्छादंसणवत्तिया (मिथ्यादर्शन प्रत्यया)।

९ द्वार अहो भगवान्! नारकी रा सब नेरीया सरीखी आयु वाला है? हे गौतम! नो इणट्ठे समट्ठे, कारण कि नेरीया ४ प्रकार रा-सरीखो आउखो साथे उपन्या, सरीखो आउखो असमसाथे उपन्या, असमसरीखो आउखो साथे उपन्या, असमसरीखो आउखो असमसाथे ही उपन्या।

जिस तरह नारकी कही उसी तरह ११ दण्डक देवता रा कह देणा नवरं कर्म वर्ण लेश्या उल्टी कहसी जैसे-पहले उपन्या वे महाकर्मी क्योंकि उन्होंने शुभ कर्म भोग लिये इससे अशुभ कर्म बहुत

र गया विशेषु थोड़े काल में आउखो पूर्ण करके पृथ्वी आदि गति में उपजने वाला है, पीछे उपन्या से अल्पकर्मी । वेदना आसरी– ज्योतिषी वैमानिक में मायी मिथ्यादृष्टि अमायी समदृष्टि ये दो भेद करणा, मायी मिथ्यादृष्टि रे अल्प वेदना (साताबेदनीय री अपेक्षा) अमायी समदृष्टि रे महावेदना ।

पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय नारकी री तरह कह देणा नवरं वेदना आसरी सरीखी वेदना वाला है, असन्नी भूत है, अल्पज्ञ वेदना वेदे है । क्रिया आसरी सब मिथ्यादृष्टि है विशेषु नियमा ५ क्रिया लागे है । तियञ्च पञ्चेन्द्रिय नारकी री तरह कह देणा नवरं क्रिया आसरी ३ भेद–समदृष्टि, मिथ्यादृष्टि, मिश्रदृष्टि । सम दृष्टि रा २ भेद–संयतासंयती, असंयती । संयतासंयती रे ३ क्रिया– आरम्भिया परिग्गहिया मायावत्तिया । असंयती रे ४ क्रिया— मिथ्यात्व री क्रिया टली । मिथ्यादृष्टि, मिश्रदृष्टि रे ५ क्रिया ।

मनुष्य नारकी री तरह कह देणा नवर पटलो विशेष-आहार आसरी मनुष्य २ प्रकार रा– महाशरीरा अल्पशरीरा । जे महा शरीरा ते घणा पुद्गल आहारे, घणा पुद्गल परिणमावे, घणा पुद्गल उच्छ्वासपणे लेवे घणा पुद्गल निश्वासपणे लेवे, कदा चित् आहारे, कदाचित् परिणमावे, कदाचित् उच्छ्वास लेवे कदा चित् निश्वास लेवे । जे अल्पशरीरा ते थोड़ा पुद्गल आहार थोड़ा पुद्गल परिणमावे, थोड़ा पुद्गल उच्छ्वासपणे लेवे, थोड़ा पुद्गल निश्वासपणे लेवे, बारबार आहार, बारबार परिणमावे,

वारवार उच्छ्वास लेवे, वारवार निश्वास लेवे । क्रिया आसरी मनुष्य ३ प्रकार रा– समदृष्टि, मिथ्यादृष्टि, मिश्रदृष्टि । समदृष्टि रा ३ भेद– संजती, संजतासंजती, असंजती। संजती रा २ भेद– सराग संजती, वीतराग संजती । वीतराग संजती ते अक्रिया । सराग संजती रा २ भेद– प्रमादी, अप्रमादी । अप्रमादी रे १ मायावत्तिया क्रिया, प्रमादी र २ क्रिया–आरम्भिया, मायावत्तिया। संजतासंजती रे ३ क्रिया–आरम्भिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया। असंजती रे ४ क्रिया। मिथ्यादृष्टि, मिश्रदृष्टि रे ५ क्रिया। २४×६= २१६ सूत्र । समुच्चय रा २१६ सूत्र कथा उसी तरह सलेशी शब्द लगाय कर २१६ सूत्र और कर देणा ।

कृष्णलेशी नीललेशी कापोतलेशी २२ दंडक में २२×३= ६६×६ =३९४ सूत्र नारकी री तरह कहणा नवरं नारकी में कृष्ण लेश्या नीललेश्या में वेदना आसरी सन्नीभूत असन्नीभूत ये दो भेद नहीं करके अमायीसमदृष्टि मायीमिथ्यादृष्टि ये दो भेद करणा। मनुष्य में क्रिया आसरी समदृष्टि रा ३ भेद करणा– संजती असंजती संजतासंजती। संजती र २ क्रिया–आरम्भिया मायावत्तिया। संजतासंजती रे ३ क्रिया–आरम्भिया परिग्गहिया मायावत्तिया। असंजती रे ४ क्रिया मिथ्यात्व वर्जी ने।

तेजोलेश्या में १८ दंडक ओघिक री तरह कह देणा नवरं वेदना आसरी १५ दण्डक में मायी मिथ्यादृष्टि, अमायी समदृष्टि ये दो भेद करणा। पृथ्वी पाणी वनसपति में असन्नीभूत आसरी अल्प

६	,,	,, वनस्पतिकाय में	,,	,,	,,	४
१०	,,	,, बेइन्द्रिय में	,	,,	,,	३
११	,,	,, तेइन्द्रिय में	,,	,	,	३
१२	,,	,, चौरिन्द्रिय में	,	,,	,,	३
१३	,,	,, समुच्चय तिर्यञ्च पंचे०	,	,,	,,	६
१४	,,	,, असन्नी तिर्यञ्च पंचे०	,,	,,	,,	३
१५	,,	, गर्भज तिर्यंच पंचे०	,,	,,	,,	६
१६	,,	, गर्भजतिर्यञ्चणी में	,	,,	,,	६
१७	,,	,, समुच्चयमनुष्य में	,,	,	,,	६
१८	,,	,, सम्मूर्छिममनुष्य में	,	,,	,,	३
१९	,,	,, गर्भजमनुष्य में	,,	,,	,,	६
२०	,	,, गर्भजमनुष्यणी में	,,	,	,,	६
२१	,,	,, समुच्चय देवता में	,	,,	,,	६
२२	,,	,, समुच्चय देवी में	,,	,,	,,	४
२३	,,	,, भवनपति देव में	,,	,,	,	४
२४	,,	, भवनपति देवी में	,,	,,	,	४
२५	,,	, वाणव्यन्तर देव में	,	,	,,	४
२६	,,	, वाणव्यन्तर देवी में	,,	,,	,,	४
२७	,,	,, ज्योतिषी देव में	,,	,,	,,	१
२८	,,	,, ज्योतिषी देवी में		,,		१
२९	,,	,, वैमानिक देव में	,,	,,		२ नियमा

३० ,, ,, वैमानिक देवी में ,, ,, ,, १

१-आठ बोलों री समुच्चय री अल्पाबोध (अल्पबहुत्व)—

(१) सब सु थोड़ा शुक्ल लेशी (२) ते थकी पद्म लेशी संख्यातगुणा (३) ते थकी तेजोलेशी *असंख्यातगुणा (४) ते थकी अलेशी अनन्तगुणा (५) ते थकी कापोत लेशी अनन्तगुणा (६) ते थकी नील लेशी विशेषाहिया (७) त थकी कृष्णलेशी विशेषाहिया (८) ते थकी सलेशी विशेषाहिया।

२-तीन बोल री नारकी री अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा कृष्ण लेशी (२) ते थकी नील लेशी असंख्यातगुणा (३) ते थकी कापोत लेशी असंख्यातगुणा।

३-छह बोल री तिर्यञ्च री अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा शुक्ललेशी (२) ते थकी पद्म लेशी संख्यातगुणा (३) ते थकी तेजोलेशी संख्यात गुणा (४) ते थकी कापोत लेशी अनन्तगुणा (५) ते थकी नील लेशी विशेषाहिया (६) ते थकी कृष्ण लेशी विशेषाहिया।

४-चार बोलों री एकेन्द्रिय री अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा तेजोलेशी (२) ते थकी कापोतलेशी अनन्तगुणा (३) ते थकी नील लेशी विशेषाहिया (४) ते थकी कृष्ण लेशी विशेषाहिया।

५-चार बोलों री पृथ्वीकाय री अल्पाबोध—

* कोई कोई आचार्य असंख्यातगुणा भी कहते हैं।

(१) सब सु थोड़ा तेजो लेशी (२) ते थकी कापोत लेशी असंख्यातगुणा (३) ते थकी नील लेशी विशेषाहिया (४) ते थकी कृष्ण लेशी विशेषाहिया।

६—चार बोलों री अप्काय री अल्पाबोध पृथ्वीकाय री माफक कह देशी।

७—तीन बोलों री तेउकाय री अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा कापोत लेशी (२) ते थकी नील लेशी विशेषाहिया (३) ते थकी कृष्ण लेशी विशेषाहिया।

८—तीन बोलोंरी वायुकाय री अल्पाबोध तेउकाय री माफक कह देशी।

९—चार बोलों री बनसपति री अल्पाबोध एकेन्द्रिय री माफक कह देशी।

१०,११,१२—तीन विकलेन्द्रियों री तीन बोलों री अल्पाबोध तेउकाय माफक कह देसी।

१३ छह बोलों री समुच्चय तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय री अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा शुक्ल लेशी, (२) ते थकी पदम लेशी संख्यातगुणा, (३) ते थकी तेजो लेशी संख्यातगुणा, (४) ते थकी कापोत लेशी असंख्यातगुणा, (५) ते थकी नील लेशी विशेषाहिया (६) ते थकी कृष्ण लेशी विशेषाहिया।

१४ तीन बोलों री सम्मूर्च्छिम तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय री अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा कापोत लेशी, (२) ते थकी नील लेशी विशेषाहिया, (३) ते थकी कृष्ण लेशी विशेषाहिया।

१५—छह बोलों री गर्भज तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय री अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा शुक्ललेशी, (२) ते थकी पद्मलेशी संख्यातगुणा, (३) ते थकी तेजोलेशी संख्यातगुणा, (४) ते थकी कापोत लेशी संख्यातगुणा, (५) त थकी नीललेशी विशेषाहिया। (६) ते थकी कृष्णलेशी विशेषाहिया।

१६—छह बोलों री तिर्यञ्चणी री अल्पाबोध—गर्भज तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय री माफक कह देणी।

१७—बारह बोलों री गर्भज तिर्यञ्च तिर्यञ्चणी री अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा शुक्ललेशी तिर्यञ्च, (२) ते थकी शुक्ल लेशी तिर्यञ्चणी सख्यातगुणी (३) ते थकी पद्मलेशी तिर्यञ्च संख्यातगुणा (४) ते थकी पद्मलेशी तिर्यञ्चणी संख्यातगुणी (५) ते थकी तेजोलेशी तिर्यञ्च संख्यातगुणा, (६) ते थकी तेजोलेशी तिर्यञ्चणी सख्यातगुणी, (७) ते थकी कापोत लेशी तिर्यञ्च सख्यातगुणा, (८) ते थकी नीललेशी तिर्यञ्च विशेषा हिया, (६) ते थकी कृष्णलेशी तियञ्च विशेषाहिया, (१०) ते थकी कापोतलेशी तिर्यञ्चणी संख्यातगुणी, (११) ते थकी नीललेशी तिर्यञ्चणी विशेषाहिया, (१२) ते थकी कृष्णलेशी तिर्यञ्चणी विशेषाहिया।

१८ नव बोलों री गर्भज तिर्यञ्च और सम्मूर्च्छिम तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय री अल्प बोध—

(१) सब सु थोड़ा शुक्ललेशी ग र्भ ज तिर्यञ्च, (२) ते थकी

पद्मलेशी गर्भज तिर्यञ्च संख्यातगुणा, (३) ते थकी तेजोलेशी गर्भज तिर्यञ्च संख्यातगुणा (४) ते थकी कापोतलेशी गर्भज तिर्यञ्च संख्यातगुणा (५) ते थकी नीललेशी गर्भज तिर्यञ्च विशेषाहिया (६) ते थकी कृष्णलेशी गर्भज तिर्यञ्च विशेषाहिया (७) ते थकी कापोतलेशी सम्मूर्छिम तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय असंख्यातगुणा, (८) ते थकी नीललेशी सम्मूर्छिम तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय विशेषाहिया (९) ते थकी कृष्णलेशी सम्मूर्छिम तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय विशेषाहिया।

१९–नव बोलों री तिर्यञ्चणी और सम्मूर्छिम तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय री अल्पाबोध—अठारहवें बोल माफक कह देणी, मगर गर्भज तियञ्च री जगह तियञ्चणी कहणी।

२०–पन्द्रह बोलों री गर्भज तिर्यञ्च, तिर्यञ्चणी और सम्मूर्छिम तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय री भेली अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा शुक्ललेशी गर्भज तिर्यञ्च, (२) ते थकी शुक्ललेशी तिर्यञ्चणी संख्यातगुणी (३) ते थकी पद्मलेशी गर्भज तिर्यञ्च संख्यातगुणा, (४) ते थकी पद्मलेशी गर्भज तिर्यञ्चणी संख्यातगुणी, (५) ते थकी तेजोलेशी गर्भज तिर्यञ्च संख्यात गुणा, (६) ते थकी तेजोलेशी गर्भज तिर्यञ्चणी संख्यातगुणी, (७) ते थकी कापोतलेशी गर्भज तिर्यञ्च संख्यातगुणा, (८) ते थकी नीललेशी गर्भज तिर्यञ्च विशेषाहिया, (९) ते थकी कृष्णलेशी गर्भज तिर्यञ्च विशेषाहिया, (१०) ते थकी कापोतलेशी गर्भज

२३– छ बोलों री समुच्चय मनुष्य री अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा शुक्ललेशी मनुष्य (२) ते थकी पद्मलेशी संख्यातगुणा (३) ते थकी तेजोलेशी संख्यातगुणा (४) ते थकी कापोतलेशी असंख्यातगुणा (५) ते थकी नीललेशी विशेषाहिया (६) ते थकी कृष्णलेशी विशेषाहिया।

२४– तीन बोलों री सम्मूर्च्छिम मनुष्य री अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा कापोतलेशी (२) ते थकी नीललेशी विशेषाहिया (३) ते थकी कृष्णलेशी विशेषाहिया।

२५–छह बोलों री गर्भज मनुष्य री अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा शुक्ललेशी गर्भज मनुष्य (२) ते थकी पद्मलेशी गर्भज मनुष्य संख्यातगुणा (३) ते थकी तेजोलेशी गर्भज मनुष्य संख्यातगुणा (४) ते थकी कापोतलेशी गर्भज मनुष्य संख्यातगुणा (५) ते थकी नीललेशी गर्भज मनुष्य विशेषाहिया (६) ते थकी कृष्णलेशी गर्भज मनुष्य विशेषाहिया।

२६–छह बोलों री गर्भज मनुष्यणी री अल्पाबोध—

पच्चीसवें बोल में गर्भज मनुष्य री माफक कह देणी।

२७–बारह बोलों री गर्भज मनुष्य मनुष्यणी री भेली अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा शुक्ललेशी गर्भज मनुष्य (२) ते थकी शुक्ललेशी मनुष्यणी सख्यातगुणी (३) ते थकी पद्मलेशी गर्भज मनुष्य संख्यातगुणा (४) ते थकी पद्मलेशी मनुष्यणी संख्यात गुणी (५) ते थकी तेजोलेशी गर्भज मनुष्य संख्यातगुणा (६)

तें थकी तेजोलेशी मनुष्यणी संख्यातगुणी (७) ते थकी कापोत लेशी गर्भज मनुष्य संख्यातगुणा (८) ते थकी नीललेशी गर्भज मनुष्य विशेषाहिया (६) ते थकी कृष्णलेशी गर्भज मनुष्य विशेषाहिया (१०) ते थकी कापोतलेशी मनुष्यणी सख्यातगुणी (११) ते थकी नीललेशी मनुष्यणी विशेषाहिया (१२) ते थकी कृष्ण लेशी मनुष्यणी विशेषाहिया ।

१८–नव बोलों री गर्भज मनुष्य और सम्मूर्च्छिम मनुष्य री लेशी अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा शुक्ल लेशी गर्भज मनुष्य (२) ते थकी पद्मलेशी गर्भज मनुष्य संख्यातगुणा (३) ते थकी तेजोलेशी गर्भज मनुष्य सख्यातगुणा (४) ते थकी कापोतलेशी गर्भज मनुष्य संख्यातगुणा (५) ते थकी नीललेशी गर्भज मनुष्य विशेषाहिया (६) ते थकी कृष्णलेशी गर्भज मनुष्य विशेषाहिया (७) ते थको कापोतलेशी सम्मूर्च्छिम मनुष्य असंख्यातगुणा (८) ते थकी नील लेशी सम्मूर्च्छिम मनुष्य विशेषाहिया (९) ते थकी कृष्णलेशी सम्मूर्च्छिम मनुष्य विशेषाहिया ।

१६–नव बोलों री मनुष्यणी और सम्मूर्च्छिम मनुष्य री लेशी अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ी शुक्ललेशी मनुष्यणी, (२) ते थकी पद्मलेशी मनुष्यणी संख्यातगुणी (३) ते थकी तेजोलेशी मनुष्यणी संख्यातगुणी (४) ते थकी कापोतलेशी मनुष्यणी संख्यात

गुणी (४) ते थकी नीललेशी मनुष्यणी विशेषाहिया (६) ते थकी कृष्णलेशी मनुष्यणी विशेषाहिया (७) ते थकी कापोतलेशी सम्मूर्च्छिम मनुष्य असख्यातगुणा (८) ते थकी नीललेशी सम्मूर्च्छिम मनुष्य विशेषाहिया (९) ते थकी कृष्णलेशी सम्मूर्च्छिम मनुष्य विशेषाहिया।

२०—पन्द्रह बोलाँ री गर्भज मनुष्य, मनुष्यणी और सम्मूर्च्छिम मनुष्य तीनों री भेली अल्पाबोध—

(१) सब सु थोडा शुक्ललेशी गर्भज मनुष्य (२) ते थकी शुक्ललेशी मनुष्यणी सख्यातगुणी (३) ते थकी पद्मलेशी गर्भज मनुष्य सख्यातगुणा (४) ते थकी पद्मलेशी मनुष्यणी संख्यातगुणी (५) ते थकी तेजोलेशी गर्भज मनुष्य संख्यातगुणा (६) ते थकी तेजोलेशी मनुष्यणी संख्यातगुणी (७) ते थकी कापोतलेशी गर्भज मनुष्य संख्यातगुणा (८) ते थकी नीललेशी गर्भज मनुष्य विशेषाहिया, (९) ते थकी कृष्णलेशी गर्भज मनुष्य विशेषाहिया (१) ते थकी कापोतलेशी मनुष्यणी सख्यातगुणी (११) ते थकी नीललेशी मनुष्यणी विशेषाहिया (१२) ते थकी कृष्णलेशी मनुष्यणी विशेषाहिया (१३) ते थकी कापोतलेशी सम्मूर्च्छिम मनुष्य असंख्यातगुणा (१४) ते थकी नीललेशी सम्मूर्च्छिम मनुष्य विशेषाहिया (१५) ते थकी कृष्णलेशी सम्मूर्च्छिम मनुष्य विशेषाहिया।

२१—बारह बोलाँ री समुच्चय मनुष्य मनुष्यणी री भेली अल्पाबोध—

(१) सब सुं थोड़ा शुक्ललेशी मनुष्य, (२) ते थकी शुक्ल लेशी मनुष्यणी संख्यातगुणी, (३) ते थकी पद्मलेशी मनुष्य संख्यातगुणा, (४) ते थकी पद्मलेशी मनुष्यणी संख्यातगुणी (५) ते थकी तेजोलेशी मनुष्य संख्यातगुणा, (६) ते थकी तेजोलेशी मनुष्यणी संख्यातगुणी, (७) ते थकी कापोतलेशी मनुष्यणी संख्यातगुणी, (८) ते थकी नीललेशी मनुष्यणी विशेषाहिया, (९) ते थकी कृष्णलेशी मनुष्यणी विशेषाहिया, (१०) ते थकी कापोतलेशी मनुष्य असंख्यातगुणा, (११) ते थकी नीललेशी मनुष्य विशेषाहिया, (१२) ते थकी कृष्णलेशी मनुष्य विशेषाहिया।

३२-छह बोलों री समुच्चय देवता री अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा शुक्ललेशी देवता (२) ते थकी पद्मलेशी देवता असंख्यात गुणा (३) ते थकी कापोतलेशी देवता असंख्यातगुणा (४) ते थकी नील लेशी देवता विशेषाहिया (५) ते थकी कृष्णलेशी देवता विशेषाहिया (६) ते थकी तेजोलेशी देवता संख्यातगुणा।

३३-चार बोलों री समुच्चय देवी री अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ी कापोतलेशी देवी। (२) ते थकी नील लेशी देवी विशेषाहिया (३) ते थकी कृष्णलेशी देवी विशेषाहिया (४) ते थकी तेजोलेशी देवी संख्यातगुणी।

३४-दस बोलों री देवता और देवी री भेली अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा शुक्ललेशी देवता (२) ते थकी पद्म लेशी देवता असंख्यातगुणा (३) ते थकी कापोतलेशी देवता असंख्यातगुणा (४) ते थकी नीललेशी देवता विशेषाहिया (५) ते थकी कृष्णलेशी देवता विशेषाहिया (६) ते थकी कापोतलेशी देवी संख्यातगुणी। (७) ते थकी नीललेशी देवी विशेषाहिया (८) ते थकी कृष्णलेशी देवी विशेषाहिया (६) ते थकी तेजूलेशी देवता संख्यातगुणा (१) ते थकी तेजोलेशी देवी संख्यातगुणी।

३५—चार बोलों री भवनपति देवता री अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा तजोलेशी भवनपति देवता (२) ते थकी कापोत लेशी भवनपति असंख्यातगुणा (३) ते थकी नीललेशी भवनपति विशेषाहिया (४) ते थकी कृष्णलेशी भवनपति विशेषाहिया

३६—चार बोलों री भवनपति देवी री अल्पाबोध—

पैंतीसवें बोल भवनपति देवता माफक कह देवी।

३७—आठ बोलों री भवनपति देवता और देवी री भेलो अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा तजोलेशी भवनपति देवता (२) ते थकी तेजोलेशी भवनपति देवी संख्यातगुणी (३) ते थकी कापोत लेशी भवनपति देवता असंख्यातगुणा, (४) ते थकी नीललेशी भवनपति देवता विशेषाहिया, (५) ते थकी कृष्णलेशी भवनपति देवता विशेषाहिया, (६) ते थकी कापोतलेशी भवनपति देवी संख्यातगुणी, (७) ते थकी नीललेशी भवनपति देवी विशेषाहिया, (८) ते थकी कृष्णलेशी भवनपति देवी विशेषाहिया।

३८–३९–४०–वाणव्यन्तर देवता, वाणव्यन्तर देवी दोनों री अलग अलग और दोनों री भेली अल्पाबोध—३५ वें ३६वें और ३७वें बोल माफक कह देखी नवरं भवनपति री जगह वाणव्यन्तर बोल देखो।

४१–दो बोलों री ज्योतिषी देवता और देवी री भेली अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा तेजोलेशी ज्योतिषी देवता।

(२) ते थकी तेजोलेशी ज्योतिषी देवी सख्यात गुणी।

४२–तीन बोलों री वैमानिक देवता री अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा शुक्ललेशी वैमानिक देवता

(२) ते थकी पद्मलेशी वैमानिक देवता असंख्यातगुणा

(३) ते थकी तेजोलेशी वैमानिक देवता असंख्यातगुणा

४३–चार बोलों री वैमानिक देवता और वैमानिक देवी री भेली अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा शुक्ललेशी वैमानिक देवता

(२) ते थकी पद्मलेशी वैमानिक देवता असंख्यातगुणा

(३) ते थकी तेजोलेशी वैमानिक देवता असंख्यातगुणा

(४) ते थकी तेजोलेशी वैमानिक देवी संख्यातगुणी

४४–बारह बोलों री समुच्चय देवता री अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा शुक्ललेशी वैमानिक देवता

(२) ते थकी पद्मलेशी वैमानिक देवता असंख्यातगुणा

(३) ते थकी तेजोलेशी वैमानिक देवता असंख्यातगुणा

(४) ते थकी तेजोलेशी भवनपति देवता असंख्यातगुणा
(५) ते थकी कापोतलेशी भवनपति देवता असंख्यातगुणा
(६) ते थकी नीललेशी भवनपति देवता विशेषाहिया
(७) ते थकी कृष्णलेशी भवनपति देवता विशेषाहिया
(८) ते थकी तेजोलेशी वाणव्य-तर देवता असंख्यातगुणा
(९) ते थकी कापोतलेशी वाणव्यन्तर देवता असंख्यातगुणा
(१) ते थकी नीललेशी वाणव्यन्तर देवता विशेषाहिया
(११) ते थकी कृष्णलेशी वाणव्यन्तर देवता विशेषाहिया
(१२) ते थकी तेजोलेशी ज्योतिषी देवता संख्यात गुणा

५५–इण बोलों री समुच्चय दुबी री अल्पाबोध—

(१) सब सु थोडी तेजोलेशी वैमानिक री देवी
(२) ते थकी तेजोलेशी भवनपति री देवी असंख्यातगुणी
(३) ते थकी कापोतलेशी भवनपति री देवी असंख्यातगुणी
(४) ते थकी नीललेशी भवनपति री देवी विशेषाहिया
(५) ते थकी कृष्णलेशी भवनपति री देवी विशेषाहिया
(६) ते थकी तेजोलेशी वाणव्यन्तर री देवी असंख्यातगुणी
(७) ते थकी कापोतलेशी वाणव्यन्तर री देवी असंख्यातगुणी
(८) ते थकी नीललेशी वाणव्यन्तर री देवी विशेषाहिया
(९) ते थकी कृष्णलेशी वाणव्यन्तर री देवी विशेषाहिया
(१०) ते थकी तेजोलेशी ज्योतिषी री देवी संख्यातगुणी

५६–बारह बोलों री देवता अर देवी री भेली अल्पाबोध—

(१) सब सु थोड़ा शुक्ललेशी वैमानिक देवता
(२) ते थकी पद्मलेशी वैमानिक देवता असंख्यातगुणा
(३) ते थकी तेजोलेशी वैमानिक देवता असंख्यातगुणा
(४) ते थकी तेजोलेशी वैमानिक री देवी संख्यातगुणी
(५) ते थकी तेजोलेशी भवनपति देवता असंख्यातगुणा
(६) ते थकी तेजोलेशी भवनपति री देवी संख्यातगुणी
(७) ते थकी कापोतलेशी भवनपति देवता असंख्यातगुणा
(८) ते थकी नीललेशी भवनपति देवता विशेषाहिया
(९) ते थकी कृष्णलेशी भवनपति देवता विशेषाहिया
(१०) ते थकी कापोतलेशी भवनपति री देवी संख्यातगुणी
(११) ते थकी नीललेशी भवनपति री देवी विशेषाहिया
(१२) ते थकी कृष्णलेशी भवनपति री देवी विशेषाहिया
(१३) ते थकी तेजोलेशी वाणव्यन्तर देवता असंख्यातगुणा
(१४) ते थकी तेजोलेशी वाणव्यन्तर री देवी संख्यातगुणी
(१५) ते थकी कापोतलेशी वाणव्यन्तर देवता असंख्यातगुणा
(१६) ते थकी नीललेशी वाणव्यन्तर देवता विशेषाहिया
(१७) ते थकी कृष्णलेशी वाणव्यन्तर देवता विशेषाहिया
(१८) ते थकी कापोतलेशी वाणव्यन्तर री देवी संख्यातगुणी
(१९) ते थकी नीललेशी वाणव्यन्तर री देवी विशेषाहिया
(२०) ते थकी कृष्णलेशी वाणव्यन्तर री देवी विशेषाहिया
(२१) ते थकी तेजोलेशी ज्योतिषी देवता संख्यातगुणा

—

(२२) ते थकी तेजोलेशी ज्योतिषी री देवी संख्यातगुणी —

इसी तरह ४६ अल्पाबोल समुच्चय तीन री अल्पद्रिया महद्रिया री कह देणी जैसे-छ लेश्या री अल्पद्रिया (अल्प ऋद्धिवाला) महद्रिया (मोटी ऋद्धि वाला) ऋद्धि आसरी अल्पाबोल—

(१) सबसु अल्पद्रिया (थोड़ी ऋद्धि वाला) कृष्णलेशी (२) ते थकी नीललेशी महद्रिया (मोटी ऋद्धि वाला) (३) ते थकी कापोतलेशी महद्रिया (४) ते थकी तेजोलेशी महद्रिया (५) ते थकी पद्मलेशी महद्रिया (६) ते थकी शुक्ललेशी महद्रिया।

२—नेरीया कृष्णलेशी भाव कापोतलेशी में अल्पद्रिया महद्रिया री अल्पाबोल—

(१) सबसु अल्पद्रिया (थोड़ी ऋद्धि वाला) कृष्णलेशी नेरीया

(२) ते थकी नीललेशी नेरीया महद्रिया (मोटी ऋद्धि वाला)

(३) ते थकी कापोतलेशी नेरीया महद्रिया

इसी तरह ४६ अल्पद्रिया महद्रिया री अल्पाबोल कह देणी।

३ भलावा चौबीस दंडक में लेश्या पावे जिकेरा, ४६ भलावा लेश्या री ४६ अल्पाबोल रा, ४६ भलावा अल्पद्रिया महद्रिया रा = कुल १२२ भलावा हुआ।

सेवं भंते! सेवं भंते!!

अथ श्री पन्नवणाजी रे पद १७ वें उद्देशा ३ में लेश्या रो थाकड़ो चाले सो कहे छै—

१—अहो भगवान् ! नारकी में नेरीयो उपजे कि अनेरीयो उपजे ? हे गोतम ! नेरीयो उपजे अनेरीयो नहीं उपजे । इसी तरह आव २४ दण्डक में कह देणा । =२४

२—अहो भगवान् ! नारकी में सु नेरीयो उवटे (निकले) कि अनेरीयो उवटे ? हे गोतम ! अनेरीयो उवटे, नेरीयो नहीं उवटे । इसी तरह आव २४ दण्डक कह देणा नवरं ज्योतिषी वैमानिक में चवणो कहणो । =२४

३—अहो भगवान ! कृष्णलेशी नेरीयो कृष्णलेशी नेरीयापणे उपजे, ते नेरीयो कृष्णलेश्या लेइने निकले ? हंता गोयमा ! जिस लेश्या में उपजे उहीज लेश्या में उवटे (निकले)। इसी तरह नील लेश्या कापोत लेश्या कह देणी । जिस तरह नारकी कही इसी तरह १३ दण्डक देवता रा कह देणा, नवरं भवनपति वाणव्यन्तर में तेजोलेश्या अधिक कहणी । ज्योतिषी में सिर्फ १ तेजोलेश्या कहणी और वैमानिक में ऊपरली तीन लेश्या कहणी । ज्योतिषी वैमानिक में उवटणे री जगह चवणो कहणो । १० दण्डक ओदारिक में उपजे ये उस लेश्या सु भी निकले और अनेरी लेश्या सु भी निकले नवरं पृथ्वी पाणी वनस्पति तेजो लेश्या में उपजे पण निकले नहीं =६०

४- अहो भगवान् ! दो * कृष्णलेशी नेरीया क्या अवधिज्ञान करीने सरीखा जाणे देखे ? हे गौतम ! सम भी जाणे और विषम भी जाणे। विषम जाणे तो जिस तरह एक पुरुष सम धरती पर खड़ो देखे और एक पुरुष नीची जमीन पर खड़ो देखे तिण र देखण में फरक पड़े उसी तरह कृष्णलेशी नेरीय र देखण में फरक पड़े है। विशुद्ध लेश्या वाला री अपेक्षा अविशुद्ध लेश्या वाला थोड़ो जाणे देखे और अविशुद्ध लेश्या वाला री अपेक्षा विशुद्ध लेश्या वालो किंचित् अधिक जाणे देखे। अहो भगवान् ! एक कृष्णलेशी नेरीयो एक नीललेशी नेरीयो क्या अवधिज्ञान करीने सरीखा जाणे देखे ? हे गौतम ! कृष्णलेशी नेरीये सूं नीललेशी ज्यादा जाणे देखे। जिस तरह सूं एक पुरुष समधरती पर खड़ो देखे और एक पुरुष पहाड़ पर खड़ो देखे तिणेर देखण में फरक पड़े उसी तरह कृष्णलेशी नीललेशी नेरीये रे देखण में फरक पड़े है। कृष्णलेशी कम देखे नीललेशी ज्यादा देखे।

दो नीललेशी नेरीया अवधिज्ञान करीने सम भी जाणे और

---

* सातवीं नरक वाला जघन्य आधा कोस उत्कृष्ट एक कोस छठी नरक वाला जघन्य एक कोस उत्कृष्ट डेढ़ कोस पांचवीं नरक वाला जघन्य डेढ़ कोस उत्कृष्ट दो कोस चौथी नरक वाला जघन्य दो कोस, उत्कृष्ट अढ़ाई कोस तीसरी नरक वाला जघन्य अढ़ाई कोस उत्कृष्ट तीन कोस दूसरी नरक वाला जघन्य तीन कोस उत्कृष्ट साढ़े तीन कोस पहली नरक वाला जघन्य साढ़े तीन कोस उत्कृष्ट चार कोस तक अवधिज्ञान सूं जाणे देखे है।

विषम भी भागे भाव दो कृष्णलेशी री तरह कह देणा नवरं एक पुरुष पर्वत पर खड़ो देखे और एक पुरुष पर्वत पर पग ऊंचा करके खड़ो देखे ।

एक नीललेशी नेरीयो एक कापोतलेशी नेरीयो इसी तरह दो नील लेशी री तरह कह देणा नवरं एक नीललेशी पर्वत पर खड़ो देखे और एक कापोतलेशी पर्वत पर दरखत ऊपर चढ़ कर खड़ो देखे =३ ।

४—अहो भगवान् ! समुच्चय लेश्या में कितना ज्ञान हुवे ? हे गौतम् ! २ हुवे ३ हुवे ४ हुवे १ (केवलज्ञान) हुवे । अहो भगवान् ! कृष्णलेश्या में कितना ज्ञान हुवे ? हे गौतम ! २ हुवे (मतिज्ञान श्रुतज्ञान,) ३ हुवे (मतिज्ञान श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान या मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, मन पर्यव ज्ञान), ४ हुवे (मतिज्ञान श्रुतज्ञान, अवधि ज्ञान मनःपर्यव ज्ञान) इसी तरह भाव पद्म लेश्या तक कह देणो । शुक्ललेश्या में २ हुवे, ३ हुवे, ४ हुवे, १ (केवलज्ञान) हुवे =३० ।

सर्व मिला कर १७१ अलावा हुवा

१ पहला प्रश्न रा २४ अलावा (उपमरणे रा) ।
२ दूसरा प्रश्न रा २४ अलावा (उपटणे रा) ।
३ तीसरा प्रश्न रा ६० अलावा *

* तीसरा प्रश्न में नारकी रा १ दश भवनपति रा ४० वाणव्यन्तर रा ४, ज्योतिषी रो १ वैमानिक रा ३, पृथ्वी रा ४ पाणी रा ४ वनस्पति रा ४ तेउ रा ३, वायु रा ३ तीन विकलेन्द्रिय रा ३, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय रा ६, मनुष्य रा ६ = कुल ये ६० अलावा हुवा ।

न चौथा प्रश्न रा ३ (तीन लेश्या री अपेक्षा)
१ पांचवां प्रश्न रा ३ असाता (६ लेश्या में ४ ज्ञान आवती)

कुल १७१ असाता हुआ।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी र पद १७ वें र चौथे उद्देशे में लेश्या परिणाम रो थोकड़ा चाले सो कहे छे—

परिणाम वण्ण रसगंध, सुद्ध अपसत्थ संकिलिट्ठुण्हा ।
गइ परिणाम पएसोगाढ़, वग्गण ठाणाणं मप्पबहु ॥ १ ॥

१ परिणामद्वार, २ वर्ण द्वार, ३ रसद्वार, ४ गन्धद्वार, ५ शुद्ध द्वार, ६ अप्रशस्त द्वार, ७ संक्लिष्ट द्वार, ८ उष्णद्वार, ९ गति द्वार, १० परिणाम द्वार ११ प्रदेश द्वार, १२ अवगाहना द्वार, १३ वर्गणा द्वार, १४ स्थान द्वार, १५ अल्पबहुत्व द्वार।

१—(अ) अहो भगवान् ! कृष्ण लेश्या रा द्रव्य नीललेश्या रा द्रव्यपणे परिणमे ? या रूपपणे, वर्णपणे, गन्धपणे, रसपणे, स्पर्शपणे वारम्वार परिणमे ? हे गौतम ! कृष्ण लेश्या रा द्रव्य नील लेश्या रे द्रव्यपणे, रूपपणे वर्णपणे, गन्धपणे रसपणे, स्पर्शपणे वारम्वार परिणमे है। अहो भगवान् ! कांई कारण से ? हे गौतम ! यथा दृष्टान्त—जैसे दूध में छाछ को संयोग मिलाया सु वह अपणो मीठो स्वाद छोड़ कर खट्टो

रंग जावे है तथा सफेद वस्त्र ने मंजीठादि रंग में डालवा सु अपणो सफेद रंग छोड़ कर उसी रंग में रंग जावे है। इसी तरह सु कृष्ण लेश्या द्रव्य नील लेश्या रा द्रव्यपणे परिणमे है। ऐसे ही मनुष्य और तिर्यञ्च में परिणाम पलटे है। इसी तरह छह लेश्या में कह देणा। कृष्णलेश्या नीललेश्यापणे, नीललेश्या कापोतलेश्यापणे, कापोतलेश्या तेजोलेश्यापणे, तेजोलेश्या पद्मलेश्यापणे, पद्मलेश्या शुक्ललेश्यापणे परिणमे।

(प्र) अहो भगवान्! कृष्णलेश्या नीललेश्यापणे कापोतलेश्यापणे तेजोलेश्यापणे पद्मलेश्यापणे शुक्ललेश्यापणे तारूवत्ताए (तद् रूपपणे) वण्णत्ताए गन्धत्ताए रसत्ताए स्पर्शत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमति? हंता गोयमा! तारूवत्ताए जाव भुज्जो भुज्जो परिणमंति। अहो भगवान्! कांई कारण छे? हे गौतम! यथा दृष्टान्त — जैसे वैडूर्यमणि (काच री मणि) में काला रंग रो डोरो डालणे सु काली वर्ण, नीला वर्ण रो डोरो डालने सु नीलो वर्ण, राता वर्ण रो डोरो डालने सु रातो वर्ण, पीलो डोरो डालने सु पीलो वर्ण दिखाई देवे है परन्तु उण डोरा ने अलग कर लेवा सु वह अपना रंग में आजावे है। इसी तरह छह लेश्या में कह देणा।

अहो भगवान्! कृष्णलेश्या रो वर्ण कैसो? हे गौतम! कालो, जैसे पानी सु भरया बादल, अञ्जन, खंजन, भंवरो, हाथी रो बच्चो, अशोक वृक्ष इत्यादि सु अधिक अनिष्टकारी अकान्तकारी अप्रिय कारी अमनोज्ञ अमणाम अमुहावनो वर्ण कह्यो।

नीललेश्या रो नीलो वर्ण जैसे मृग, मृग री पांख, चास पक्षी, तोता, श्यामा (प्रियगु लता), कबूतर री ग्रीवा, मोर री ग्रीवा बलभद्रजी रा वस्त्र, नीलोत्पल कमल इत्यादि सु अधिको अनिष्टकारी अकान्तकारी याव अमुहावनो वर्ण कयो।

कापोतलेश्या रा बैंगणी वर्ण– यथा दृष्टान्त खैर, खैरसार, कैर कैरसार धमासामार, बैंगणी रंग रा रेशमी वस्त्र, ताम्बा, ताम्बे रा वर्तन, बैंगण रा फूल, कोकिलच्छद तैल कंटक फूल, जंवासा रा फूल इत्यादि सु अधिको अनिष्टकारी याव असुहावणो वर्ण कयो।

तेजोलेश्या रो लाल वर्ण–यथा दृष्टान्त शश (खरगोश) रो रुधिर, बकरे रो रुधिर, मनुष्य रो रुधिर, ममोलियो, ऊगतो सूरज, किरमी रो आधो भाग जातिवन्त हिंगलू प्रवाल री कुपल, लाल रो रस, लोहिताक्ष मणि, हाथी का तालुआ, पारिजात रा फुल, केसुडे रा फुल, रक्तोत्पल कमल रक्ताशोक वृक्ष, लाल कनेर, इत्यादि सु अधिक इष्टकारी, प्रियकारी यावत् मनोज्ञ कयो।

पद्मलेश्या री पीलो वर्ण-यथा दृष्टान्त चम्पक वृक्ष, चम्पा की छाल हल्दी हरिताल चिकुर (पेवड़ी), सोने री सीप, वासुदेव रा वस्त्र, चम्पा रा फूल, कोरंटा रा फुल, कोरंट रा फूलों री माला, पीला अशोक, पीला कनेर सु अधिक इष्टकारी यावत् मनोज्ञ कयो।

शुक्ललेश्या रा सफेद वर्ण यथा दृष्टान्त–अंकरत्न, शंख, चन्द्रमा, कुन्द (मोगर) रा फूल पाणी दही, दूध, दूधरादिक री भरी फली, अग्नि में तपा कर खटाई से धोया रूपा रा पाट,

शरद ऋतु रा बादल, मगुला, पुण्डरीक कमल रा दल, चावल रो भातो, श्वेत अशोक वृक्ष, श्वेत कनेर इत्यादि सु अधिक इष्ट कारी, कान्तकारी, प्रियकारी, मनोज्ञ, मणाम सुहावणो कयो ।

अहो भगवान् ! छह लेश्या किण किण वर्णमय है ? हे गौतम ! पांचों ही वर्णमय है, जैसे — १ कृष्ण लेश्या कृष्ण वर्णमयी है, २ नीललेश्या नील वर्णमयी है, ३ कापोतलेश्या काले और लाल दोनों वर्णमयी है, ४ तेजोलेश्या लाल वर्णमयी है, ५ पद्मलेश्या पीले वर्णमयी है, ६ शुक्ललेश्या श्वेत वर्णमयी है ।

(३) रस द्वार -- अहो भगवान्! कृष्णलेश्या रो किसो आस्वादन रस कयो है ? हे गौतम ! कृष्ण लेश्या रो कड़वो रस-यथा दृष्टान्त नीम नीमसार, नीम की छाल नीम का काढ़ा, कुटक, कुटक की छाल, कुटक का काढ़ा, कुटक तुम्बी रा फल, दखदाली (रोहिणी), कड़वी तोरू, वत्सकन्द इत्यादि सु बहुत अधिक अनिष्टकारी यावत् अम णाम कयो। नीललेश्या रो तीखो रस यथा दृष्टान्त- भुंगी, भंगीरज पित्रवेल रा मूल, पिपली का मूल, पिपल, पिपली का चूर्ण, मिर्च अदरख इत्यादि सु अधिक अनिष्टकारा यावत् अमनोज्ञ कयो ।

कापोतलेश्या रो कषायलो रस, यथा दृष्टान्त—कच्चा आम, कच्चा अम्बाड़ा, कच्चा बिजोरा, कच्चा बील फल, कच्चा कबीठ, कच्ची दाख, कच्ची दाड़म, कच्चा बोर, कच्चा अखरोट फल इत्यादि सु अधिक अनिष्टकारी यावत् अमनोज्ञ कयो ।

तेजो लेश्या रो खट्टमीठो रस यथा दृष्टान्त—पक्को आम, पक्का

टीम्म् फल, इत्यादि सु अधिक इष्टकारी यावत् मनोज्ञ रस कयो।

पद्मलेश्या रो मीठो रस यथा दृष्टान्त–चन्द्रप्रभा मदिरा,मणि शिखा मदिरा, प्रधान सिधु मदिरा, प्रधान माध्वी, पत्रासव मदिरा पुष्पासव, फलासव, मधु खजूर का रस, दाख का रस, पका इख रस, इत्यादि सु अधिक इष्टकारी यावत् मनोज्ञ कयो।

शुक्ललेश्या रो विशेष मीठो रस यथा दृष्टान्त—गुड़, शक्कर, बूरा, मिश्री, मावड़ा मिठाई, सिद्धार्थ मिठाई इत्यादि सु अधिक इष्टकारी यावत् मनोज्ञ रस कयो।

(४) गन्धद्वार – अहो भगवान्! कितनी लेश्या दुरभिगन्ध वाली कही है? हे गौतम! कृष्ण नील, कापोत ये तीन लेश्या दुरभिगन्ध वाली कही है। गाय रो मृतक शरीर, कुत्ता रो मृतक शरीर, सर्प रो मृतक शरीर इण सु भी अनन्त गुणी दुर्गन्ध इण तीन अप्रशस्त लेश्याओं री है। अहो भगवान्! कितनी लेश्या सुरभि गन्ध वाली कही है? हे गौतम! तेजो, पद्म, शुक्ल ये तीन लेश्या सुरभिगन्ध वाली कही है। केवड़ा आदि फूलों री सुगन्ध, पिसता हुआ पिसों गे सुगन्ध सु अनन्त गुणी सुगन्ध इण तीन प्रशस्त लेश्याओं री होवे।

(५) शुद्ध द्वार – पहलकी ३ लेश्या (कृष्ण, नील, कापोत) अविशुद्ध है, पिछली ३ लेश्या (तेजो पद्म, शुक्ल) विशुद्ध है।

(६) अप्रशस्त द्वार – पहलकी तीन लेश्या अप्रशस्त है, पिछली तीन लेश्या प्रशस्त है।

(७) संक्लिष्ट द्वार – पहलड़ी तीन लेश्या संक्लिष्ट है, पिछली तीन लेश्या असंक्लिष्ट है।

(८) लुक्ख द्वार – पहलड़ी तीन लेश्या शीत लुख है, पिछली तीन लेश्या लुक्ख निद्ध है।

(९) गतिद्वार – पहलड़ो तीनलेश्या दुर्गतिदाता है, पिछली तीन लेश्या सद्गतिदाता है।

(१०) परिणाम द्वार – कृष्ण लेश्या रा तीन प्रकार रा परिणाम है – जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट। इन तीनों रा तीन-तीन भेद करने सु नौ भेद होवे है – जघन्य रा जघन्य, जघन्य रा मध्यम, जघन्य रा उत्कृष्ट। ऐसे ही मध्यम रा तीन भेद, ऐसे ही उत्कृष्ट रा तीन भेद, यों नौ भेद हुए। नौ ने तीन से गुणा करने सु २७ भेद हुवे है। २७ ने ३ सु गुणा करने सु ८१। ८१ ने ३ सु गुणा करने सु २४३ भेद हुवे हैं। इस तरह बहुत तरह रा परिणाम कया है। इसी तरह छह लेश्या रा परिणाम कह देना।

(११) प्रदेशद्वार – कृष्ण लेश्या रा अनन्त प्रदेश हैं। इस तरह ही छह लेश्या कह देवी।

(१२) अवगाहना द्वार – कृष्णलेश्या असख्यात आकाश प्रदेश ओगाया। इस तरह ही छह लेश्या कह देवी।

(१३) वर्गणाद्वार – एक एक लेश्या र अनन्ती अनन्ती वर्गणा है।

(१४) स्थानद्वार – एक एक लेश्या रे असंख्याता असंख्यात

स्थान है। असंखपाता किया ? काल से असंखपाती अवसर्पिणी असंख्याती उत्सर्पिणी रा समय जिता। क्षेत्र से असंख्यात लोकाकाश रे प्रदेश जिता। अशुभ लेश्या रा संक्लिष्ट स्थान है, शुभ लेश्या रा असंक्लिष्ट स्थान है। स्थान किण ने कहीज ? जिण तरह स्फटिक मणि ने अलता रा रंग सु रंगण सु थोड़ो लो लेप चढ़, दूसरी बार रंगण सु अधिक लेप चढ़ एसे स्थान जानना परिणामों री धारा ज्यों ज्यों चढ़ उतरे त्यों त्यों स्थान रो पलटो होवे।

(१५) अल्पाबोध द्वार – द्रव्य आसरी, प्रदेश आसरी और द्रव्य प्रदेश भेला आसरी, छः लेश्या में कुण थोड़ा और कुण घणा ? (१) सब सु थोड़ा कापोत लेश्या रा जघन्य स्थान द्रव्य ठ्ठपाए, (२) ते थकी नील लेश्या रा जघन्य स्थान द्रव्यठ्ठपाए (द्रव्य सु) असंख्यात गुणा (३) ते थकी कृष्ण लेश्या रा जघन्य स्थान द्रव्यठ्ठपाए असंख्यात गुणा, (४) ते थकी तेजोलेश्या रा जघन्य स्थान द्रव्यठ्ठपाए असंख्यात गुणा (५) ते थकी पद्म लेश्या रा जघन्य स्थान द्रव्यठ्ठपाए असंखपात गुणा, (६) ते थकी शुक्ल लेश्या रा जघन्य स्थान द्रव्यठ्ठपाए असंख्यात गुणा।

द्रव्यठ्ठया री कही इसी तरह छः लेश्या में जघन्य पएसठ्ठया री अल्पाबोध कह देणी।

छः लेश्या में जघन्य द्रव्यठ्ठपाए पएसठ्ठयाए री भेली अल्पाबोध — (१) सब सु थोड़ा कापोत लेश्या रा जघन्य स्थान द्रव्यठ्ठपाए, (२) ते थकी नील लेश्या रा जघन्य स्थान द्रव्यठ्ठपाए

असंख्यातगुणा, (३) ते थकी कृष्णलेश्या रा जघन्य स्थान दव्वट्ठ पाए असंख्यातगुणा, (४) ते थकी तेजोलेश्या रा जघन्य स्थान दव्वट्ठपाए असंख्यातगुणा, (५) तेथकी पद्मलेश्या रा जघन्य स्थान दव्वट्ठपाए असंख्यातगुणा, (६) तेथकी शुक्ललेश्या रा जघन्य स्थान दव्वट्ठपाए असंख्यातगुणा, (७) ते थकी कापोतलेश्या रा जघन्य स्थान पएसट्ठयाए असंख्यातगुणा, (८) ते थकी नील लेश्या रा जघन्य स्थान पएसट्ठयाए असंख्यातगुणा, (६) ते थकी कृष्णलेश्या रा जघन्य स्थान पएसट्ठयाए असंख्यातगुणा, (१०) ते थकी तेजो लेश्या रा जघन्य स्थान पएसट्ठयाए असंख्यातगुणा, (११) ते थकी पद्मलेश्या रा जघन्य स्थान पएसट्ठयाए असंख्यात गुणा, (१२) ते थकी शुक्ललेश्या रा जघन्य स्थान पएसट्ठयाए असंख्यात गुणा।

इसी तरह तीन अल्पाबोध उत्कृष्ट दव्वट्ठयाए, पएसट्ठयाए, और दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए री जेन्नी कह देणी नवरं जघन्य री जगह उत्कृष्ट कह दणो।

छह लेश्या में जघन्य उत्कृष्ट ठिकाणा री दव्वट्ठयाए री अल्पाबोध–(१) सब सु थोड़ा कापोतलेश्या रा जघन्य स्थान दव्व ट्ठयाए, (२) ते थकी नीललेश्या रा जघन्य स्थान दव्वट्ठयाए असंख्यात गुणा, (३) ते थकी कृष्णलेश्या रा जघन्य स्थान दव्व ट्ठयाए असंख्यात गुणा, (४) ते थकी तेजोलेश्या रा जघन्य स्थान दव्वट्ठयाए असंख्यात गुणा, (५) ते थकी पद्मलेश्या रा जघन्य स्थान दव्वट्ठयाए असंख्यात गुणा, (६) ते थकी शुक्ललेश्या रा जघन्य

स्थान दब्बट्ठयाए असंख्यात गुणा, (७) ते थकी कापोत लेश्या रा उत्कृष्ट स्थान दब्बट्ठयाए असंख्यात गुणा, (८) ते थकी नीललेश्या रा उत्कृष्ट स्थान दब्बट्ठयाए असंख्यात गुणा, (६) ते थकी कृष्ण लेश्या रा उत्कृष्ट स्थान दब्बट्ठयाए असंख्यात गुणा, (१०) ते थकी तेजोलेश्या रा उत्कृष्ट स्थान दब्बट्ठयाए असंख्यात गुणा, (११) ते थकी पद्मलेश्या रा उत्कृष्ट स्थान दब्बट्ठयाए असंख्यात गुणा (१२) ते थकी शुक्ललेश्या रा उत्कृष्ट स्थान दब्बट्ठयाए असंख्यातगुणा।

दब्बट्ठयाए री अल्पाबोध कही इसी तरह जघन्य उत्कृष्ट स्थान री पएसट्ठयाए री अल्पाबोध कह देणी मगर दब्बट्ठयाए री जगह पएसट्ठयाए कहणा।

छह लेश्या में जघन्य उत्कृष्ट स्थान दब्बट्ठयाए पएसट्ठयाए री भेळी अल्पाबोध —

(१) सब सूं थोड़ा कापोतलेश्या रा जघन्य स्थान दब्बट्ठयाए, (२) ते थकी नील लेश्या रा जघन्य स्थान दब्बट्ठयाए असंख्यात गुणा, (३) ते थकी कृष्णलेश्या रा जघन्य स्थान दब्बट्ठयाए असंख्यात गुणा, (४) ते थकी तेजोलेश्या रा जघन्य स्थान दब्बट्ठयाए असंख्यात गुणा, (५) ते थकी पद्मलेश्या रा जघन्य स्थान दब्बट्ठयाए असंख्यात गुणा, (६) ते थकी शुक्ल लेश्या रा जघन्य स्थान दब्बट्ठयाए असंख्यात गुणा, (७) ते थकी कापोतलेश्या रा उत्कृष्ट स्थान दब्बट्ठयाए असंख्यात गुणा, (८) ते थकी नीललेश्या रा उत्कृष्ट स्थान दब्बट्ठयाए असंख्यात गुणा, (६) ते थकी कृष्णलेश्या रा उत्कृष्ट स्थान दब्बट्ठयाए असंख्यात गुणा,

(१०) ते थकी तेजो लेश्या रा उत्कृष्ट स्थान दव्वट्ठयाए असंख्यात गुणा, (११) ते थकी पद्मलेश्या रा उत्कृष्ट स्थान दव्वट्ठयाए असंख्यातगुणा, (१२) ते थकी शुक्ल लेश्या रा उत्कृष्ट स्थान दव्वट्ठयाए असंख्यातगुणा (१३) ते थकी कापोत लेश्या रा जघन्य स्थान पएसट्ठयाए अनन्तगुणा, (१४) ते थकी नील लेश्या रा जघन्य स्थान पएसट्ठयाए असंख्यातगुणा, (१५) ते थकी कृष्णलेश्या रा जघन्य स्थान पएसट्ठयाए असंख्यातगुणा, (१६) ते थकी तेजो लेश्या रा जघन्य स्थान पएसट्ठयाए असंख्यातगुणा, (१७) ते थकी पद्मलेश्या रा जघन्य स्थान पएसट्ठयाए असंख्यातगुणा, (१८) ते थकी शुक्ल लेश्या रा जघन्य स्थान पएसट्ठयाए असंख्यातगुणा, (१९) ते थकी कापोत लेश्या रा उत्कृष्ट स्थान पएसट्ठयाए असंख्यातगुणा, (२०) ते थकी नील लेश्या रा उत्कृष्ट स्थान पएसट्ठयाए असंख्यातगुणा, (२१) ते थकी कृष्ण लेश्या रा उत्कृष्ट स्थान पएसट्ठयाए असंख्यातगुणा, (२२) ते थकी तेजो लेश्या रा उत्कृष्ट स्थान पएसट्ठयाए असंख्यातगुणा, (२३) ते थकी पद्म लेश्या रा उत्कृष्ट स्थान पएसट्ठयाए असंख्यातगुणा, (२४) ते थकी शुक्ल लेश्या रा उत्कृष्ट स्थान पएसट्ठयाए असंख्यातगुणा।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

६

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद १७ वें रो पाचवों उद्देशो–

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद १७ वें र चौथे उद्देशा में १ परिणाम द्वार में (भ, ग) कह्यो उसी तरह कह देणो मात्र वैडूर्य मणि रो दृष्टान्त कह्यो बठा तक कह देणो (दिखाई देवे है उठे तक कहणो, आगे नहीं कहणो)। (प्र)—अहो भगवान्! कृष्ण लेश्या नीललेश्या-पणे तारूपपाए वर्णपाए गंधपाए रसपाए स्पर्शपाए भुज्जो भुज्जो नहीं परिणमंति? हंता गोयमा! अहो भगवान्! कांई कारण से? हे गौतम! लेश्या आकारमात्र है परन्तु कृष्णलेश्या नीललेश्यापणे परणमे नहीं जिस तरह काच में मनुष्य रो प्रतिबिम्ब दिखाई देवे है उस रो आकार मात्र दिखाई देवे है। इसी तरह लेश्या रो आकार मात्र दिखाई देवे है परन्तु एक लेश्या दूसरी लेश्यापणे नहीं परणमे है। इसी तरह सब लेश्यापणे लोम विलोम कह देणा, ३६ भागा कह देणा ६×६=३६। ऊपर *पलटणो कह्यो है वह मनुष्य तिर्यञ्च आसरी कह्यो है और अठे नहीं पलटणो कह्यो है वह नरक देवता आसरी कह्यो है।

सेवं भंते! सेवं भंते!!

---

*मनुष्य तिर्यञ्च में द्रव्य लेश्या भाव लेश्या दोनों रो पलटो होवे है और नारकी देवता में द्रव्य लेश्या रो पलटो तो नहीं होवे है परन्तु भाव लेश्या रो पलटो होणो संभव है क्योंकि सातवीं नरक में मिथ्या-त्वी जावे है वठे जायां रे बाद समकित री प्राप्ति करे है इण सूं भाव लेश्या रो पलटो होणे रो सम्भव है।

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद १७ वें रो छठो उद्देशो—

समुच्चय जीव में लेश्या पावे ६, मनुष्य में लेश्या पावे ६, मनुष्यणी में लेश्या पावे ६, कर्म भूमि मनुष्य में लेश्या पावे ६, कर्म भूमि मनुष्यणी में लेश्या पावे ६। भरत इरवर्त रा मनुष्य में लेश्या पावे ६, भरत इरवर्त री मनुष्यणी में लेश्या पावे ६, पूर्व पश्चिम महाविदेह क्षेत्र रा मनुष्य में लेश्या पावे ६, पूर्व पश्चिम महा विदेह क्षेत्र री मनुष्यणी में लेश्या पावे ६, अकर्म भूमि मनुष्य में लेश्या पावे ४, अकर्म भूमि मनुष्यणी में लेश्या पावे ४, छप्पन अन्तर द्वीपा रा मनुष्य में लेश्या पावे ४, छप्पन अन्तर द्वीपारी मनुष्यणी में लेश्या पावे ४। हेमवय हिरण्णवय, हरिवास रम्यकवास, देवकुरु उत्तरकुरु रा मनुष्य मनुष्यणी में लेश्या पावे ४ ४। इसी तरह पूर्व पश्चिम धातकी खण्ड में, पुष्करवर द्वीप में सब बोलों में ऊपर मुजब लेश्या कह देणी। १६+३८+३८=६४ अलावा.

अहो भगवान्! कृष्ण लेश्या वालो मनुष्य कृष्ण लेश्या वाला गर्भ ने उपजावे (उत्पन्न करे)? हंता गोयमा! उपजावे (उत्पन्न करे)। इसी तरह कृष्ण नील, कृष्ण कापोत जाव शुक्ल लेश्या तक कह देणी। इसी तरह छह लेश्या लोम विलोम कह देणी—६×६=३६ अलावा हुआ। जिस तरह ३६ अलावा मनुष्य रा कया उसी तरह ३६ अलावा मनुष्यणी रा कह दणा— ६×६=३६। इस तरह ही मनुष्य मनुष्यणी मेली रा ३६ अलावा कह देणा ६×६=३६। इस तरह ही कर्म भूमि मनुष्य से, मनुष्यणी से, मनुष्य मनुष्यणी मेली

वे ३६-३६ अलावा के हिसाब से १०८ अलावा का देखा=१०८।

अकर्म भूमि मनुष्य रा १६ अलावा का देखा-४×४=१६। अकर्म भूमि मनुष्यणी रा १६ अलावा का दखा ४×४=१६। अकर्म भूमि मनुष्य मनुष्यणी रा मेला १६ अलावा का दखा ४×४=१६। अकर्म भूमि रा ४८ अलावा कपा जिम तरह रा छप्पन अंतरद्वीपा रा ४८ अलावा अकर्म भूमि मनुष्य माफक का दखा= ४८। जम्बूद्वीप रा १६, धातकीखंड रा २८, अर्द्ध पुष्कर द्वीप रा २८, समुच्चय मनुष्य रा १०८, कर्म भूमि मनुष्य रा १०८, अकर्म भूमि मनुष्य रा ४८, छप्पन अन्तरद्वीपा रा ४८, सर्व मिला का ४०७ अलावा हुआ।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

नोट— कोई कोई ११ अलावा भी कहते हैं— समुच्चय मनुष्य, मनुष्य मनुष्यणी रा १०८, समुच्चय कर्मभूमि कर्मभूमि मनुष्य, कर्मभूमि मनुष्यणी रा १०८, पांच भरत पांच इरवते पांच महाविदेह १५×१ ८=१११ समुच्चय अकर्म भूमि अकर्म भूमि मनुष्य, अकर्म भूमि मनुष्यणी रा ४८, तीस अकर्म भूमि रा ३०×४८=१४४०। समुच्चय अन्तरद्वीप अन्तरद्वीप रा मनुष्य अन्तरद्वीप री मनुष्यणी=४८। समुच्चय ५६ अंतरद्वीप ५६ अंतरद्वीप रा मनुष्य ५६ अंतरद्वीप री मनुष्यणी ५६×४८ २६८८, सर्व १ ८+१०८+११२०=१८३६ कर्म भूमि रा ४८+१४४०+४८+२६८८=४२२४ अकर्म भूमि रा, सर्व मिलाकर १८३६+ ४२२४=६ ६ अलावा हुआ।

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद १८ वें में कायस्थिति रो थोकड़ो चाले सो कहे छे–

जीव गइ इंदिय काए, जोए वेए कसाय लेसा य ।
सम्मत्त णाण दंसण, संजय उवओग आहार ॥१॥
भासग परित्त पज्जत्त, सुहुम सण्णी भव अत्थि चरिमे य ।
एएसिं तु पयाणं, कायठिई होई णायव्वा ॥२॥

१– समुच्चय जीव री कायस्थिति सम्वद्धा (सर्वकाल री), मान्तरो नत्थि ।

२– नारकी देवता री कायस्थिति जघन्य १०००० दस हजार वर्ष री, उत्कृष्ट ३३ सागरोपम री । देवी री कायस्थिति जघन्य १०००० दस हजार वर्ष री, उत्कृष्ट ५५ पल री । मनुष्य, मनुष्यणी और तिर्यञ्चणी री कायस्थिति जघन्य अन्तमुहूर्त री उत्कृष्ट ३ पल प्रत्येक क्रोड़ पूर्व अधिक । तिर्यञ्च री जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट अनन्तो काल (अनन्ती अवसर्पिणी अनन्ती उत्सर्पिणी । क्षेत्र थकी अनन्ता लोक असंख्याता पुद्गल परावर्तन ते पण आवलिका रे असंख्यातवें भाग समय हुवे उतना (सिद्ध भगवान था में मांगो पावे १ सादिया अपज्जवसिया (आदि तो है पण अन्त नहीं) । सिद्ध भगवान् मर्जी ने ७ बोलों रा अपर्याप्तों री कायस्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त री । नारकी देवता रा पर्याप्तों री कायस्थिति जघन्य १०००० दस हजार वर्ष अन्तमुहूर्त ऊणी, उत्कृष्ट ३३ सागर अन्तर्मुहूर्त ऊणी । मनुष्य मनुष्यणी, तिर्यञ्च तिर्यञ्चणी ने ४

पांचों रा पर्जापतों री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्थी उत्कृष्ट ३ पल्योपम अन्तर्मुहूर्त ऊणो। स्त्री रा पर्जापतों री कायस्थिति जघन्य १०००१ वर्ष अन्तर्मुहूर्त ऊणा, उत्कृष्ट ५५ पल्योपम अन्तर्मुहूर्त ऊणो।

आंतरो— सिद्ध भगवान् रो आंतरो नथी। नारकी, तिर्यञ्चणी, मनुष्य, मनुष्यणी, देवी, देवता, ए ६ समुच्चय, इस ६ रा पर्जापता, तिर्यञ्चणी, मनुष्य, मनुष्यणी, ए ३ रा अपर्जापता ए १५ बोलों रो आंतरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट अनन्तो काल। अनन्ती अवसर्पिणी अनन्ती उत्सर्पिणी अनन्ता लोक असंख्याता पुद्गल परावर्तन ते पिण आवलिका रे असंख्यातवें भाग समय हुवे इतना। नारकी, देवता, स्त्री ए तीनों रा अपर्जापतों रो आंतरो जघन्य १०००० वर्ष अन्तर्मुहूर्त अधिक, उत्कृष्ट अनन्तो काल जाव वनस्पति काल इस देखो। बाकी तीन बोल समुच्चय तिर्यञ्च, तिर्यञ्च रा पर्जापता, अपर्जापता रो आंतरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो उत्कृष्टो प्रत्येक सौ सागरोपम झाझेरो।

२— सइन्द्रिया रा दो भेद— अणाइया अपज्जवसिया, अणाइया सपज्जवसिया। एकेन्द्रिय री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट अनन्तो काल जाव वनस्पति काल इस देखो। तीन विकलेन्द्रिय री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट संख्याता काल री। पञ्चेन्द्रिय री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट एक हजार सागर झाझेरी। अणिंदिया में भांगो पावे १ साइया अपज्जवसिया। अणिंदिया वर्जी ने ६ बोलों रे अपर्जापतों री कायस्थिति जघ...

उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त री। सइन्द्रिय पंचेन्द्रिय रे पर्याप्तां री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट प्रत्येक सौ सागर झाझेरी। एकेन्द्रिय रे पर्याप्तां री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट संख्याता हजार वर्षां री। बेइन्द्रिय रे पर्याप्तां री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री उत्कृष्ट संख्याता वर्षां री। तेइन्द्रिय रे पर्याप्तां री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट संख्याता राइंदिया री। चौइन्द्रिय रे पर्याप्तांरी कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट संख्याता मास री।

आंतरो— समुच्चय सइंदिया अणिंदिया रो आंतरो नत्थि। एकेन्द्रिय रो आंतरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट दो हजार सागर झाझेरो। बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय, पंचेन्द्रिय रो आंतरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट अनन्तोकाल, वनस्पतिकाल का देखो।

४—सकाइया में भांगा पावे २ अकाइया अपज्जवसिया, अकाइया सपज्जवसिया। पृथ्वीकाय अप्काय, तेउकाय, वाउकाय ए चारों री काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री उत्कृष्ट असंख्यातो काल असंख्याती अवसर्पिणी असंख्याती उत्सर्पिणी, क्षेत्र थकी असंख्याता लोक। वनस्पति री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट अनन्तो काल (अनन्ती अवसर्पिणी अनन्ती उत्सर्पिणी, क्षेत्र थकी अनन्ता लोक, असंख्याता पुद्गल परावर्तन ते पिण आवलिका रे असंख्यातवें भाग समय हुवे उतना)। त्रसकाय री काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट दो हजार सागर झाझेरी। अकाइया में भांगो पावे १ साइया अपज्जवसिया।

अकाया वर्जी मे ७ बोल रा अपर्जापतों री कायस्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त रा पर्जापतों री कायस्थिति— सकाया रे त्रस काया र पर्जापतों री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट प्रत्यक सौ सागर झाझेरी। पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय वनस्पतिकायरा पर्जापतोंरी कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट तेउकाय री संख्याता रातदिनों री, बाकी च्यारां री संख्याता हजार वर्षों री। आंतरो— सकाया अकाया रो आंतरो नहीं। पृथ्वीकाय अप्काय तेउकाय वायुकाय त्रसकाय रो आंतरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट अनन्तोकाल वनस्पतिकाल। वनस्पति काय रो आन्तरो जघन्य अन्तमुहूर्त रो, उत्कृष्ट असंख्यातो काल जाव पुढवीकाल।

सूक्ष्म रा ७ बोल— समुच्चय सूक्ष्म, सूक्ष्म पृथ्वीकाय, सूक्ष्म अप्काय, सूक्ष्म तेउकाय, सूक्ष्म वायुकाय सूक्ष्म वनस्पति काय, सूक्ष्म निगोद, ए ७ बोल सूक्ष्म री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट असंख्यातो काल[असंख्याती अवसर्पिणी असंख्याती उत्सर्पिणी। क्षेत्र थकी असंख्याता लोक]। (१४ बोल सूक्ष्म रा (७ पर्जापता ७ अपर्जापतों) री कायस्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त री। समुच्चय सूक्ष्म, सूक्ष्म वनस्पति, सूक्ष्म निगोद रो आंतरो पंरे तो जघन्य अन्तमुहूर्त रा, उत्कृष्ट असंख्यातो काल,[असंख्याती अव सर्पिणी असंख्याती उत्सर्पिणी। क्षेत्र थकी— अंगुल रे असंख्यातवें भाग मात्र में आकाश प्रदेश होवे जितना समयरी] सूक्ष्म पृथ्वीकाय अप्काय तेउकाय वायुकाय ए ४ रो आंतरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त री,

कृष्ण अनन्तोकाल (वनस्पति काल)

बादर रा १० बोल– समुच्चय बादर, पांच स्थावर बादर, प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काय, बादर निगोद, बादर त्रस, समुच्चय निगोद। समुच्चय बादर और बादर वनस्पति काय री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट असंख्याती काल (असंख्याती अव सर्पिणी असंख्याती उत्सर्पिणी। क्षेत्र थकी– अंगुल रे असंख्यातवें भाग क्षेत्र में आकाश प्रदेश हुवे जितना) (बादर पृथ्वीकाय, अप्काय तेउकाय वायुकाय, प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काय, बादर निगोद ए ६ बोल री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट ७० कोड़ा कोड़ सागर री। समुच्चय निगोद री काय स्थिति– जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट अनन्तोकाल (अनन्ती अवसर्पिणी अनन्ती उत्सर्पिणी)। क्षेत्र थकी–अनन्ता लोक अढ़ाई पुद्गल परावर्तन) (बादर त्रस काया री काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट दो हजार सागर संख्याता वर्ष अधिक)। दस बोल बादर रे अपर्याप्तों री काय स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त री। समुच्चय बादर और बादर त्रस ए दो बोलों रे पर्याप्तों री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट प्रत्येक सौ सागर झाझेरी। बादर पृथ्वीकाय अप्काय वायु काय वनस्पतिकाय, प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय ए ५ बोलों रे पर्याप्तों री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट संख्याता हजार वर्षों री। बादर तेउकाय रे पर्याप्तों री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट संख्याता रातदिनों (रात दिनों) री।

समुच्चय निगोद और बादर निगोद रा पजापर्तों री कायस्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त री।

आन्तरो– समुच्चय बादर, बादर वनस्पतिकाय, बादर निगोद और समुच्चय निगोद ए ४ बोलों रो आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट पुढवीकाल [(असंख्याती काल असंख्याती अवसर्पिणी असंख्याती उत्सर्पिणी क्षेत्र थकी–असंख्याता लोक)]। बादर पृथ्वीकाय, बादर अप्काय, बादर तेंउकाय, बादर वायुकाय, प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय और बादर त्रसकाय ए ६ बोलों रो आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट अनन्तो काल रो जाव वनस्पतिकाल*। सकाइया अकाइया रो आन्तरो नत्थि।

५– सजोगी में भांगा पावे २– अणाइया अपज्जवसिया, अणाइया सपज्जवसिया। मनजोगी वचन जोगी री कायस्थिति जघन्य एक समय री, उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त री। काय जोगी री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट अनन्तो काल जाव वनस्पति काल। अजोगी में भांगो पावे १ साइया अपज्जवसियाँ। सजोगी अजोगी रो आन्तरो नत्थि। मन जोगी वचन जोगी रो आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट अनन्तोकाल जाव वनस्पतिकाल।

*समुच्चय बादर बादर वनस्पति समुच्चय निगोद, बादर निगोद इण चारों रो आन्तरो पुढवीकाल। समुच्चय सूक्ष्म, सूक्ष्म वनस्पति और सूक्ष्म निगोद इण तीन रो आन्तरो बादर काल। शेष सर्व रो आन्तरो वनस्पति काल।

अप जोगी रो आन्तरो जघन्य एक समय रो, उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त रो।

६ सवेदी रा ३ भङ्ग अणाइया अपज्जवसिया, अणाइया सप ज्जवसिया, साइया सपज्जवसिया। तीजे भांगे री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट देशऊणो अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन री। स्त्रीवेद री कायस्थिति पाँच प्रकार री जघन्य एक समय री, उत्कृष्ट ११० पल्योपम प्रत्येक कोड पूर्व अधिक, १०० पल्योपम प्रत्येक कोड पूर्व अधिक, १८ पल्योपम प्रत्येक कोड पूर्व अधिक, १४ पल्योपम प्रत्येक कोड पूर्व अधिक, प्रत्येक पल्योपम प्रत्येक कोड पूर्व अधिक। पुरुषवेद री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट प्रत्येक सौ सागर जाझेरी। नपुंसक वेद री कायस्थिति जघन्य एक समय री, उत्कृष्ट अनन्तो काल जाव वनस्पतिकाल। अवेदी में भांगा पावे २ साइया अपज्जवसिया, साइया सपज्जवसिया। दूसरे भांगे री कायस्थिति जघ न्य एक समय री, उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त री। सवेदी रा पहला दूसरा भांगा रो और अवेदी रा पहला भांगा रो आन्तरो नहीं। सवेदी रा तीसरा भांगा रो आन्तरो जघन्य एक समय रो, उत्कृष्ट अन्त र्मुहूर्त रो। स्त्री वेद रो आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, पुरुष वेद रो आन्तरो जघन्य एक समय रो, उत्कृष्ट दोनों रो अनन्तो काल रो जाव वनस्पति काल। नपुंसक वेद रो आन्तरो जघन्य एक समय रो, उत्कृष्ट प्रत्येक सौ सागर जाझेरो। अवेदी रा दूसरा भांगा रो आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट देश ऊणो अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन रो।

७–मकषायी में भांगा पावे ३ सवेदीवत् । तीजा भांगा री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट देश ऊणो अर्द्ध पुद्गल परावर्तन री। क्रोध कषायी मान कषायी माया कषायी री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त री। लोभ कषायी री काय स्थिति जघन्य १समय री, उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त री। अकषायी में भांगा पावे २। दूजे भांग री काय स्थिति जघन्य १ समय री, उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त री अवदीवत्। सकषायी रे पहले दूजे भांगे रो आंतरो अकषायी र पहले भांगे रो आंतरो नहीं। सकषायी रे तीजे भांगे रो आन्तरो जघन्य १ एक समय रो, उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त रो। क्रोधकषायी, मानकषायी माया कषायी रो आन्तरो जघन्य १ समय रो उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त रो। लोभ कषायी रो आन्तरो जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त रो। अकषायी रे दूजे भांगे रो आन्तरो जघन्य अंतर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट देश ऊणो अर्द्ध पुद्गल परावर्तन रो।

८–सलेशी में भांगा पावे २ । अणाइया अपज्जवसिया, अणाइया सपज्जवसिया। कृष्णलेशी शुक्ललेशी री काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट ३३ सागर अन्तर्मुहूर्त अधिक। नील लेशी री काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट १० सागर पल्योपम रे असंख्यातवें भाग अधिक। कापोतलेशी री कायस्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट ३ सागर पल्योपम रे असंख्यातवें भाग अधिक। तेजो लेशी री काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री उत्कृष्ट २ सागर पल्योपम र असंख्यातवें भाग अधिक। पद्म लेशी री

काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट १० सागर अन्तर्मुहूर्त अधिक। अलेशी में भांगो पावे १—साइया अपज्जवसिया। सलेशी अलेशी रो आंतरो नहीं। कृष्ण लेशी नीललेशी कापोतलेशी रो आंतरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट ३३ सागर अन्तर्मुहूर्त अधिक। तेजोलेशी, पद्मलेशी, शुक्ललेशी रो आंतरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट अनन्तो काल यावत् वनस्पति काल।

६—सम्यग्दृष्टि में भांगा पावे २—साइया अपज्जवसिया, साइया सपज्जवसिया। सम्यग्दृष्टि रे दूजे भांगे री क्षयोपशम समकित री काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट ६६ सागर झाझेरी। सास्वादन समकित री काय स्थिति जघन्य एक समय री, उत्कृष्ट ६ आवलिका री। उपशम समकित री काय स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त री। वेदक (क्षायिक वेदक) समकित री कायस्थिति जघन्य उत्कृष्ट एक समय री। क्षायिक में भांगो पावे एक साइया अपज्जवसिया। मिथ्यादृष्टि में भांगा पावे ३ सवेदीवत्। तीजे भांगे री काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट देश ऊणी अर्द्ध पुद्गल परावर्तन री। मिश्रदृष्टि री काय स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त री। आन्तरो—सम्यग्दृष्टि रे पहले भांगे रो आन्तरो नहीं। दूजे भांगे रो आंतरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट देश ऊणो अर्द्ध पुद्गल परावर्तन रो। मिथ्यात्वी रे तीजे भांगे रो आंतरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट ६६ सागर झाझेरो। मिश्रदृष्टि रो आंतरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट देश ऊणो अर्द्ध पुद्गल परावर्तन रो। उपशम,

सास्वादन, क्षयोपशम ए तीन समकित रो आन्तरो जघन्य अन्त मुहूर्त रो, उत्कृष्ट देश ऊणो अर्द्ध पुद्गल परावर्तन रो। पहला और क्षायिक समकित रो आन्तरो नहीं।

१०—समुच्चय ज्ञानी रे दूजे भांगे री, मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी री काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, अवधिज्ञानी री जघन्य एक समय री, उत्कृष्ट सवरी ६६ सागर झाझेरी, मनःपर्यवज्ञानी री जघन्य १ समय री, उत्कृष्ट देश ऊणी क्रोड़ पूर्व री, केवल ज्ञानी में भांगो पावे १ सादया अपज्जवसिया। समुच्चय अज्ञानी, मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी में भांगा पावे तीन तीने-अणादया अपज्जवसिया, अणादया सपज्जवसियो, सादया सपज्जवसिया। तीजे भांगे री काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट देश ऊणी अर्द्ध पुद्गल परावर्तन री। विभंगज्ञानी री काय स्थिति जघन्य १ समय री, उत्कृष्ट ३३ सागर देश ऊणी क्रोड़ पूर्व अधिक। आन्तरो—समुच्चय ज्ञानी रे पहले भांगे रो और केवलज्ञान रो आन्तरो नहीं। समुच्चय ज्ञानी रे दूजा भांगे रो, मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधि ज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी एवं चारों रो आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट देश ऊणो अर्द्ध पुद्गल परावर्तन रो। समुच्चय अज्ञानी और मति अज्ञानी श्रुत अज्ञानी ए तीनों रे पहला दोय दोय भांगारो आंतरो नहीं और तीनों रे तीजे भांग रा आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट ६६ सागर झाझा। विभंगज्ञानी रो आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट अनन्तो काल आव वनस्पति काल।

११-चक्षुदर्शन री काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री उत्कृष्ट, १००० सागर झाझेरी। अचक्षुदर्शन में भांगा पावे २-अणाइया अपज्जवसिया, अणाइया सपज्जवसिया। अवधिदर्शन री काय स्थिति जघन्य १ समय री, उत्कृष्ट १३२ सागर झाझेरी। केवल दर्शन में भांगो पावे १—साइया अपज्जवसिया। चक्षुदर्शन और अवधिदर्शन रो आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो उत्कृष्ट अनन्त काल रो वाय वनस्पति काल। अचक्षुदर्शन और केवलदर्शन रो आन्तरो नहीं।

१२-संजति री काय स्थिति जघन्य १ समय री, संजता संजति री जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट देश ऊणी कोड़पूर्व री। असंजति में भांगा पावे ३ सवेदीवत्। तीजे भांग री काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट देश ऊणो अर्द्ध पुद्गल परावर्तन री। सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र और यथाख्यात चारित्र री काय स्थिति जघन्य १ समय री, उत्कृष्ट देश ऊणी कोड़ पूर्व री। परिहारविशुद्ध चारित्र री काय स्थिति जघन्य, १ समय री उत्कृष्ट २६ वर्ष ऊणा कोड़ पूर्व री। सूक्ष्मसम्पराय चारित्र री काय स्थिति जघन्य १ समय री, उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त री। नोसंजति नोअसंजति नोसंजतासंजति में भांगो पावे १ साइया अपज्जवसिया। संजति, संजतासंजति और पांच चारित्र ए ७ बोलों रो आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट देश ऊणो अर्द्ध पुद्गल परावर्तन रो। असंजति रे तीजे भांगे रो आन्तरो जघन्य १ समय रो, उत्कृष्ट देश ऊणो कोड़ पूर्व रो। नो संजति नो असंजति नो संजता संजति

गे और अर्मजति र पहले दूजे भांग रो आन्तरो नहीं।

१३-भागारयउत्ता,भणागारयउत्ता री कायस्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त री, आन्तरो भी जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त रो।

१४-आहारक रा २ भेद—छद्मस्थ आहारक और केवली आहारक। छद्मस्थ आहारक री काय स्थिति जघन्य १ खुडाग-भव दोय समय ऊणा, उत्कृष्ट असंख्यातो काल, असंख्याती अव-सर्पिणी असंख्याती उत्सर्पिणी, क्षेत्रथकी अंगुल र असंख्यातवें भाग क्षेत्र में आकाश प्रदेश आवे जित्ता समय। केवली आहारक री काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट देश ऊणी क्रोड पूर्व री। अनाहारक रा दोय भेद छद्मस्थ अनाहारक और केवली अनाहारक। छद्मस्थ अनाहारक री काय स्थिति जघन्य १ समय री, उत्कृष्ट २ समय री। केवली अनाहारक रा दोय भेद सिद्धकेवली अनाहारक और भवस्थ केवली अनाहारक। सिद्धकेवली अनाहारक में चौंगी पावे एक साइया अपज्जवसिया। भवस्थ केवली अनाहारक रा २ भेद—सजोगी भवस्थ केवली अनाहारक और अजोगी भवस्थ केवली अनाहारक। सजोगी भवस्थ केवली अनाहा-रक री काय स्थिति जघन्य उत्कृष्ट ३ समय री। अजोगी भवस्थ केवली अनाहारक री काय स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त री। आन्तरो—छद्मस्थ आहारक रो जघन्य १ समय रो, उत्कृष्ट २ समय रो। छद्मस्थ अनाहारक रो आन्तरो जघन्य १ खुडागभव में २ समय ऊणो, उत्कृष्ट असंख्यातो काल जाव अंगुल रे असं-

अनन्तवें भाग (बादर काल) । केवली आहारक रो आन्तरो जघन्य, उत्कृष्ट ३ समय रो । सजोगी केवली अनाहारक रो आन्तरो जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त रो । अजोगी केवली और सिद्धकेवली रो आन्तरो नहीं ।

१५ भाषक री काय स्थिति जघन्य १ समय री उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त री । अभाषक रा २ भेद- सिद्ध अभाषक और संसारी अभाषक । सिद्ध अभाषक तो साइया अपज्जवसिया । संसारी अभाषक री काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट अनन्ता काल री जाव वनस्पति काल । भाषक रो आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो उत्कृष्ट अनन्ता काल रो जाव वनस्पति काल । संसारी अभाषक रो आन्तरो जघन्य १ समय रो उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त रो । सिद्ध अभाषक रो आन्तरो नहीं ।

१६-पड़त (परित्त) रा २ भेद-संसार पड़त और काय पड़त । संसार पड़त री काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री उत्कृष्ट देशऊणी अर्द्ध पुद्गल परावर्तन री । काय पड़त री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट असंख्याता काल री जाव पुढवी काल । अपड़त रा २ भेद- संसार अपड़त, काय अपड़त । संसार अपड़त में भांगा पावे २ अणाइया अपज्जवसिया, अणाइया सपज्जवसिया । काय अपड़त री काय स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट अनन्ता काल री जाव वनस्पति काल । आन्तरो संसार पड़त रो आन्तरो नहीं । काय पड़त रो आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो उत्कृष्ट अन

न्ता काल रो जाव वनस्पति काल। ससार अपडत रो आन्तरो नहीं। काय अपडत रो आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट अर स्याता काल रो जाव पुढवी काल। नोपडत नोअपडत में भांगों पावे १ साइया अपज्जवसिया आंतरो नहीं।

१७—पर्जापते री कायस्थिति जघन्य अन्तमर्हूर्त री, उत्कृष्ट प्रत्येक सौ सागर भाझेरी। अपर्जापते री कायस्थिति जघन्य उत्कृष्ट अ तर्मुहूर्त री। नोपर्जापता नो अपर्जापता में भांगो पावे १ साइया अपज्जवसिया। आन्तरो-पर्जापते रो आन्तरो जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त रो। अपर्जापते रो आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो, उत्कृष्ट प्रत्येक सौ सागर झाझेरो। नो पर्जापता नो अपर्जापता रो आन्तरो नहीं।

१८-सूक्ष्म री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट असंख्याता काल री जाव पुढवीकाल। बादर री कायस्थिति जघन्य अन्तमुहूर्त री, उत्कृष्ट असंख्याता काल री जाव बादर काल नो सूक्ष्म नो बादर में भांगो पावे १ साइया अपज्जवसिया। आन्तरो सूक्ष्म रो आन्तरो बादर री कायस्थिति माफक। बादर रो आन्तरो सूक्ष्म री कायस्थिति माफक। नो सूक्ष्म नो बादर रो आन्तरो नहीं।

१९ सन्नी री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट प्रत्येक सौ सागर झाझेरी। असन्नी री कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट अनन्ता काल री जाव वनस्पति काल। नोसन्नी

असन्नी में भांगो पावे १ साइया अपज्जवसिया। आन्तरो—सन्नी रो आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो उत्कृष्ट अनन्ता काल रो (वनस्पति काल)। असन्नी रो आन्तरो जघन्य अन्तर्मुहूर्त रो उत्कृष्ट प्रत्येक सौ सागर झाझेरो। नो सन्नी नो असन्नी रो आन्तरो नहीं।

२०—भवी में भांगो पावे १ अणाइया सपज्जवसिया। अभवी में भांगो पावे १ अणाइया अपज्जवसिया। नोभवी नो अभवी में भांगो पावे १ साइया अपज्जवसिया। तीनों रो आन्तरो नहीं।

२१—धर्मास्तिकाय आदि षट् द्रव्य सम्बद्धा सदाकाल लाधे।

२२—चरम में भांगो पावे १ अणाइया सपज्जवसिया। अचरम में भांगा पावे २ अणाइया अपज्जवसिया अभवी आसरी, साइया अपज्जवसिया (सिद्धां आसरी)। चरम अचरम रो आन्तरो नहीं।

सेवं भंते! सेवं भंते!!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद १६ वें में दृष्टि रो थोकड़ो चाले सो कहे छे—

१—अहो भगवान्! जीव समदृष्टि कि मिथ्यादृष्टि कि मिश्र दृष्टि? हे गौतम! जीव समदृष्टि भी, मिथ्यादृष्टि भी, मिश्रदृष्टि भी है। इसी तरह नारकी, दस भवनपति, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, मनुष्य

वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और विमानिक ये १६ दण्डक का देवा पांच स्थावर मिथ्यादृष्टि है। तीन विकलेन्द्रिय और नवग्रीवेयक समदृष्टि और मिथ्यादृष्टि है। पांच अनुत्तर विमान और सिद्ध भगवानजी समदृष्टि है।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

~

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद २० वें में अन्त क्रिया रो थोकड़ो चाले सो कहे छे—

खेरइय अन्तकिरिया अणंतर एग समय उव्वट्टा ।
तित्थयर चक्कि बलदेव वासुदेव मडलिय रयणा य ॥ १ ॥

१–अहो भगवान् ! समुच्चय जीव अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! कोई करे कोई नहीं करे । इसी तरह यावत २४ दंडक का देवा ।

२–अहो भगवान! २४ दण्डक रा निकल्योड़ा मनुष्य वर्जी न २३ दण्डकपणे अन्तक्रिया करे ? हे गौतम !–नो इणट्ठे समट्ठे । अहो भगवान ! मनुष्यपणे अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! कोई करे कोई नहीं करे ।

३–अहो भगवान् ! समुच्चय जीव अनन्तर अन्तक्रिया करे कि परम्पर अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! कोई अनन्तर अन्तक्रिया करे, कोई परम्पर अन्तक्रिया करे। पहली नारकी से चौथी

सातवीं तक रा निकल्योड़ा नेरीया अनन्तर अन्तक्रिया करे कि परम्पर अन्तक्रिया करे ? कोई अनन्तर अन्तक्रिया करे कोई परम्पर अन्तक्रिया करे। पांचवीं नारकी सु सातवीं नारकी तक रा निकल्योड़ा अनन्तर अन्तक्रिया करे कि परम्पर अन्तक्रिया करे ? अनन्तर अन्तक्रिया नहीं करे । परम्पर अन्तक्रिया कोई करे कोई नहीं करे। भवनपति वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, वैमानिक, पृथ्वी पाणी वनस्पति, सन्नी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, सन्नी मनुष्य अनन्तर अन्तक्रिया करे कि परम्पर अन्तक्रिया करे ? कोई अनन्तर अन्तक्रिया करे कोई परम्पर अन्तक्रिया करे। तेउ वायु, तीन विकलेन्द्रिय रा निकल्योड़ा अनन्तर अन्तक्रिया करे कि परम्पर अन्तक्रिया करे ? अनन्तर अन्तक्रिया नहीं करे। परम्पर अन्तक्रिया कोई करे कोई नहीं करे।

४—नारकी रा निकल्योड़ा १ समय में १० सिझे (सिद्ध हुवे)। पहली नारकी सु तीजी नारकी तक रा निकल्योड़ा १ समय में १० सिझे। चौथी नारकी रा निकल्योड़ा १ समय में ४ सिझे। पांचवीं नारकी रा निकल्योड़ा नहीं सिझे हुवे तो मन पर्यवज्ञानी हुवे। छठी नारकी रा निकल्योड़ा नहीं सिझे, हुवे तो अवधिज्ञानी हुवे। सातवीं नारकी रा निकल्योड़ा नहीं सिझे, हुवे तो समदृष्टि हुवे। भवनपति, वाणव्यन्तर देवता रा निकल्योड़ा १ समय में १० सिझे। भवनपति वाणव्यन्तरी देवियों रा निकल्योड़ा १ समय में ५ सिझे। पृथ्वी पाणी रा निकल्योड़ा १ समय

वाणव्यन्तर, ज्योतिषी अर विमानिक ये १६ दण्डक का देवता पांच स्थावर मिथ्यादृष्टि है। तीन विकलेन्द्रिय और नवग्रीवयक समदृष्टि और मिथ्यादृष्टि है। पांच अनुत्तर विमान और मि मगवानजी समदृष्टि है।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

~~~

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद २० वें में अन्त क्रिया रा थोकड़ो चाले सो कहे छे—

नेरइय अन्तकिरिया अणंतर एग समय उव्वट्टा।
तित्थयर चक्कि बलदेव वासुदेव मडलिय रयणा य ॥ १ ॥

१–अहो भगवान् ! समुच्चय जीव अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! कोई कर कोई नहीं कर। इसा तरह जाव २४ दंडक का दणा।

२ अहो भगवान् ! २४ दण्डक रा निकल्योड़ा मनुष्य वर्जी ने २३ दण्डकपणे अन्तक्रिया करे ? हे गौतम !–नो इणट्ठे समट्ठे। अहो भगवान् ! मनुष्यपणे अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! कोई करे कोई नहीं करे।

३–अहो भगवान् ! समुच्चय जीव अनन्तर अन्तक्रिया कर कि परम्पर अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! कोई अनन्तर अन्तक्रिया करे, कोई परम्पर अन्तक्रिया करे। पहली नारकी सु चौथी
~~~

सभी सक रा निकम्योड़ा नेरीया अनन्तर अन्तक्रिया करे कि परम्पर अन्तक्रिया करे ? कोई अनन्तर अन्तक्रिया करे कोई परम्पर अन्तक्रिया करे। पाँचवीं नारकी सु सातवीं नारकी सक रा निकम्योड़ा अनन्तर अन्तक्रिया करे कि परम्पर अन्तक्रिया करे ? अनन्तर अन्तक्रिया नहीं करे। परम्पर अन्तक्रिया कोई करे कोई नहीं करे। भवनपति वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, वैमानिक, पृथ्वी पाणी वनस्पति, सन्नी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, सन्नी मनुष्य अनन्तर अन्तक्रिया करे कि परम्पर अन्तक्रिया करे ? कोई अनन्तर अन्तक्रिया करे कोई परम्पर अन्तक्रिया करे। तेउ वायु, तीन विकलेन्द्रिय रा निकम्योड़ा अनन्तर अन्तक्रिया करे कि परम्पर अन्तक्रिया करे ? अनन्तर अन्तक्रिया नहीं करे। परम्पर अन्तक्रिया कोई करे कोई नहीं करे।

४—नारकी रा निकम्योड़ा १ समय में १० सिझे (सिद्ध हुवे)। पहली नारकी सु तीजी नारकी सक रा निकम्योड़ा १ समय में १० सिझे। चौथी नारकी रा निकम्योड़ा १ समय में ४ सिझे। पाँचवीं नारकी रा निकम्योड़ा नहीं सिझे हुवे तो मनःपर्यवज्ञानी हुवे। छट्ठी नारकी रा निकम्योड़ा नहीं सिझे, हुवे तो अवधिज्ञानी हुवे। सातवीं नारकी रा निकम्योड़ा नहीं सिझे, हुवे तो समदृष्टि हुवे। भवनपति, वाणव्यन्तर देवता रा निकम्योड़ा १ समय में १० सिझे। भवनपति वाणव्यन्तरी देवियों रा निकम्योड़ा १ समय में ५ सिझे। पृथ्वी पाणी रा निकम्योड़ा १ समय

में ४ सिझे। वनस्पति रा निकल्योड़ा १ समय में ६ सिझे। तेउ
वायु रा निकल्योड़ा नहीं सिझे, मिथ्यादृष्टि हुवे। तीन विकले
न्द्रिय रा निकल्योड़ा नहीं सिझे, हुवे तो मनःपर्यवज्ञानी हुवे।
सन्नी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय रा निकल्योड़ा १ समय में १० सिझे।
तिर्यञ्चणी रा निकल्योड़ा १ समय में १० सिझे। मनुष्य रा
निकल्योड़ा १ समय में १० सिझे। मनुष्यणी रा निकल्योड़ा
१ समय में २० सिझे। ज्योतिषी देवता रा निकल्योड़ा १ समय
में १० सिझे। ज्योतिषी देवियों रा निकल्योड़ा १ समय में २०
सिझे। वैमानिक देवता रा निकल्योड़ा एक समय में १०८ सिझे।
वैमानिक देवियों रा निकल्योड़ा एक समय में २० सिझे।

५—नारकी रा निकल्योड़ा २२ दण्डकपणे नहीं उपजे, २
दण्डकपणे उपजे। अहो भगवान्! नारकी रा निकल्योड़ा तिर्यञ्च
पञ्चेन्द्रियपणे उपजे? हे गौतम! कोई उपजे कोई नहीं उपजे।
उपजे तो केवली परूप्या दया धर्म रो सुणनो मिले? कोई ने मिले, कोई
ने नहीं मिले। मिले तो समझे बुझे? कोई समझे बुझे, कोई नहीं
समझे बुझे। समझे बुझे तो श्रद्धा प्रतीति रुचि आवे? हंता
गोयमा! आवे। श्रद्धा प्रतीति रुचि आवे तो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान
री प्राप्ति हुवे? हंता गोयमा! हुवे। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान री प्राप्ति
हुवे तो शीलव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत पोसो उपवास अङ्गीकार
करे? हे गौतम! कोई करे कोई नहीं करे। अङ्गीकार करे तो
अवधिज्ञान री प्राप्ति हुवे? कोई ने हुवे, कोई ने नहीं हुवे।

मनःपर्यवज्ञान री प्राप्ति हुवे तो आगारपणो छोडी ने अणगारपणो धारण करे ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।

नारकी रा निकल्योडा मनुष्यपणे उपजे ? कोई उपजे कोई नहीं उपजे जाव तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में कयो उसी तरह कह देणो नहीं एटलो विशेष आगारपणो छोडी ने अणगारपणो धारण करे ? कोई करे कोई नहीं करे । अणगारपणो धारण करे तो मनःपर्यव ज्ञान री प्राप्ति हुवे ? कोई ने हुवे कोई ने नहीं हुवे । मनःपर्यव ज्ञान री प्राप्ति हुवे तो केवल ज्ञान उपजे ? कोई ने उपजे कोई ने नहीं उपजे । केवल ज्ञान उपजे तो सिज्मेज्जा बुज्मेज्जा मुच्चेज्जा सव्वदुक्खाणं अंत करेज्जा ? हंता गोयमा ! सिज्मेज्जा जाव सव्व दुक्खाणं अंत करेज्जा ।

अहो भगवान ! भवनपति देवता रा निकल्योडा किता दण्डकपणे उपजे ? हे गौतम ! १९ दण्डकपणे नहीं उपजे, ५ दण्डकपणे उपजे। अहो भगवान्! पृथ्वी पाणी वनस्पति पणे उपजे ? हे गौतम ! कोई उपज कोई नहीं उपजे । उपजे तो केवली परूप्या दया धर्म रो सुणनो मिले ? नो इणट्ठे समट्ठे । तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय पणे और मनुष्यपणे नारकी में कयो उसी तरह कह देणो । पृथ्वी पाणी वनस्पति रा निकल्योडा १४ दण्डकपणे नहीं उपजे । ५ स्थावर, ३ विकलेन्द्रियपणे उपजे ? कोई उपज कोई नहीं उपजे। उपजे तो केवली परूप्या दया धर्म रो सुणनो मिले ? नो इणट्ठे समट्ठे। तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रियपणे मनुष्य पणे नारकी माफक कह देणो।

वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और १० दण्डक उदारिक रा निकल्योड़ा, तीर्थङ्कर री पदवी पावे ? नो इणड़े ममझ, नहीं पावे।

७—पहली नारकी रा निकल्योड़ा चक्रवर्ती री पदवी पावे ? कोइ पावे, कोई नहीं पावे। दूजी नारकी सु सातवीं नारकी तक रा निकल्योड़ा तथा १० दंडक उदारिक रा निकल्योड़ा चक्रवर्ती री पदवी पावे ? नहीं पावे। भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, वैमानिक रा निकल्योड़ा चक्रवर्ती री पदवी पावे ? कोई पावे कोई नहीं पावे।

८—पहली, दूजी नारकी रा निकल्योड़ा बलदेव री पदवी पावे। कोइ पावे, कोई नहीं पावे। भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, वैमानिक रा निकल्योड़ा बलदेव री पदवी पावे ? कोई पावे, कोई नहीं पावे। तीजी नारकी सु सातवीं नारकी तक रा निकल्योड़ा और १० दंडक उदारिक रा निकल्योड़ा बलदेव री पदवी पावे ? नहीं पावे।

९—पहली, दूजी नारकी रा निकल्योड़ा वासुदेव री पदवी पावे ? कोई पावे, कोई नहीं पावे। तीजी नारकी सु सातवीं नारकी तक रा १० दंडक उदारिक, भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, ५ अनुत्तर विमानिक रा निकल्योड़ा वासुदेव री पदवी पावे ? नहीं पावे। १२ देवलोक, ९ लोकान्तिक, नवग्रैवेयक रा निकल्योड़ा वासुदेव री पदवी पावे ? कोई पावे कोई नहीं पावे।

१०—पहली नारकी सु छठी नारकी तक रा, भवनपति,

वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, वैमानिक, पृथ्वी, पाणी, वनस्पति, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, मनुष्य रा निकल्योड़ा मंडलीक राजा री पदवी पावे ? कोई पावे, कोई नहीं पावे । सातवीं नारकी तेउ, वायु रा निकल्योड़ा मडलीक राजा री पदवी पावे ? नहीं पावे ।

११—सात पञ्चेन्द्रिय रत्न—सेनापति, गाथापति वर्द्धई, पुरोहित, हाथी, घोड़ा, स्त्रीरत्न । पहली नारकी सु छठी नारकी तक रा निकल्योड़ा पञ्चेन्द्रिय रत्न री पदवी पावे ? कोई पावे कोई नहीं पावे, पावे तो पदवी पावे ७ । सातवीं नारकी रा निकल्योड़ा पञ्चेन्द्रिय रत्न री पदवी पावे ? कोई पावे कोई नहीं पावे, पावे तो पदवी पावे २ (हाथी घोड़े री) । भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, पहले देवलोक सु आठवें देवलोक तक रा निकल्योड़ा पञ्चेन्द्रिय रत्न री पदवी पावे ? कोई पावे कोई नहीं पावे, पावे तो पदवी पावे ७ । नवमें देवलोक सु ९ नवग्रैवेयक रा निकल्योड़ा पञ्चेन्द्रिय रत्न री पदवी पावे ? कोई पावे कोई नहीं पावे, पावे तो पदवी पावे ५ (हाथी, घोड़े री वर्जी ने) । पृथ्वी, पाणी, वनस्पति, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय मनुष्य रा निकल्योड़ा पञ्चेन्द्रिय रत्न री पदवी पावे ? कोई पावे कोई नहीं पावे, पावे तो पदवी पावे ७ । तेउ वायु रा निकल्योड़ा पञ्चेन्द्रिय रत्न री पदवी पावे ? कोई पावे कोई नहीं पावे, पावे तो पदवी पावे २ (हाथी, घोड़े री) । पांच अनुत्तर विमान रा निकल्योड़ा पञ्चेन्द्रिय रत्न री पदवी पावे ? नो इणट्ठे समट्ठे – नहीं पावे ।

योजन तक जगह विषम हुवे ठिकने सम कर खडप्रपात गुफा तथा तमसगुफा रा किंवाड़ उघाड़े। चर्मरत्न ४८ कोस में चौतरो कर, गंगा सिन्धु में नावा करी ने पार उतारे। मणिरत्न उद्योत करे। कांगणी रत्न तोला, मापा बधार, दोनों गुफा में ४६ ४६ मांडला पूरे। सेनापति दश साधे। गाथापति २४ प्रकार रा धान निपजावे। वार्द्धरत्न ४२ भोमिया महल बणावे। पुरोहितरत्न शान्ति पाठ पढ़ लग्न निकाले आम्या धाम ताजा कर (ठीक कर)। श्री देवी भोग में काम आवे। हाथी घोड़ा सवारी में काम आवे।

५ आगवाड़ार—पहली नारकी रा निकल्योड़ा पदवी पावे १६ (७ एकेन्द्रियरत्न री टली)। दूसरी नारकी रा निकल्योड़ा पदवी पावे १५ चक्रवर्ती नहीं हुवे। तीजी नारकी रा निकल्योड़ा पदवी पावे १३ बलदेव वासुदेव नहीं हुवे। चौथी नारकी रा निकल्योड़ा पदवी पावे १२ तीर्थङ्करवर्ज्या। पांचवीं नारकी रा निकल्योड़ा पदवी पावे ११ केवली टल्या। छठी नारकी रा निकल्योड़ा पदवी पावे १ साधु नहीं हुवे। सातवीं नारकी रा निकल्योड़ा पदवी पावे ३ हाथी घोड़ो समदृष्टि री। भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी रा निकल्योड़ा पदवी पावे २१ तीर्थङ्कर वासुदेव टल्या। पहला दूजा देवलोक रा निकल्योड़ा पदवी पावे २३। तीजे देवलोक सु आठवें देवलोक तक रा निकल्योड़ा पदवी पावे १६ (७ एकेन्द्रियरत्न वर्जी ने)। नवमें देवलोक सु ६ नवग्रैवेयक तक रा निकल्योड़ा पदवी पावे १४ हाथी, घोड़ो वर्ज्यो। ५ अनुत्तर विमान रा

निकल्योड़ा पन्वी पावे ८ (६ मोटी पदवी में स १ वासुदेव री टला)। पृथ्वी, पाणी, वनस्पति, सन्नी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, सन्नी मनुष्य रा निकल्योड़ा पन्वी पावे १६ (तीर्थङ्कर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव ए ४ टली)। तीन विकलेन्द्रिय, असन्नी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय असन्नी मनुष्य रा निकल्योड़ा पदवी पावे १८ (तीर्थङ्कर चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, केवली वर्जीने)। तेउ वायु रा निकल्योड़ा पदवी पावे ९ (७ एकेन्द्रिय रत्न, हाथी, घोड़े री)।

६-आगत द्वार-पहली सु चौथी नारकी तक में ११ पदवी रा आवे (७ पञ्चेन्द्रिय रत्न, चक्रवर्ती, वासुदेव, समदृष्टि, मंडलिक राजा)। पाँचवीं छट्ठी नारकी में ६ पदवी रा आवे (हाथी, घोड़ो वर्ज्यो)। सातवीं नारकी में ७ पदवी रा आवे (समदृष्टि, श्रीदेवी टली)। समुच्चय भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, पहले देवलोक सु आठवें देवलोक तक १० पदवी रा आवे (श्री देवी पर्श कर ६ पञ्चेन्द्रिय रत्न, साधु श्रावक, मंडलिक राजा, समदृष्टि)। नवमें सु बारहवें देवलोक तक ८ पदवी रा आवे (हाथी, घोड़ा वर्ज्या)। ९ नवग्रैवेयक, ५ अनुत्तर विमान में २ पदवी रा आवे (समदृष्टि, साधु)। पाँच स्थावर, असन्नी मनुष्य में १४ पदवी रा आवे (७ एकेन्द्रिय रत्न, श्रीदेवी वर्जकर ६ पञ्चेन्द्रिय रत्न, १ मंडलिक राजा)। तीन विकलेन्द्रिय, असन्नी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, सन्नी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, मनुष्य में १५ पदवी रा आवे (७ एकेन्द्रिय रत्न, श्रीदेवी वर्जकर ६ पञ्चेन्द्रिय

रत्न, १ मडलिक राजा, १ समदृष्टि)।

७-पावण द्वार-नारकी में पदवी पावे १ समदृष्टि री। तिर्यं में पदवी पावे ११ (७ एकेन्द्रिय रत्न, हाथी, घोड़ो, समदृष्टि श्रावक री)। मनुष्य में पदवी पावे १४ (५ पञ्चेन्द्रिय रत्न, मोटी पदवी)। देवता में पदवी पावे १ समदृष्टि री।

सेवं भंते। सेवं भंते॥

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद २०वें में सीझणा द्वार रो थोकड़ो चाले सो कहे छे—

१ क्षेत्र द्वार २ काल द्वार ३ गति द्वार ४ वेद द्वार ५ तीर्थ द्वार ६ लिंग द्वार ७ चारित्र द्वार ८ बुद्ध द्वार ९ ज्ञान द्वार १० अवगाहना द्वार ११ उत्कृष्ट द्वार १२ अंतरा द्वार १३ अनु समय द्वार, १४ गणा द्वार, १५ अल्पाबहुत्व द्वार।

१-क्षेत्र द्वार-ऊंचा लोक में ऊंची दिशा में ४-४ सीझे नीचा लोक में २० सीझे नीची दिशा में नहीं सीझे, तिर्च्छालोक में, तिर्च्छी दिशा में १०८-१०८ सीझे समुद्र में २ सीझे, शेष जल में ३ सीझे, सोमनस वन में ४ सीझे भद्रशाल वन में ४ सीझे, नन्दन वन में ४ सीझे पण्डक वन में २ सीझे एक एक विजय में २० २० सीझे, अकर्म भूमि क्षेत्र में १० सीझे पन्द्रह कर्म भूमि रा

रे में १०८ सीमे, चुलहिमवत पर्वत पर १० सीके।

२-काल द्वार-अवसर्पिणी काल रा पहला आरा में १० सीमे, दूजा आरा में १० सीके, तीजा चौथा आरा में १०८-१०८ सीमे, पांचवां आरा में २० सीमे, छठा आरा में १० सीके। उत्सर्पिणी काल रा पहला आरा में १० सीमे, दूजा आरा में १० सीमे, तीजा आरा में १०८ सीके, चौथा आरा में १०८ सीमे, पाँचवाँ आरा में १० सीमे, छठा आरा में १० सीके।

३-गति द्वार—पहली नारकी रा निकल्योड़ा १० सीमे, दूजी नारकी रा निकल्योड़ा १० सीके, तीजी नारकी रा निकल्योड़ा १० सीमे, चौथी नारकी रा निकल्योड़ा ४ सीके, भवनपति रा निकल्योड़ा १० सीमे, भवनपति री देवियों रा निकल्योड़ा ५ सीमे, वाणव्यंतर देवता रा निकल्योड़ा १० सीमे, वाणव्यन्तर री देवियों रा निकल्योड़ा ५ सीमे, ज्योतिषी देवता रा निकल्योड़ा १० सीमे, ज्योतिषी देवियों रा निकल्योड़ा २० सीमे, वैमानिक देवता रा निकल्योड़ा १०८ सीमे, वैमानिक देवियों रा निकल्योड़ा २० सीमे, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय रा निकल्योड़ा १० सीमे, तिर्यञ्चणी रा निकल्योड़ा १० सीमे वनस्पति रा निकल्योड़ा ६ सीमे, पृथ्वी, पाणी रा निकल्योड़ा ४-४, सीके, मनुष्य रा निकल्योड़ा १० सीमे मनुष्यणी रा निकल्योड़ा २० सीमे। पाँचवीं, छठी, सातवीं नारकी रा तथा तेउ वायु रा निकल्योड़ा नहीं सीमे।

४ वेद द्वार—स्त्री एक समय में २० सीमे, नपुंसक १० सीमे, पुरुष १०८ सीमे, । पुरुष मरीने पुरुष होय तो एक समय में १०८ सीमे, पुरुष मर कर स्त्री होय तो १० सीमे, पुरुष मर कर नपुंसक होय तो १० सीमे। स्त्री मर कर स्त्री होय तो एक समय में १० सीमे, स्त्री मर कर पुरुष होय तो १० सीमे स्त्री मर कर नपुंसक होय तो १० सीमे। नपुंसक मर कर नपुंसक होय तो १० सीमे, नपुंसक मर कर पुरुष होय तो १० सीमे, नपुंसक मर कर स्त्री होय तो १० सीमे।

५-तीर्थद्वार— एक समय में पुरुष तीर्थङ्कर ४ सीमे, स्त्री तीर्थङ्कर २ सीमे प्रत्येक बुद्ध १० सीमे, स्वयं बुद्ध ४ सीमे, बुद्धबोधित १०८ सीमे।

६-लिङ्ग द्वार—एक समय में गृह लिङ्गी ४ सीमे, अन्य लिङ्गी १० सीमे, स्वलिङ्गी १०८ सीमे।

७-चारित्र द्वार—सामायिक चारित्र सूक्ष्म सम्पराय चारित्र यथाख्यात चारित्र ए तीन चारित्र फरसी ने १०८ सीमे। सामायिक चारित्र छेदोपस्थापनीय चारित्र, सूक्ष्म सम्पराय चारित्र यथाख्यात चारित्र य ४ चारित्र फरसी ने १०८ सीमे। पाँचों ही चारित्र फरसी न १ सीमे।

८-बुद्ध द्वार—आचारज रा या मोटी साध्वी रा प्रतिबोध्या। पुरुष सीमे तो १ ८ सीमे, स्त्री सीमे तो २० सीमे और नपुंसक साथ में १ सीमे।

९-ज्ञान द्वार—मति ज्ञान, श्रुतज्ञान और केवलज्ञान ए तीन ज्ञान फरसी ने एक समय में ४ सीमे। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अवधिज्ञान और केवलज्ञान ए चार ज्ञान फरसी ने एक समय में १०८ सीमे। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, मनःपर्यवज्ञान और केवलज्ञान ए चार ज्ञान फरसी ने एक समय में १० सीमे। पांचों ही ज्ञान फरसी ने एक समय में १०८ सीमे।

१० अवगाहना द्वार—जघन्य अवगाहना वाला एक समय में ४ सीमे। मज्झिम अवगाहना वाला एक समय में १०८ सीमे। उत्कृष्ट अवगाहना वाला एक समय में २ सीमे।

११ उत्कृष्ट द्वार—अपडिवाई एक समय में ४ सीमे अनन्तकाल रा पडिवाई एक समय में १०८ सीमे। असंख्यात काल रा पडिवाई एक समय में १० सीमे। संख्याता काल रा पडिवाई एक समय में १० सीमे।

१२ १३-आन्तरा द्वार, अनुसमय द्वार—एक समय में १०१ थाक १०८ पहले समय में सीमे, दूजे समय में आन्तरो अवश्य ही पड़े। ६७ से लगाकर १०२ तक दो समय तक निरन्तर सीमे तीसरे समय आन्तरो अवश्य ही पड़े। ८५ सु लेकर ६६ तक तीन समय तक निरन्तर सीमे, चौथे समय आन्तरो अवश्यही पड़े। ७३ सु लगा कर ८४ तक चार समय तक निरन्तर सीमे, पांचवें समय आन्तरो अवश्य ही पड़े। ६१ सु लगा कर ७२ तक पांच समय तक निरन्तर सीमे, छठे समय आन्तरो अवश्य ही पड़े। ४६

सुं लगा कर ६० तक छह समय तक निरन्तर सीझे, सातवें समय आन्तरो अवश्य ही पड़े । ३३ सु लगा कर ४८ तक सात समय तक निरन्तर सीझे, आठवें समय आन्तरो अवश्य ही पड़े । १ सु लगा कर ३२ तक आठ समय तक निरन्तर सीझे, नवमें समय आन्तरो अवश्य ही पड़े ।

१४-गण द्वार-(संख्या द्वार) सब सु थोड़ा एक समय में १०८ सिद्ध हुवा ते थकी एक समय में १०७ सिद्ध हुवा अनंत गुणा इस तरह यावत ५० सिद्ध हुवा तक अनंता अनंता कहणा ते थकी एक समय में ४६ सिद्ध हुवा असंख्यातगुणा ते थकी ४८ सिद्ध हुवा असंख्यातगुणा इस तरह याव २५ सिद्ध हुवा तक असंख्याता असंख्याता कहणा ते थकी २४ सिद्ध हुवा सख्यातगुणा ते थकी २३ सिद्ध हुवा सख्यातगुणा इस तरह याव १ सिद्ध हुवा तक संख्याता सख्याता कहणा ।

१५ अल्पाबोध द्वार-जिस ठिकाणे (क्षेत्र में) एक समय में १०८ सीझे (मोक्ष जाय) उस ठिकाणे आठ समय तक निरन्तर सीझे । जिस ठिकाणे २० सीझे, उस ठिकाणे चार समय तक निरन्तर सीझे । जिस ठिकाणे १० सीझे, उस ठिकाणे चार समय तक निरन्तर सीझे । जिस ठिकाणे २ ३ या ४ सीझे उस ठिकाणे एक समय तक सीझे, दूजे समय आन्तरो पड़े ।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद २० वें में ३३ बोलों
री अल्पाबोध चाले सो कहे छे—

१ सब सुं थोड़ा चौथी नारकी रा निकल्योड़ा सिद्ध ।
२ त थकी तीजी नारकी रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा ।
३ त थकी दूजी नारकी रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा ।
४ त थकी वनस्पति रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा ।
५ त थकी पृथ्वीकाय रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा ।
६ त थकी अप्काय रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा ।
७ त थकी भवनपति देवियों रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा ।
८ त थकी भवनपति देवता रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा ।
९ त थकी वाणव्यन्तर देवियों रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा ।
१० त थकी वाणव्यन्तर देवता रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा ।
११ त थकी ज्योतिषी देवियों रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा ।
१२ त थकी ज्योतिषी देवता रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा ।
१३ त थकी मनुष्यणी रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा ।
१४ त थकी मनुष्य रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा ।
१५ त थकी पहली नारकी रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा ।
१६ त थकी तिर्यंचणी रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा ।
१७ त थकी तिर्यंच पंचेन्द्रिय रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा ।
१८ त थकी अनुत्तरविमान रा देवता रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा
१९ त थकी नवग्रैवेयक रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा ।

२० ते थकी बारहवें देवलोक रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा।
२१ ते थकी ग्यारहवें देवलोक रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा।
२२ ते थकी दसवें देवलोक रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा।
२३ ते थकी नवमें देवलोक रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा।
२४ ते थकी आठवें देवलोक रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा।
२५ ते थकी सातवें देवलोक रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा।
२६ ते थकी छठे देवलोक रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा।
२७ ते थकी पांचवें देवलोक रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा।
२८ ते थकी चौथे देवलोक रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा।
२९ ते थकी तीजे देवलोक रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा।
३० ते थकी दूजे देवलोक री देवियों रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा
३१ ते थकी दूजे देवलोक रे देवता रा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा
३२ ते थकी पहले देवलोक री देवियोंरा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा
३३ ते थकी पहले देवलोक रे देवतारा निकल्योड़ा सिद्ध संख्यातगुणा

सेवं भंते ! सेवं भंते !!